सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 194, नई दिल्ली, रविवार 21 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हार तो हर कोई मान लेता है, ये सबसे आसान तरीका है, जीतता वही है जो अंत तक लड़ता है।

03 यह पुस्तक अध्यात्म जगत के लिए मील का पत्थर- डॉ.जोशी
06 शारीरिक,मानसिक स्वास्थ्य में संतुलन का समग्र विज्ञान
08 भुवनेश्वर-कोणार्क रेलवे लाइन के अंतिम स्थान सर्वेक्षण को मंजूरी

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत का दिल्ली के बाद उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं झारखंड में समाज सेवा और जनहित कार्यों का विस्तार

पिंकी कुंडू महासचिव टोलवा ट्रस्ट

महत्वपूर्ण सूचना

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत"

टोलवा ट्रस्ट से जुड़े सभी समाजसेवी सदस्यो, साथियों एवम्-अन्य सम्मिलित समाज सेवा संस्थाओं के महानुभावों को हमारा सादर प्रणाम,

आप सभी को सूचित किया जा रहा है दिनांक 21 सितम्बर 2025 को ट्रस्ट की तरफ से भंडारे का आयोजन किया गया है। इसमें आप सभी समाज सेवा के भाव से जुड़े साथियों का स्वागत हैं। इस आयोजन में सभी साथियों / समाजसेवा से जुड़े आप सभी का आपस मे परिचय के साथ ट्रस्ट से जुड़े नए समाज सेवकों को उनके आई कार्ड प्रदान किए जाएंगे।

समय :1pm

तिथिः 21 सितम्बर

स्थानः Rz 123 d dabri palam road near jindal public school and magic auto maruti showroom.

"अन्य मुख्य जानकारी"

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़े सभी समाजसेवी साथियों को सूचित किया जाता हैं की इस भंडारे के आयोजन स्थल पर ही ट्रस्ट की महासचिव की और से सभी साथियों से

विचार विमर्श कर

1. अगले भंडारे के आयोजन का स्थान और तिथि की घोषणा करेगी,
2. बुजुर्गो का ट्रस्ट द्वारा दी जाने वाली राशन सामग्री किट दी जाएगी और सदस्यों/ साथियों से इस बाबत विचार किया जाएगा,
3. वस्त्र, खिलौने, एवं विद्यार्थियों को पुस्तक एवं अन्य सामग्री की आवश्यकता अनुसार मदद के विषय पर चर्चा कर उसकी तिथि की घोषणा की जाएगी,
4. क्षेत्रीय समस्याओं का किस तरह जल्द से जल्द निवारण करवाया जा सकता है इस विषय पर साथियों/ सदस्यों की राय ली जाएगी,
5. ट्रस्ट की तरफ से कानूनी सलाह एवम् सहयोग प्रदान करने के लिए लीगल टीम पर चर्चा की जाएगी।
6. इसके अलावा सदस्यों) साथियों के द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले अन्य विषयों पर चेयर पर्सन की आज्ञा से चर्चा एवम्-फैसला किया जाएगा।

इसलिए अगर आप ट्रस्ट के साथ जुडकर समाज सेवा, जनहित कार्यों को करना चाहते हैं तो इस प्रोग्राम में अवश्य उपस्थित हों और आगे भी घोषित कार्यक्रम एवं बैठक में अवश्य उपस्थित रहे।

"बाहरी राज्यों से जुड़े सदस्यों के लिए विशेष निवेदन"

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के दिल्ली से बाहर के राज्यों (खास तौर पर उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवम् झारखंड) से जुड़े सभी सदस्यों से अनुरोध है की वह अपने राज्य में ट्रस्ट के लिए समाज सेवा में हिस्सेदार लेने वाले सदस्यों को जोड़े और अपने राज्य में ट्रस्ट के द्वारा की जाने वाली सेवाओं को जनहित में जनता और जरूरत मंद लोगो को पहुंचाए।

चेयरमैन, टोलवा ट्रस्ट
महासचिव टोलवा ट्रस्ट

दिल्ली में 19 राजपत्रित अधिकारियों के विभागों में बदलाव, जाने

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
SERVICES DEPARTMENT: SERVICES-I BRANCH
DELHI SECRETARIAT: 8TH LEVEL: B-WING
I.P. ESTATE: NEW DELHI
http://services.delhi.gov.in
Tel: 011 – 23392038

No.F.8/02/2024/S.I Dated: 19.09.2025

ORDER No. 344

Hon'ble Lt. Governor, Delhi is pleased to order transfer and posting of IAS and DANICS officers, with immediate effect as given below:-

Sl. No.	Name & Designation	Present posting	Posted as
1.	**Shri Prashant Goyal,** IAS (AGMUT:1993)	Financial Commissioner holding additional charge of Additional Chief Secretary (Food & Civil Supplies) and CMD (DFC)	Financial Commissioner with additional charge of Additional Chief Secretary (Food & Civil Supplies), CMD (DFC) and CMD (DSCSC)
2.	**Shri Ashok Kumar,** IAS (AGMUT:2006)	Secretary (GAD)	Secretary (GAD) with additional charge of Secretary-cum-Commissioner (Labour) and Secretary (Co-operation) on relieving of Ms. Shilpa Shinde, IAS (AGMUT:2006)
3.	**Shri Jitender Yadav** IAS (AGMUT:2010)	Additional Commissioner (MCD)	MD (DTC) with additional charge of Special Commissioner (Transport) on relieving of Shri Prince Dhawan, IAS (AGMUT:2012)
4.	**Ms. Mitali Namchoom** IAS (AGMUT:2011)	Director (WCD)	Director (WCD) with additional charge of Secretary (Delhi Commission for Women)
5.	**Shri Hemant Kumar** IAS (AGMUT:2013)	Awaiting Posting	Special CEO (Delhi Disaster Management Authority) with additional charge of Special Commissioner (Development)
6.	**Shri Anand Tiwari,** DANICS:2002	Awaiting posting	Special Secretary (Information Technology) with additional charge of Executive Director (GSDL) thereby relieving Shri Ravi Dadhich, IAS from the additional charge of Special Secretary (Information Technology)

No.F.8/02/2024/S.I -2- ORDER No. 344 Dated: 19.09.2025

7.	**Shri Kuldeep Singh,** DANICS:2006	Awaiting Posting	DIG (Prisons)
8.	**Shri Pranjal Hazarika,** DANICS:2006	OSD to Chief Secretary	GM (DSCSC)
9.	**Shri Rajeev Singh,** DANICS:2006	DIG (Prisons)	Placed at the disposal of MCD
10.	**Shri Arun Kumar Jha,** DANICS:2009	Secretary (DBOCWWB) holding additional charge of Secretary (Sanskrit Academy), Secretary (International Academy) and Secretary (Maithili & Bhojpuri Academy)	Special Commissioner (Food & Civil Supplies)
11.	**Shri Shailendra Kumar Singh,** DANICS:2010	ADM (South-East)	Secretary (DBOCWWB) with additional charge of Secretary (Sanskrit Academy), Secretary (International Academy) and Secretary (Maithili & Bhojpuri Academy)
12.	**Shri Rakesh Dahiya,** DANICS:2011	Controller of Examination (DSSSB)	Placed at the disposal of NDMC
13.	**Ms. Nidhi Sarohe,** DANICS:2014	Joint Secretary (Public Grievances Cell, CM office)	Joint Secretary (Public Grievances Cell, CM office) with additional charge of Joint Commissioner (Transport)
14.	**Shri Atul Pandey,** DANICS:2014	ADM (Central)	Joint Commissioner (Transport)
15.	**Shri Dhole Aom Kashinathrao,** DANICS:2015	Deputy Commissioner (Transport)	Controller of Examination (DSSSB)
16.	**Shri Mohan Kumar,** DANICS:2016	SDM (Seemapuri)	Joint Commissioner (Development)
17.	**Shri Mukesh Kumar,** DANICS:2016	SDM (Hauz Khas)	Joint Commissioner (Transport)
18.	**Ms. Poonam,** DANICS:2017	Deputy Secretary (Land & Building)	SDM (Seemapuri)
19.	**Shri Jeetendra Kumar,** DANICS:2022	OSD (Camp Office of CM)	SDM (Hauz Khas)

(BHAIRAB DUTT)
DEPUTY SECRETARY (SERVICES)

No.F.8/02/2024/S.I Dated: 19.09.2025

Copy to the:
1. Principal Secretary to Lt. Governor, Delhi.
2. Secretary to Chief Minister, Delhi.
3. Secretary to Speaker, Delhi Vidhan Sabha, Delhi.

No.F.8/02/2024/S.I -3- ORDER No. 344 Dated: 19.09.2025

4. Secretaries to all Ministers, Govt. of NCT of Delhi.
5. OSD to Leader of Opposition, Delhi Vidhan Sabha, Delhi.
6. Staff Officer to Chief Secretary, Govt. of NCT of Delhi.
7. All Additional Chief Secretaries / Principal Secretaries /Secretaries / Head of Departments Local Bodies / Public Undertakings, GNCT of Delhi.
8. All Officers concerned.
9. Section Officer (Coordination), Services Department, Govt. of NCT of Delhi - *with the request to upload this order on website of Services Department.*
10. Section Officer (S-I/APAR), Confidential Cell, Services Department, GNCTD.
11. PAO concerned, GNCTD.
12. Guard file/Personal file.

Copy forwarded to the:

1. Under Secretary (UTS-I), Govt. of India, Ministry of Home Affairs, Room No. 34049, 4th floor, work hall, Kartavya Bhawan-3, New Delhi-110001.
2. Research Officer, Career Management Division, Govt. of India, Department of Personnel and Training, CCS-03 Building, Janpath, New Delhi.

(BHAIRAB DUTT)
DEPUTY SECRETARY (SERVICES)

पुरातन श्री महालक्ष्मी मंदिर, आनंदवल्ली गाव नाशिक महाराष्ट्र के बारे मे जाने कुछ खास

आनंदवल्ली गाव नाशिक महाराष्ट्र, मे स्थित पुरातन श्री महालक्ष्मी मंदिर मे हर साल की तरह इस साल भी बड़ी धुम धाम से नवरात्र उत्सव मनाया जा रहा है। इस मंदिर में स्थित महालक्ष्मी के दर्शन मात्र से ही भक्त गणो के सारे कष्ट दुर हो जाते है।

यह मान्यता है की इस मंदिर में देवी पुजा सप्तशती पाठ करने से भक्त गणो को इच्छित वर प्राप्त होते है। नवरात्र के पावन अवसर पर दुनिया भर से लोग यहां आकर माता रानी के दर्शन करते है। इस मंदिर में लक्ष्मी की एक बाजु में गणेश जी तो वही दुसरी और श्री सरस्वती माता विराजमान है।

यह मंदिर पेशवे कालीन में बनाया गया था और तब से अब तक इसका तीन बार जिनोधार हूआ, और इस मंदिर को मंडलिक परिवार के लोग मिलकर बनाते और संभालते है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

स्टॉल प्रस्ताव :

सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :

रक्षा गरबा-डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025

* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :

* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

विशेष सूचना

नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन

- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र : इंदु राजपूत, मोबाइल : 9210210071

सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से

गरबा महोत्सव में विशेष अपील

हमारी रक्षा द सेवियर एवं टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की ओर से रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें:

- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान : रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

इंदु राजपूत – 9210210071,
अभिषेक राजपूत 83928 02013,
पिंकी कुंडू 7053533169

'संबंधों में मनमुटाव का कारण हम स्वयं है- यह हमारा अहं है जो संयुक्त लालसाओं का केंद्र है

माया सामूहिक रुप से नहीं बांधती, माया हर व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से बांधती है।

अंतःकरण से एकरुप होने के कारण हर आदमी व्यक्तिगत रुप से मैं और जगत में बंटा हुआ है।

जो जैसा है उसका जगत भी वैसा ही है।

इसलिए अपने जगत को समझने के लिए स्वयं को समझना जरुरी है।

मैं कैसा हूँ?

जैसा मैं हूँ वैसा ही मेरा जगत है।

जब मैं अपने को मेरे जगत से अलग मानता हूँ तभी अहंकार अस्तित्व में आता है।

अहंकार का काम है अलगाव में जीना, अलगथलग होकर जीना।

लेकिन कोई भी उसके जगत से अलग कैसे हो सकता है?

वह स्वयं उसका जगत है।

उसके जगत में वह शांति से जीता है तो उसके जगत में शांति रहती है।

उसके जगत में वह अशांति से जीता है तो उसके जगत में अशांति रहती है।

यह समझ में आ जाय तो व्यक्ति शांत और व्यवस्थित रह सकता है। उससे उसका जगत भी शांत और व्यवस्थित रह सकता है।

मैं और मेरा जगत

यही सूत्र है।

इसमें दूसरा और दूसरे का जगत है ही नहीं।

दूसरा माना तो अपने भीतर अनेक खंड हो जायेंगे। वे सब आपस में टकरायेंगे।

यही हो रहा है।

'दूसरा मेरे बारे में क्या सोचता है?'

जबकि दूसरा मेरा ही मन है। मेरे ही मन का एक हिस्सा दूसरे हिस्से के बारे में (मेरे बारे में) सोचता है।

इसे नहीं जान पाने के कारण संबंधों में जटिलता आती है।

₹संबंधों की जटिलता को समझने के लिए विचारपूर्ण धैर्य व गंभीरता का होना आवश्यक है।

संबंध स्व- उद्घाटन की, अपने ही मन की परतें खोलने की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें हम अपने दुख के छिपे हुए कारणों पर से परदा हटा पाते हैं।

अपने मन की परतों को खोलकर देख पाना केवल संबंधों के चलते ही संभव है।₹

इसे मैं और मेरा जगत के रूप में समझना होगा।

मेरा मेरे जगत से क्या संबंध है,

मेरे जगत का मुझसे कैसा संबंध है?

यह ध्यान रखना जरुरी है कि मेरा जगत वस्तुतः मेरा ही मन है।

मन ही है मैं और मेरा जगत।

संबंधों की जटिलता इसलिए आती है क्योंकि मेरा जगत को कोई और मान लिया जाता है-

कोई और व्यक्ति, घटना, परिस्थिति।

जबकि मेरा ही मन परिस्थिति उत्पन्न करता है। उस रुप में मैं मुझसे संबंधित हूँ।

इसके लिए स्वयं को समझना होगा, अपनी दृष्टि को समझना होगा कि वह नकारात्मक है या सकारात्मक?

मेरे ही मन ने कोई परिस्थिति उत्पन्न की, मेरी दृष्टि सकारात्मक है तो मैं सकारात्मक तरीके से निपटूंगा, नकारात्मक है तो नकारात्मक प्रतिक्रिया करुंगा।

जैसे क्रोध।

क्रोध प्रतिक्रिया है, क्रिया नहीं।

भय प्रतिक्रिया है, क्रिया नहीं।

ये प्रतिक्रिया हम हमारे जगत को लेकर करते हैं।

अगर हम जगत को बाहरी मानते हैं तो हम अहंकार हैं जो लालसाओं का केंद्र है।

यदि हमें पता है कि हम ही हैं हमारा जगत तो अब लालसा की जगह गहरी समझ पैदा होगी।

तब हम हमारे जगत से कैसे निपटें इसका रास्ता दिखाई पडेगा।

श्रीकृष्ण क्यों कहते हैं-

यह जीवात्मा खुद अपना शत्रु है और खुद ही अपना मित्र अर्थात और कोई शत्रु या मित्र नहीं है!

जब हम 'दूसरे' के प्रति सद्भाव अनुभव करते हैं तो अच्छा लगता है(फील गुड);

जब हम दूसरे के प्रति दुर्भाव, क्रोध, घृणा, द्वेष आदि का अनुभव करते हैं तब क्या होता है?

हमारा ही सुख नष्ट हो जाता है।

इस तरह हम अपने शत्रु साबित होते हैं।

हमें लगता है, हमारे क्रोध या घृणा का कारण कोई और है-बस यहीं भूल होती है।

इसीलिए श्रीकृष्ण अपनी माया को दुस्तर बताते हैं-

मम माया दुरत्यया।

जब तक हम अपने सुखदुख का कारण दूसरे को मानते हैं हम माया के कब्जे में हैं।

जब हमें पता चलता है कि हम ही हैं असली कारण तो माया का खेल खत्म होने लगता है।

आसान नहीं है।

क्योंकि हमारा ही मन तथाकथित दूसरा व्यक्ति बन जाता है, राग जनक, द्वेषजनक बन जाता है।

इसीमे मन की परतें होती हैं।

इन परतों को मेरा मेरे जगत से कैसा संबंध है इसका पता लगाकर जाना जा सकता है।

यह दोहरी प्रक्रिया के रूप में हो सकता है।

मन रुपी मैं, मेरे ही मन रुपी दूसरे से राग या द्वेष करता हूँ;

मेरा ही मन रुपी दूसरा,

मन रुपी मुझसे राग या द्वेष करता है।

यह सारा खेल अपने ही भीतर चलता है।

हमारा ध्यान है तो दूसरा है, हमारा ध्यान नही है तो दूसरा नहीं है।

मन ही ध्यान देनेवाला और ध्यान पाने वाला बन जाता है।

होते हैं तो दोनों एक साथ होते हैं, नहीं होते तो दोनों नहीं होते।

इसलिए जब मानसिक दृश्य उत्पन्न होता है उसके साथ उत्पन्न मानसिक द्रष्टा का ध्यान, मानसिक दृश्य की ओर जाता है तब क्या उस घड़ी, उस पल को जाना जा सकता है कि मेरे साथ क्या हो रहा है, कैसे मेरा मन मुझे धोखा दे रहा है?

समस्या खुद के साथ शुरू और खत्म होती है।

इसीलिए खुद को जानना जरूरी है।

तामसी व्यक्ति के भीतर मानसिक द्रष्टा, मानसिक व्यक्ति के प्रति क्रोध, घृणा से भर सकता है।

सात्विक व्यक्ति के भीतर मानसिक द्रष्टा, मानसिक व्यक्ति के प्रति दया या क्षमाभाव से युक्त हो सकता है।

इसका लाभ उसीको होता है।

क्षमा करने वाला भूलकर अपने काम में लग जाता है।

क्रोध, घृणा करने वाला भूलता नहीं। उसके भीतर गांठ बन जाती है।

अगर उसे समझ में आजाता है कि मैं जिससे घृणा करता हूँ वह मेरे ही मन का दूसरा हिस्सा है, मैं ही हूँ तो घृणा समाप्त हो जायेगी।

स्वयं को कष्ट देने का कोई मतलब नहीं।

लेकिन फिर भी अगर क्रोध, घृणा, नाराजगी, द्वेष नही मिट रहे हैं तो जबर्दस्ती प्रेम या क्षमा करना संभव नहीं होगा।

भीतर गांठ है, ऊपर ऊपर से क्षमा कर रहे हैं तो सफलता नहीं मिलेगी।

इसके लिए अपने मन की गहराई में जाना होगा, उसकी परतों में क्या जटिलता है उसे पहचानना होगा तभी उनका अंत हो सकता है, स्वतंत्रता घट सकती है।

संबंध स्वस्थ और रचनात्मक बनते हैं।

यहाँ और लोग भी हैं। सभी से संबंध रचनात्मक, स्वस्थ होने चाहिए।

लेकिन पहले अपने भीतर मैं और मेरा जगत के बीच जो रागद्वेष पूर्ण संबंध है उसे समझना होगा।

इसे समझने की जिम्मेदारी खुद की है।

तब कोई और हमसे द्वेष करे तो उसका हम पर प्रभाव नहीं होगा। प्रभाव तभी होगा जब हम ही द्वेष करने और किये जाने वाले दो भागों में बंटे होते हैं।

अगर कोई हमसे द्वेष कर रहा है ऐसा हमें मालूम है तो हमें समझना चाहिए कि हमारे ही मन का एक हिस्सा, दूसरे हिस्से से द्वेष कर रहा है।

न किसीको उद्वेग करना, न किसीसे उद्विग्न होना तभी संभव है जब भीतर स्वयं दो भागों में बंटा हुआ नहीं है।

इसलिए हमारा हमारे व्यक्तिगत जगत से कैसा संबंध है यह जानना ही हितकारी हो सकता है।

इसमें हम कुछ कर सकें या न कर सकें मगर दोनों के बीच(हम और हमारे ही जगत के बीच) अहंकार की दीवार कैसे बनती है, कैसे प्रभाव उत्पन्न करती है यह जाना जा सकता है।

जिसमें परायापन होगा वह तकलीफ पायेगा, जिसमें अपनापन होगा वह सुखी होगा।

उसके भीतर मैं और मेरा जगत का झूठा, कृत्रिम, मानसिक विभाजन मिटने लगेगा,

स्थिति हृदय में, मूल स्रोत में होने लगेगी जिसकी खोज चल रही होती है।

।। शारदीय नवरात्र- २०२५ विशेष ।।

२२ सितंबर २०२५, सोमवार से शारदीय नवरात्र शुरू होंगे। इस बार नवरात्र तिथि में एक तिथि बढ़ रही है। इस साल श्राद्ध पक्ष में एक तिथि का क्षय हुआ है और नवरात्र में एक तिथि में वृद्धि हो रही है, इसलिए इस साल ०९ दिन के नहीं १० दिन के नवरात्र होंगे। इस बार शारदीय नवरात्र में चतुर्थी तिथि की वृद्धि हो रही है। नवरात्र में तिथि की वृद्धि शुभ फल दायक मानी जाती है। साथ ही माता का आगमन भी बहुत शुभ कारक हो रहा है। इस कारण से नवरात्र का प्रभाव भी शुभ ही प्राप्त होगा। कलश स्थापना २२ सितंबर, २०२५ सोमवार को किया जाएगा, जिसका शुभ मुहूर्त इस प्रकार से है-

प्रातःकाल का शुभ मुहूर्त-

प्रातः ०६:१९ से सुबह ०७:४० तक।

शुभ का चौघड़िया-

सुबह ०९:१५ से सुबह १०:४० तक।

अभिजीत मुहूर्त-

दोपहर ११:५६ से १२:४* तक।

माता के नौ रूपों की पूजा-

पहला दिन (२२ सितंबर)-

मां शैलपुत्री- पर्वतराज हिमालय की पुत्री, स्थिरता और सुख की देवी।

दूसरा दिन (२* सितंबर)-

मां ब्रह्मचारिणी- तपस्या और संयम की प्रतीक, ज्ञान और विद्या की देवी।

तीसरा दिन (२४ सितंबर)-

मां चंद्रघंटा- शांति और साहस की देवी, मस्तक पर अर्धचंद्र धारण करती हैं।

तीसरा दिन (२५ सितंबर)-

मां चंद्रघंटा- शांति और साहस की देवी, मस्तक पर अर्धचंद्र धारण करती हैं।

चौथा दिन (२६ सितंबर)-

मां कूष्मांडा- सृष्टि की जननी, ब्रह्मांड की उत्पत्ति से जुड़ी देवी।

पांचवां दिन (२७ सितंबर)-

मां स्कंदमाता- भगवान कार्तिकेय की माता, संतति और सुख की देवी।

छठा दिन (२८ सितंबर)-

मां कात्यायनी- ऋषि कात्यायन की पुत्री, विवाह और साहस की देवी।

सातवां दिन (२९ सितंबर)-

मां कालरात्रि- उग्र स्वरूप वाली, शत्रुओं का नाश करने वाली देवी।

आठवां दिन (*० सितंबर)-

मां महागौरी- गौर वर्ण वाली, पापों का नाश करने वाली देवी।

नौवां दिन (०१ अक्टूबर)-

मां सिद्धिदात्री- सभी सिद्धियों की दात्री, मोक्ष और शक्ति प्रदान करने वाली देवी।

(०२ अक्टूबर, विजयदशमी)

नवरात्रि के दौरान इन देवियों की पूजा- उपवास से भक्तों को शक्ति, सुख और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

पितृमोक्ष अमावस आज

पितृ अमावस्या पर विशेष रूप से परिवार के उन मृतकों का श्राद्ध किया जाता है जिनकी मृत्यु अमावस्या तिथि पर हुई हो। लेकिन यदि कोई संपूर्ण तिथि का श्राद्ध किसी कारण न कर पाया हो या गलती से कोई श्राद्ध छूट गया हो तो उसे अमावस्या का श्राद्ध जरूर करना चाहिए। कहते हैं इस तिथि पर श्राद्ध करने से सभी पितरों की आत्माएं तृप्त हो जाती हैं। इसलिए ज्यादातर लोग पितृ अमावस्या का श्राद्ध जरूर करते हैं। इस तिथि पर किसी का भी श्राद्ध किया जा सकता है इसलिए ही इसे सर्वपितृ मोक्ष अमावस्या कहा जाता है।

पितृ अमावस्या कब है?

==========

* अमावस्या श्राद्ध - 21 सितम्बर 2025, रविवार

* कुतुप मूहूर्त - 11:50 ए एम से 12:38 पी एम

* रौहिण मूहूर्त - 12:38 पी एम से 01:27 पी एम

* अपराह्न काल - 01:27 पी एम से 03:53 पी एम

* अमावस्या तिथि प्रारम्भ - सितम्बर 21, 2025 को 12:16 ए एम बजे

* अमावस्या तिथि समाप्त - सितम्बर 22, 2025 को 01:23 ए एम बजे

सर्व पितृ अमावस्या पर सभी को श्राद्ध क्यों करना चाहिए?

==========

इसे महालय समापन या महालय विसर्जन के नाम से भी जाना जाता है। सर्व पितृ अमावस्या पर अपने पितरों का श्राद्ध करना बहुत जरूरी होता है। कहते हैं इससे आपके पूर्वज आपसे प्रसन्न रहते हैं और आपको सुख-समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं। कहते हैं इस दिन श्राद्ध करने से सभी पितरों की आत्माएं तृप्त हो जाती हैं।

सर्व पितृ अमावस्या पर क्या करना चाहिए?

==========

* सर्व पितृ अमावस्या पर ब्राह्मणों को भोजन जरूर कराना चाहिए।

* कहते हैं इस दिन ब्राह्मण को भोजन करवाने या दान देने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

* इस दिन चना, हरी सरसों के पत्ते, जौ, मसूर की दाल, मूली, लौकी, खीरा और काला नमक नहीं खाना चाहिए।

* सर्व पितृ अमावस्या पर किसी का अनादर नहीं करना चाहिए। कहते हैं इससे आपके पितर आपसे नाराज़ हो सकते हैं।

पितरों की कृपा का महत्व

==========

शास्त्रों के अनुसार पितृदेव ही देवताओं से पहले पूजनीय हैं। मनुस्मृति और गरुड़ पुराण में कहा गया है कि यदि पितर प्रसन्न हों तो देवता भी प्रसन्न होते हैं। वहीं पितरों की नाराजगी को पितृदोष कहा जाता है, जो जीवन में बाधाएं, असफलताएं और अशांति का कारण बनता है। अतः सर्वपितृ अमावस्या के दिन किए गए दान और तर्पण से पितृदोष समाप्त होता है और परिवार पर सुख-समृद्धि बनी रहती है।

त्रिकटु चुर्ण

त्रिकटु आयुर्वेद में एक शक्तिशाली औषधीय संयोजन है। यह तीन प्रमुख जड़ी-बूटियों सोंठ (सूखी अदरक), काली मिर्च, और पिप्पली (लंबी मिर्च)—का मिश्रण है। आयुर्वेद में त्रिकटु को ₹उष्ण वीर्य₹ (गर्म प्रकृति) वाला माना जाता है, जो पाचन तंत्र को उत्तेजित करने, चयापचय को बढ़ाने और शरीर से विषाक्त पदार्थों (आम) को निकालने में मदद करता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से पाचन, श्वसन, और चयापचय से संबंधित समस्याओं के उपचार में किया जाता है। नीचे त्रिकटु के औषधीय उपयोग और अन्य जड़ी-बूटियों के साथ इसके कुछ प्रभावी नुस्खों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

त्रिकटु के औषधीय उपयोग

त्रिकटु का आयुर्वेद में व्यापक उपयोग है, और इसके निम्नलिखित लाभ हैं

पाचन तंत्र को मजबूत करना

त्रिकटु अग्नि (पाचन शक्ति) को प्रज्वलित करता है, जिससे भूख बढ़ती है और अपच, गैस, और कब्ज जैसी समस्याओं में राहत मिलती है।

यह आंतों में विषाक्त पदार्थों को हटाने में मदद करता है, जिसे आयुर्वेद में ₹आम दोष₹ कहा जाता है।

यह पेट फूलना (bloating) और पाचन एंजाइमों के स्राव को बढ़ाने में सहायक है।

वजन प्रबंधन:

त्रिकटु चयापचय (मेटाबॉलिज्म) को तेज करता है, जिससे वसा जलने की प्रक्रिया में सुधार होता है।

यह मोटापा कम करने और शरीर में जमा अतिरिक्त चर्बी को नियंत्रित करने में मदद करता है।

श्वसन स्वास्थ्य

त्रिकटु में कफ-नाशक गुण होते हैं, जो खांसी, जुकाम, अस्थमा, और ब्रोंकाइटिस जैसी श्वसन समस्याओं में राहत प्रदान करते हैं।

यह बलगम को पतला करके श्वसन मार्ग को साफ करने में मदद करता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता

त्रिकटु में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और रोगाणुरोधी गुण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं।

यह मौसमी बीमारियों जैसे सर्दी-जुकाम और फ्लू से बचाव में सहायक है।

जोड़ों और मांसपेशियों का दर्द

त्रिकटु की गर्म प्रकृति के कारण यह जोड़ों के दर्द, गठिया, और मांसपेशियों की जकड़न में राहत देता है।

यह रक्त परिसंचरण को बेहतर बनाता है, जिससे सूजन कम होती है।

त्वचा स्वास्थ

त्रिकटु का उपयोग त्वचा की समस्याओं जैसे मुंहासे और त्वचा में जलन को कम करने में किया जाता है, क्योंकि यह रक्त को शुद्ध करता है।

पड़ोसी देश लगता दयाल...!

'सत्यनारायण' गंगाराम का यहीं है खयाल,
अब उन्हें पड़ोसी देश भी लगता है दयाल।
देख लो पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं नेपाल,
घर जैसा महसूस होता है ना बड़ा कमाल।

प्रयोगधर्मी के राजनीतिक गुरू फिर शुरू,
समझ न आया सत्ता नहीं अब क्या करूं।
ओवरसीज से ही 'बयान' की बारिश करू,
अब जो भी कहना हैं कहने से क्यों? डरू।

भारत की विदेश नीति को लेकर यह कहा,
पॉलिसी फोकस पड़ोसी देश होना चाहिए।
इनकी बातों पर क्या? हमें भी रोना चाहिए,
इन्हें पड़ोसियों के यहां शिफ्ट होना चाहिए?
(संदर्भ-सैम पित्रोदा एक बार फिर विवादों से चर्चा में)

संजय एम तराणेकर

जीवन सभी चाहते हैं और मृत्यु से सभी डरते हैं, लेकिन जन्म और मृत्यु सृष्टि के नियम हैं। यह ब्रह्मांड के संतुलन के लिए अनिवार्य है। इसके बिना, मनुष्य/जीव, एक-दूसरे पर हावी/आक्रामक हो जाएंगे।

यूं तो जब हम परेशानियों/हारी-बीमारी/अनैच्छिक स्थितियों से गुजरते हैं तो कमोबेश सभी यही कहेंगे हैं कि ऐसे जीवन से तो मौत ही अच्छी है। लेकिन जिनको मौत का पता चल जाता है, किसी रोग/अन्यथा से, उनके दुख तो अकल्पनीय हो जातें हैं। छूटने वाली हर चीज़ को हम कसकर पकड़ लेते हैं। इसके विपरीत हम लम्बी आयु की कामना भी करते हैं। कभी समझें उस पीड़ा को, जिसमें धीर-गंभीर, इच्छा-मृत्यु भीष्म को अपने सामने चार-चार पीढ़ियों का मृत्यु-दंश झेलना पड़ा। इसे एक कहानी से और समझते हैं। एक राजा ने एक पहुंचे हुए ऋषि से अमरत्व की औषधि के संबंध में पूछा। ऋषि ने बताया कि ₹अमूक दो पहाड़ों के पार, एक झील है उसका पानी पीने से कोई भी अमर हो सकता है।₹ राजा वहां पहुंचकर ज्युंही वह जल पीने लगा तो उसे कराहते हुये एक व्यक्ति दिखाई दिया। पूछने पर उसने बताया कि ₹मैंने इस झील का पानी पीया और अमर हो गया। मेरे नाती-पोते अब और मुझे बर्दाश्त नहीं करते और मुझे घर से निकाल दिया। अब मैं अकेला ही बुढ़ापे में जी रहा हूं।₹ राजा सोचने लगा कि बुढ़ापे के साथ अमरता का भला क्या प्रयोजन होगा? और वह वापिस ऋषि जी के पास गया और पूछने लगा कि ₹कृपया मुझे बताएँ कि मैं अमरता और जवानी दोनों कैसे पा सकता हूँ।₹ ऋषि ने उत्तर दिया, ₹झील पार करने के बाद, आपको एक और बड़ा पहाड़ मिलेगा। इसे पार करें, और आपको पीले फलों से भरा एक पेड़ मिलेगा। उनमें से एक फल खाएँ, और आपको अमरता और जवानी दोनों मिल जाएँगे।₹ राजा वहां पहुंचकर ज्युंही वह फल तोड़कर खाने वाला था, उसे कहीं पास से ज़ोरदार बहस/लड़ाई की आवाज़ सुनाई दी। आश्चर्यवश वह खोजता हुआ वहां पहुंचा तो देखता है कि चार युवक जोर-जोर से बहस कर रहे हैं। राजा ने पूछने पर उनमें से एक ने कहा कि, ₹मैं 250 साल का हूँ, और मेरे दाईं ओर वाला आदमी 300 साल का है। वह मुझे मेरी संपत्ति का हिस्सा नहीं दे रहा है।₹ जब राजा ने दाईं ओर वाले आदमी से पूछा, तो उसने कहा, ₹मेरे पिता, जो 350 साल के हैं, अभी भी जीवित हैं और उन्होंने मुझे मेरा हिस्सा नहीं दिया है। मैं अपना हिस्सा अपने बेटे को कैसे दे सकता हूँ?*

मेरे पिता जो 400 वर्ष के हैं अभी उन्होंने मुझे अपनी सम्पत्ति हस्तांतरित नहीं की तो भला मैं कैसे इसे दे दूं? और हमारे सम्पत्ति संबंधी इन अनंत झगड़ों से तंग आकर, हम चारों को गांव वालों ने, गांव से निर्वासित कर दिया है।₹ लम्बे और स्थाई जीवन की कामना वाला, राजा आश्चर्यचकित होकर ऋषि के पास लौटा और उनके पैरों में गिर पड़ा। और बोला कि "मुझे मृत्यु का महत्व सिखाने के लिए धन्यवाद।" तब ऋषि ने कहा, "क्योंकि मृत्यु मौजूद है, इसलिए दुनिया में प्रेम है। मृत्यु से बचने की कोशिश करने के बजाय, हर दिन और हर पल खुशी से जियो। यदि हम खुद को बदलेंगे तो यह दुनिया भी बदली हुई दिखाई देगी।"

नागा बंधम क्या है, और नागा बंधम कैसे करते हैं?

नागा बंधन या नागा पदम (नागों की एक भोंपू (कोबरा किस्म के नागों) के साथ कुछ मूल्यवान बांधने की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से पूजा का एक तांत्रिक रूप है / तंत्रिका प्रक्रिया, अथर्व मूल माना जाता है। प्रक्रिया किसी भी रूप में लिखित रूप में नहीं पाई जाती है। यह बहुत ही गुप्त है और केवल कुछ ही सिद्धों के लिए जाना जाता है। माना जाता है कि नाग के जादू (नागा बंधन बनाने) के साथ-साथ जादू करने की प्रक्रिया भी वैष्णव ग्रंथों में पाई जाती थी, लेकिन अब तक, कोई भी नहीं जानता ...

जब से यह बताया गया था कि तिरुवनंतपुरम पद्मनाभस्वामी मंदिर की तिजोरी को नागा बांध के साथ सील कर दिया गया था, इस प्रक्रिया को लेकर उत्सुकता बढ़ गई है।

दरअसल, यह मंदिर केवल नाग बांधम वास्तुकला का उपयोग करने वाला नहीं है। चोल मंदिरों में भी नागा बांधम दिखाई दिया, जो एक वास्तुशिल्प विशेषता है जिसमें खंभों के अष्टकोणीय और वर्ग भागों के बीच एक सांप 'बैंड' (डिज़ाइन) है। कृपया मिथुन बंध में नगा और नागी के कोणार्क/कलिंग कला शैली को भी देखें। लेकिन जाहिर तौर पर, पद्मनाभस्वामी मंदिर के लिए मंत्र शक्ति (दरवाजे के दो नगा के साथ खुले मुंह के चित्रण की विशिष्ट वास्तुशिल्प विशेषताओं के साथ) अद्वितीय है।

यह बताया गया कि 16 वीं शताब्दी में सिद्धों द्वारा पद्मनाभस्वामी मंदिर के दरवाजे को आस्था नागा बांध मंत्रों के साथ सील कर दिया गया था; और केवल गरुड़ मंत्रों के साथ खोला जा सकता है जो सही क्रम में बोले जाने पर वर्तनी को तोड़ देगा और नागों से दूर चला जाएगा।

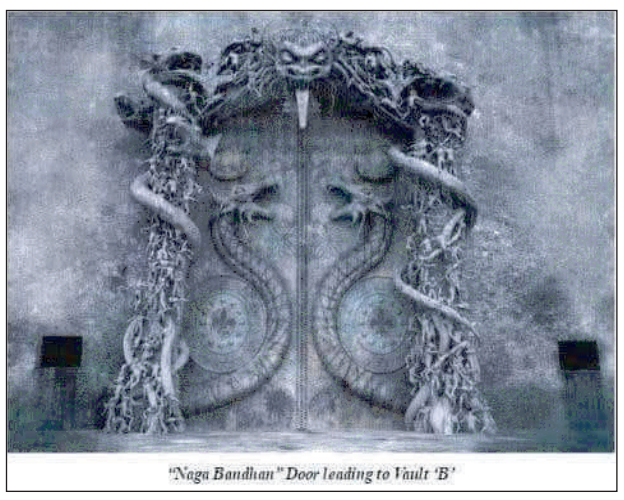
"Naga Bandhan" Door leading to Vault 'B'

सिद्ध प्रति अनुष्ठान करने वाले नहीं थे, इसके बजाय, उन्होंने ध्वनि की शक्ति का उपयोग किया, अर्थात, उन्होंने नाद योग (विशिष्ट ध्वनियों पर ध्यान) का अभ्यास किया। गरुड़ मंत्रों को अगम ग्रंथों में पाया जाता है, हालांकि, इस मंदिर के लिए, जाहिरा तौर पर, गरुड़ के लिए एक बहुत ही विशिष्ट मंत्र (या मंत्रों का सेट) (कुंजी के रूप में) ताला से मेल खाने के लिए एक विशिष्ट रूप में बोला जाता है (वास्तव में यह है) जिसे गरुड़ प्रयाग कहा जाता है)।

नागा को एक जल आत्मा माना जाता है, और इसे पूर्ववत करने का एकमात्र तरीका गरुड़ की अग्नि आत्मा का उपयोग करना है। यह केवल गरुड़ के लिए मंत्र का जप करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह सही ध्वनि आवृत्ति, तरंग दैर्ध्य, आदि प्राप्त करने के लिए नागा चक्र का ध्यान करके अग्नि की शक्ति का दोहन करने के बारे में भी है, नागा चक्र के बारे में कुछ विवरण पुराण यथा गरुड़ में पाए जा सकते हैं, जो इसे अनलॉक कर सकते हैं, उन्हें उच्च क्रम के सिद्धपुरुष होने चाहिए, जिन्हें नादबिंदु (और इसलिए रसायन विद्या के साथ-साथ योगिक शक्तियों का ज्ञान) है और इन तकनीकों में महारत हासिल है। शायद दरवाजा खोलने का प्रयास केवल एक वर्ष की निश्चित अवधि के दौरान किया जा सकता है।

इसके अलावा, गरुड़ मंत्र का अकेले उपयोग नहीं किया जा सकता है। इसका उपयोग अनुष्ठान क्रम में किया जाना चाहिए, जिसमें नरसिंह मंत्र जैसे अन्य मंत्र शामिल हैं, जो मूल मंत्र से नारायण (नारायण को ध्यान में रखते हुए) और शक्ति मंत्र से लक्ष्मी और अन्य दिव्य हैं। गरुड़ नारायण का वाहन है और वेलाखिल्य (बाला-ख्याला) से जुड़ा हुआ है जो योर के वैखानसा तपस्वियों में लीन थे (महाभारत की एक पौराणिक कथा है कि वाल्मीकि लोग सूर्य नारायण के रथ का अनुसरण करते थे)। तो, कौन जानता है ... संभवतः दरवाजा खोलने की विधि वैखानसा रचनाओं में हो सकती है।

पितरो को अन्न प्राप्ति का प्रकार

पुत्रआदि; पिता माता के उद्देश से श्राद्ध को करें तो नाम, गोत्र, और मंत्र; उस अन्न को उन पितरों के समीप पहुंचाते हैं। उसमें भी पितर देवरूप हों तो वह अन्न उनको अमृतरूप होकर मिलता है। गंधर्व हो तो भोग्यरूप से; पशु हों तो तृणरूप से, सर्प होय तो वायुरूप से यक्ष होंय तो पानरूप से, दानव हों तो मांसरूप से, प्रेत हों तो रुधिर रूप से, मनुष्य हों तो अन्न आदिरूप से; वह अन्न प्राप्त होता है। यह अन्य ग्रंथों में लिखा है। क्योंकि यह वचत है कि, उस मनुष्य के वे पितर आये हुये श्राद्धकाल को सुनकर और परस्पर मन से ध्यान करके

मन के समान वेग से आते हैं। और उन ब्राह्मणों के संग वायुरूप होकर भोजन करते हैं। इसी से श्रीरामचंद्रजी ने जब श्राद्ध किया था सीताजी ने ब्राह्मणों में दशरथादि को को देखा यह कथा सुनी जाती है। यमराज प्रेत और पितरों को अपने पुर में प्रविष्ट करते हैं और अपने पुर को शून्य करके यमालय से भूलोक को विसर्जन करते हैं। और वे पुत्र आदि के मधुसहित पायस की आकांक्षा करते हैं। कन्या के सूर्य में पितर पुत्रों के यहां जाते हैं अमावस्या आदि दिन की प्राप्ति के समय घर के द्वार पर टिकते हैं और श्राद्ध न होय तो अपने भुवन को; वे शापदेकर चले जाते हैं। इससे मूल, फल, वा जल के तर्पण से उनकी तृप्ति को करै। श्राद्ध का त्याग न करै। और श्राद्ध से; ब्रह्मा से स्तम्बपर्यंत सबकी तृप्ति सुनी जाती है। उनमें पिशाचादि पितरों की तृप्ति विकिर आदि से; वृक्ष आदि रूपों की स्नान के वस्त्र के जल आदि से; और किन्ही की उच्छिष्ट पिंड आदि से तृप्ति होती है। इससे जिसके पितर ब्रह्मरूप हैं उसको भी श्राद्ध करना उसमें पिता, पिता-मह, प्रपितामह; आदि रूप एक एक पार्वणों में क्रम से वसु, रुद्र, आदित्य, रूप पितरों का ध्यान करना। और एकोद्दिष्ट में वो वसुरूप से सबका ध्यान करना। कोई तो यह कहते हैं। कि अनिरुद्धरूप कर्ता; प्रद्युम्न, संकर्षण, वासुदेव रूप पिता पितामह, प्रपितामह का ध्यान करै। इसी प्रकार कहीं वरुण प्रजापति रूप से ध्यान कहा है। और कहीं मास, ऋतु, वत्सर, रूप से उनमें कुलाचार के अनसार, सबका वा एक एक रूप का ध्यान करने की व्यवस्था है। जहां पिता आदि का पार्वण श्राद्ध हो वहां सर्वत्र मातामह आदि करने। वार्षिक और मासिक में नहीं। मासिक और वार्षिक में तीन देवताओं का पार्वण होता है। वृद्धि, तीर्थ, अन्वष्ट का, गया और महालय में तीन का पार्वण और शेष श्राद्धों में छः पुरुषों का पार्वण जानना चाहिये। सपत्नीक पिता आदि तीन और सपत्नीक मातामह आदि तीन ये छः (६) पुरुष होते हैं। एक क्षाय के दिन को छोडकर स्त्रियों का पृथक श्राद्ध नहीं होता और अन्वष्टका, वृद्धि, गया, क्षायिका दिन; इनमें माता का पृथक श्राद्ध होता है। और अन्यत्र पति के संग होता है।

नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों को राजस्व विभाग डीएम कॉम्प्लेक्स राजा गार्डन पश्चिम में 31.10.2025 तक बुलाया

परिवहन विशेष न्यूज

उप–मंडल मजिस्ट्रेट कार्यालय (पटेल नगर) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार प्लॉट संख्या 3, शिवाजी प्लेस, राजा गार्डन, नई दिल्ली–110027
एफ .सं. डीसीडीओ/डब्ल्यू/सीडी/41/2025/5362 आदेश, दिनांक 18/09/2025
एसडीएम–1 (मुख्यालय) से प्राप्त आदेश संख्या टीए .35 (543) कॉल आउट/2025/1530–48 दिनांक 06 .08 .2025 के अनुपालन में निम्नलिखित 10 नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों को राजस्व विभाग डीएम कॉम्प्लेक्स राजा गार्डन पश्चिम में 31 .10 .2025 तक बुलाया जाता है, उनके नामों के सामने नीचे दिए गए विवरण दिए गए हैं: –

SNO.	NAME OF CANDIDATE	ENROLMENT NO.	CONTACT NO.	POSTED AT
1.	Monika Yadav	144/38600	9891711212	DM (West)
2.	Anil Kumar	223/900	8826605743	ADM (West)
3.	Priyanka Sharma	132/30060	9990422677	ADM (West)
4.	Parul Walia	236/174085	8287921113	SDM (PN)
5.	Priya	144/62599	7683093707	SDM (PN)
6.	Afsari	140/22482	9350297209/7011980204	SDM (RG)
7.	Poonam	237/148441	9311267353	SDM (RG)
8.	Nagma	236/156655	8851157322	SDM (RG)
9.	Priyanka Kalra	141/383022	9911305515	SDM (PB)
10.	Ranju	237/402041	8368721804	SDM (PB)

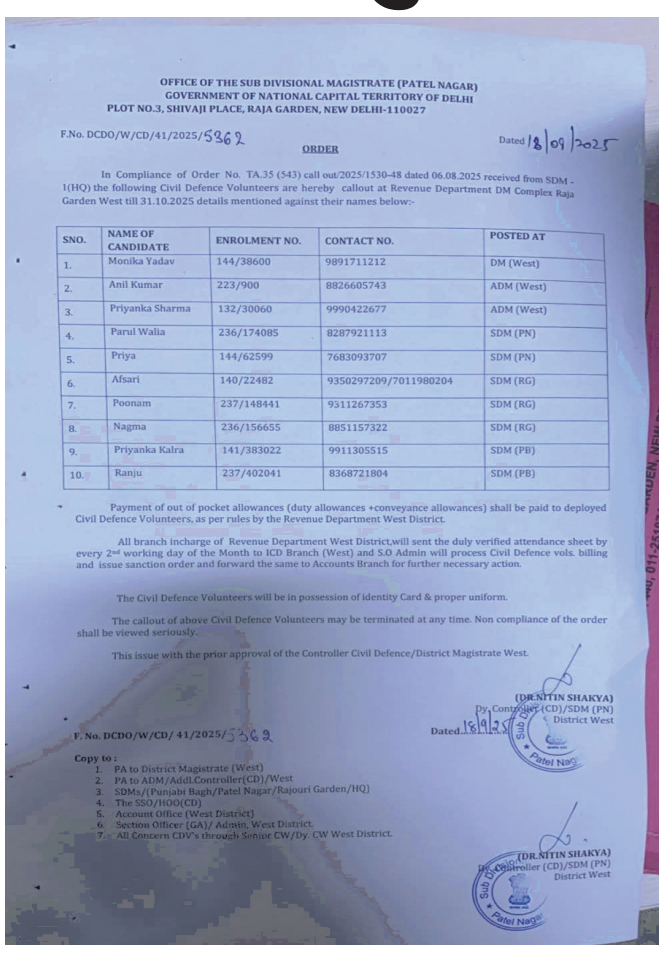
OFFICE OF THE SUB DIVISIONAL MAGISTRATE (PATEL NAGAR)
GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
PLOT NO.3, SHIVAJI PLACE, RAJA GARDEN, NEW DELHI-110027

F.No. DCDO/W/CD/41/2025/5362 Dated 18/09/2025

ORDER

In Compliance of Order No. TA.35 (543) call out/2025/1530-48 dated 06.08.2025 received from SDM - 1(HQ) the following Civil Defence Volunteers are hereby callout at Revenue Department DM Complex Raja Garden West till 31.10.2025 details mentioned against their names below:-

SNO.	NAME OF CANDIDATE	ENROLMENT NO.	CONTACT NO.	POSTED AT
1.	Monika Yadav	144/38600	9891711212	DM (West)
2.	Anil Kumar	223/900	8826605743	ADM (West)
3.	Priyanka Sharma	132/30060	9990422677	ADM (West)
4.	Parul Walia	236/174085	8287921113	SDM (PN)
5.	Priya	144/62599	7683093707	SDM (PN)
6.	Afsari	140/22482	9350297209/7011980204	SDM (RG)
7.	Poonam	237/148441	9311267353	SDM (RG)
8.	Nagma	236/156655	8851157322	SDM (RG)
9.	Priyanka Kalra	141/383022	9911305515	SDM (PB)
10.	Ranju	237/402041	8368721804	SDM (PB)

Payment of out of pocket allowances (duty allowances +conveyance allowances) shall be paid to deployed Civil Defence Volunteers, as per rules by the Revenue Department West District.

All branch incharge of Revenue Department West District,will sent the duly verified attendance sheet by every 2nd working day of the Month to ICD Branch (West) and S.O Admin will process Civil Defence vols. billing and issue sanction order and forward the same to Accounts Branch for further necessary action.

The Civil Defence Volunteers will be in possession of identity Card & proper uniform.

The callout of above Civil Defence Volunteers may be terminated at any time. Non compliance of the order shall be viewed seriously.

This issue with the prior approval of the Controller Civil Defence/District Magistrate West.

(DR.NITIN SHAKYA)
Dy. Controller (CD)/SDM (PN)
District West

F. No. DCDO/W/CD/ 41/2025/5362 Dated 18/9/25

Copy to :
1. PA to District Magistrate (West)
2. PA to ADM/Addl.Controller(CD)/West
3. SDMs/(Punjabi Bagh/Patel Nagar/Rajouri Garden/HQ)
4. The SSO/HOO(CD)
5. Account Office (West District)
6. Section Officer (GA)/ Admin, West District.
7. All Concern CDV's through Senior CW/Dy. CW West District.

(DR.NITIN SHAKYA)
Dy. Controller (CD)/SDM (PN)
District West

यह पुस्तक अध्यात्म जगत के लिए मील का पत्थर- डॉ.जोशी

मुख्य संवाददाता

राजधानी दिल्ली के लॉन टेनिस एसोसिएशन कॉम्प्लेक्स स्थित आर. के. खन्ना टेनिस अकादमी के कॉनकोरेंस हॉल (पूलसाइड) में पंडित (डॉ.) अजय भांबी की एक नई पुस्तक ₹शनि मानवता का एकमात्र मित्र₹ का भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। इस विशेष अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. मुरली मनोहर जोशी (पूर्व केंद्रीय मंत्री) उपस्थिति रहे। कार्यक्रम में साहित्य, अध्यात्म, योग, चिकित्सा और जीवन-दर्शन से जुड़े अनेक विद्वानों, साधकों, समाजसेवियों तथा गणमान्य अतिथियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ और उपस्थित लोगों ने पुस्तक की विषयवस्तु की गहराई तथा सामाजिक उपयोगिता की सराहना की।

पुस्तक का उद्देश्य शनि देव से जुड़े अंधविश्वासों और भ्रांतियों को दूर कर इसे जीवन की सकारात्मक ऊर्जा, आध्यात्मिक मार्गदर्शन और मानवता के व्यापक हित में प्रस्तुत करना है। पंडित (डॉ.) अजय भांबी, जो कि 40 वर्षों से अधिक अनुभव वाले विद्वान, मेडीटेशन विशेषज्ञ और "हिमालयन परंपरा" के साधक हैं, ने अपनी इस पुस्तक में शनि से संबंधित दार्शनिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक पहलुओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया कि शनि को प्रायः भय और कठिनाई का प्रतीक माना जाता है, जबकि वास्तविकता में यह मानवता का सबसे बड़ा मित्र है। उनकी लेखनी में सरल, वैज्ञानिक और जीवनोपयोगी दृष्टिकोण देखने को मिलता है, जो विशेष रूप से आधुनिक जीवनशैली में संतुलन, मानसिक शांति और आत्मिक शक्ति प्रदान कर सकता है। डॉ. भांबी की अंतरराष्ट्रीय पहचान उन्हें राजनीति, खेल, उद्योग और सांस्कृतिक जगत के प्रमुख व्यक्तित्वों तक ले गई है, जहाँ उनकी रचनाएँ जीवन दर्शन और भविष्यवाणी का अद्भुत समन्वय मानी जाती हैं।

सेवा पखवाड़े में डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय के कर्मपुरा परिसर में 'स्वामी विवेकानंद भवन' का लोकार्पण

सुषमा रानी

नई दिल्ली। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस पर आयोजित सेवा पखवाड़े के अंतर्गत आज डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय के कर्मपुरा परिसर में नव-निर्मित स्वामी विवेकानंद भवन का भव्य लोकार्पण मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए रेखा गुप्ता ने कहा कि सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि अंबेडकर विश्वविद्यालय समेत दिल्ली के समस्त विश्वविद्यालयों को विश्वस्तरीय शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। इसके लिए आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, योग्य फैकल्टी और अत्याधुनिक सुविधाएं सुनिश्चित की जाएंगी, जिससे छात्रों को श्रेष्ठतम शैक्षणिक वातावरण मिल सके।

उद्देश्य है कि यहां के छात्र न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक मंच पर भी आत्मविश्वास से खड़े हो सकें।

इस लोकार्पण समारोह में सांसद बांसुरी स्वराज, दिल्ली सरकार के मंत्री आशीष सूद, विधायक हरीश खुराना सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

जेन जी की नाकारात्मक भावना भारत में कभी भी सम्भव नहीं है...

स्वतंत्र लेखक – हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

युवा शक्ति हर देश की सबसे बड़ी शक्ति होती है। भविष्य उन्हीं का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ता है। जो नई सोच नये संकल्प व विचारों के साथ आगे बढ़ते हैं। वर्तमान समय में नये भारत में विकासशीलता की रफ्तार निरंतर आगे की और अग्रसर हो रही है। भारत की युवा पीढ़ी ही हमारे राष्ट्र का गौरव और भाग्य विधाता है। तो हमारे भारत देश में

जेन जी के लिए कोई स्थान नहीं है। भारत के कई नेता यहां भी युवाओं में उसी प्रकार नाकारात्मक पक्ष को उजागर करने का प्रयास कर रहे हैं। जैसा नेपाल में घटित हुआ है। वर्तमान समय में डिजिटल गतिविधियों के सहारे हमारे भारत में युवा वर्ग को दिशा भ्रमित करने पर जोर दिया जा रहा हैं। राजनीतिक विचारधारा बदलाव का प्रतीक है और सभी पार्टीयों के अपने अलग-अलग विजन है। लेकिन सभी के लिए अपने राष्ट्र की प्राथमिकता सबसे पहले है। इसलिए नेपाल जैसा कोई भी घटनाक्रम भारत में होगा इसकी कल्पना भी कभी सम्भव नहीं हो सकती है। राहुल गांधी जैसे व्यक्तित्व जो विदेशों में जाकर अपने देश का नाकारात्मक पक्ष उजागर करतें हैं और भारत में संसद-भवन में शोर-शराबे व हंगामा करके अपने आप को जागरूक विपक्ष बताते हैं। सिर्फ संविधान की बड़ी बड़ी बाते और वोट चोरी का आरोप-प्रत्यारोप से क्या होगा। सच्चाई को आईना दिखाये तो जनता में विश्वास पैदा होगा। हवा में हाथ पैर मरने से तैरना नहीं आ सकता उसके लिए पानी में उतरना होगा। वहीं बात भारतीय युवा पीढ़ी की करें तो वह संस्कृति व संस्कारों के ज्ञान की रोशनी में देशप्रेम के साथ डिजिटल युग में अपने आप को आगे बढ़ा रहीं हैं। उसके पास समसमाहिक विषयों पर चिंतन करने की अभिव्यक्ति है ऐसे में उन्हें गुमराह करने की निराधार कोशिश करने वाले अपनी आंखें खोले। क्योंकि यह नया भारत है बढ़ता भारत है। सत्ता की दहलीज पर आने हेतु इस प्रकार की गलत पहेलू को बताने वाले अच्छा नहीं कर रहे हैं। कुछ लोग बढ़ते भारत का मान सम्मान को क्यों खण्डित करने का साहस जुटा रहे हैं, जबकि सन 2014 के पहले लाखों युवा वर्ग बेरोजगारी, गरीबी और भ्रष्टाचार गिरफ्त में थे। आज सन 2025 नये भारत का डिजिटल युग है वहां कोई अराजकता की जगह नहीं है। नेपाल व भारत का अपना अपना दृष्टिकोण है। हम तो भारत की बात ही बताते हैं। यह धरतीं सदियों से ज्ञानियों ऋषि मुनियों त्यागी तपस्वीयों की भूमि रही है। यहां प्राचीनतम संस्कृति के साथ सभ्यता का बोलबाला है। राष्ट्रप्रेम देशभक्ति बहुत मजबूती लिए हुए है। यहां सत्य अहिंसा व विश्व शांति व विश्व कल्याण की प्राथमिकता सर्वप्रथम व सर्वोपरि है। भारत की युवा पीढ़ी को अपने उद्देश्य में भटकना नहीं चहिए। कुचक्र रचाने वाले कुछ लोग हमारी एकता व अखंडता को खण्डित करने की चाह रख रहे हैं। हमारे यहां हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई व विभिन्न जात-पात बिना छुआ-छूत के समाजिक जन जागरण में एकता के सुत्र में बंधे हुए हैं। फिर क्यों सत्ता के लोभियों के द्वारा भारत जैसे विशाल व विकासित राष्ट्र में जेन जी को हवा देना ठीक बात नहीं है। नाकारात्मक भाव का संचार करने वालो की कोई जगह भारत में नहीं है। युवा देश की जरूरत है और हमारा देश भी युवा है, लेकिन इस की बागडोर संस्कृति व सभ्यता के साथ परम्परागत भारतीय जनमानस ने थमी हुई है। जो युवा वर्ग को सकारात्मक सोच में आत्म-मंथन करने हेतु प्रेषित करते रहते हैं। राष्ट्र विरोधी ताकतों की इस कंलह से सत्य अहिंसा व शन्ति सभी धूमिल हो जाती है। भारत की वर्तमान पीढ़ी बहुत समझदार है, उसे कोई बहका नहीं सकता। हम तो यही देख रहे हैं की विपक्ष दलों के नेताओं के पास मुद्दों का अभाव है तभी वहां बहार देशों के मुद्दों पर अपनी गोटी फिट करने का काम कर रहे हैं। लेकिन नये भारत में युवाओं में अपने राष्ट्र के लिए सम्मान व देशप्रेम की भावना अभी भी जागृत हैं। इसलिए गलत दिशा में वहां नहीं जायेगा।

व्यंग्य : हम तो विपक्ष हैं

कस्तूरी दिनेश

बन्धुवर, हम तो विपक्ष हैं। हर बात पर सत्ता-पक्ष की ऐसी-तैसी करना हमारा काम है। हमसे समर्थन की आशा करना सांप की केंचुली से तेल निकालना जैसा है ! हमारा काम ही विरोध करना है। अच्छा काम करो तो, बुरा काम करो तो... ! इसमें बुरा मानने की क्या बात है ? और मान भी लोगे तो हमारा क्या बिगाड़ लोगे... ? हम कुत्ते की दुम हैं, बारह बरस पोंगली में रखोगे, फिर भी सीधी नही कर पावोगे... ! इंदिरा जी ने जब पाकिस्तान को युद्ध में हराकर बांग्ला-देश बनवाया तो अटल जी ने उन्हें "दुर्गा" कहकर उनका समर्थन किया ! विपक्ष में रहकर कोई इस प्रकार सत्ता-पक्ष का समर्थन करता है क्या... ? यह अच्छी बात नहीं हैं ! परम्परा का पालन होना चाहिए ! विपक्ष का मतलब है, सत्ता–पक्ष यदि सौ प्रतिशत सही है तो भी उसका विरोध... !

वह दिन को दिन कहे तो हमें पुरजोर विरोध करते हुए उसे सीना ठोंक कर रात कहना चाहिए ! कहना ही नहीं चाहिए, पूरी ताकत से सिद्ध भी करना चाहिए। अब आप ही देखिये मट्ठ-बुद्धि सत्ता-पक्ष अक्सर कहता है कि पाकिस्तानी आतंकी घुसपैठिये भारत में घुसकर आतंक फैलाते हैं ! लो, कर दिया न गधे जैसी बात... ? वो हमारे भाई हैं, कुछ साल पहले तक हम साथ-साथ रहते थे। दांत काटी रोटी थी ! अब भारत की सीमा में अंदर घुस गये तो प्रेम-भाव में मेल-मिलाप करने आये होंगे... ! अब क्या तुम उनको आतंकी कह दोगे... ? अजीब फोद्दिल दिमाग है यार आपका... ? एकदम "नेरो माइंडेड"... ! हर बात में कहते रहते हो, पकिस्तान का हाथ है, पाकिस्तान का हाथ है.. ! हाथ दिखाई पड़ता है तो हाथ मिला लिया करो न.. ! भाई हैं, आखिर छोटी-छोटी बातों को लेकर कब तक झगड़ा और हिंसा करोगे... ? क्या गांधी जी ने यही सिखाया... ? उन्होंने तो कहा था कि कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गाल भी सामने कर दो... ! राजनीतिक लाभ के लिए ही गांधी-गांधी की माला फेरोगे कि उनकी सीख पर भी चलोगे ... ?

अब ये कहते हैं कि पाकिस्तान को उसके घर में घुसकर हमारे सैनिकों ने मारा... ! अब तुम दूसरों के घर में घुसकर फिजूल मारपीट करोगे तो अंतराष्ट्रीय बदनामी नहीं होगी क्या... ? वे बेचारे कब से शान्ति-वार्ता कर लो, कर लो कहकर हाथ जोड़े पुकार मचा रहे हैं और तुम घर में घुसकर मारे जा रहे हो... ? अच्छी सभ्यता है... ! अब बताओ इनका विरोध नहीं करेंगे तो क्या करेंगे ... ? सत्ता—पक्ष उछल-उछल कर पोंगा बजाते रहता है कि गलवान में हमारे सैनिकों ने चीनियों को मारा... ! ठीक है बड़े बहादुर हो तो प्रमाण दिखाओ न भाई ? ऐसे रस्ते चलते थोड़ी मान लेंगे... ?

अब आप ही देखिये न, सत्ता-पक्ष रात-दिन हल्ला मचाये रहता है कि विकास पर विकास कर रहे हैं... ! हमने बुलेट ट्रेन चलाई, चंद्रयान - से चाँद की धरती पर पहुंचे.. ! स्वदेशी ड्रोन का निर्माण कर रहे हैं, परमाणु बम बना लिया, चीन तक मार करने वाले मिसाइल बना लिए... ! अरे मेरे गोबरनन्दन, जरा शांति की भी बात किया करो... ! ये बुद्ध और महावीर जैसे महापुरुषों वाला सत्य-अहिसा का देश है... मुहम्मद गौरी और और तैमूरलंग का नहीं... !

तो बन्धुवर, आप ही बताइए, हम विपक्षी अगर सत्ता-पक्ष का हर बात में विरोध करते हैं तो क्या गलत करते हैं.. ?

कस्तूरी दिनेश

फ्यूचर फ्रंटियर्स कॉन्क्लेव में भारत की विकास गाथा को आकार देने वाले राष्ट्र निर्माताओं को प्रदर्शित किया गया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। फ्यूचर फ्रंटियर्स कॉन्क्लेव भारत के भविष्य को आकार देने वाले राष्ट्र निर्माताओं का उत्सव बन गया, जिसमें उन उल्लेखनीय परिवर्तनकर्ताओं को सम्मानित किया गया जिनकी दृष्टि और कार्य विकसित भारत 2047 की भावना को मूर्त रूप देते हैं।

कॉन्क्लेव का मुख्य आकर्षण द लॉजिकल इंडियन द्वारा राष्ट्र निर्माता पुरस्कार थे, जो गहन सामाजिक और राष्ट्रीय प्रभाव डालने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करते हैं। गौरवान्वित प्राप्तकर्ताओं में शामिल थे:

गूंज की सह-संस्थापक मीनाक्षी गुप्ता, सामाजिक सशक्तिकरण में उनके अभूतपूर्व प्रयासों के लिए। डॉ. सौमित्र रावत, पद्म श्री पुरस्कार विजेता, सर गंगा राम अस्पताल के जीआई एवं एचपीबी सर्जरी के अध्यक्ष एवं प्रमुख, सर्जिकल नवाचार और जन स्वास्थ्य को आगे बढ़ाने के लिए।

दिगराज सिंह राजपूत, नेक्स्ट टॉपर्स के सह-संस्थापक और सीईओ, समुदायों को बदलने और राष्ट्र को आकार देने में उनके असाधारण नेतृत्व के लिए। डॉ. रुक्मणी कृष्णमूर्ति, प्रथम महिला फोरेंसिक वैज्ञानिक। अकादमिक परिषद सदस्य, फोरेंसिक विज्ञान और अकादमिक नेतृत्व में अग्रणी योगदान के लिए।

पुरस्कार प्राप्त करते हुए, दिगराज सिंह राजपूत ने कहा:

यह सम्मान सिर्फ़ मेरा नहीं, बल्कि हर उस युवा स्वप्नदर्शी का है जो बदलाव लाने का साहस रखता है। फ्यूचर फ्रंटियर्स कॉन्क्लेव इस बात की पुष्टि करता है कि भारत की महिलाएँ और युवा न केवल प्रगति में भागीदार हैं, बल्कि विकसित भारत 2047 के सच्चे निर्माता भी हैं।"

समारोह को और प्रभावशाली बनाते हुए, केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने ज़ोर देकर कहा:

"किसी राष्ट्र की शक्ति इस बात में निहित है कि वह अपनी महिलाओं और युवाओं को कैसे सशक्त बनाता है। यदि भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनना चाहता है, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि महिलाओं को समान अवसर मिलें और हमारी युवा आबादी नवाचार, ज़िम्मेदारी और राष्ट्र निर्माण की ओर अग्रसर हो। यह कॉन्क्लेव एक सशक्त अनुस्मारक है कि महिलाएँ और युवा हाशिये पर नहीं, बल्कि भारत की विकास गाथा के केंद्र में हैं।" फिक्की एफएलओ और छात्र संसद इंडिया द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित फ्यूचर फ्रंटियर्स कॉन्क्लेव में बी.आर. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में 700 से अधिक प्रतिनिधियों का स्वागत किया गया। ₹भारत की अगली विकास लहर की प्रेरक शक्ति के रूप में महिलाएँ और युवा₹ विषय पर आधारित इस कार्यक्रम में नीति निर्माताओं, उद्यमियों, उद्योग जगत के नेताओं और परिवर्तनकर्ताओं ने 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के दृष्टिकोण को आकार देने के लिए एक मंच प्रदान किया। "एसटीईएम में महिलाएँ और भारत का विकास दृष्टिकोण: विकसित भारत 2047₹ - विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की अधिक भागीदारी के लिए एक रोडमैप की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

"जी एन पी एस में सहायक कर्मचारियों के लिए प्रेरणादायक कार्यशाला"

मुख्य संवाददाता

राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने हेतु दिल्ली सरकार भिन्न-भिन्न उपाय कर रही है ।सरकार के इन विभिन्न प्रयासों को साकार रूप देने के लिए गुरु नानक पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन की एच .ओ एस मैडम मनप्रीत कौर ने विद्यालय में हिंदी दिवस के उपलक्ष में हिंदी पखवाड़ा मनाने के निर्देश दिए ,जिसे 11 सितंबर से आरंभ कर विद्यालय में प्रतिदिन मनाया जा रहा है ।सरकारी आदेशों का पालन करते हुए विद्यालय कार्यालय के कार्यकर्ताओं और विभिन्न सहायक कर्मचारी को हिंदी में बात करने और काम करने के लिए प्रेरित किया गया ।मैडम मनप्रीत कौर ने सहायक कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से मोटिवेशनल कार्यशाला काआयोजन किया ,जिसमें उन्होंने सफाई कर्मचारियों, माली, पियॉन, रसोइया, छात्रों को ले जाने वाले बस के ड्राइवर-कंडक्टर आदि कोअपने कर्तव्यों के प्रति और अधिक जागरूकता से कार्य करने के लिए प्रेरित किया साथ ही उन्होंने निश्चित किया कि सभी आपस में मिलजुल कर प्रेम - पूर्वक सहयोग की भावना से रहें, आपस में सद् व्यवहार करें ,पुराने कर्मचारी अपने नए साथियों को मधुर भाषा में काम करना बताएँ और सिखाएँ।

कार्यशाला के अंत में सहायक कर्मचारियों से भी उनकी समस्याओं पर परिचर्चा की गई तथा उनकी विभिन्न आवश्यकताएँ पूछी गईं जो विद्यालय की उन्नति में भागीदार बन सकें ।माली ने विद्यालय में और अधिक फुलवारी बढ़ाने की माँग रखी जिसे मनप्रीत मैडम जी ने शीघ्र ही पूरा करने का आश्वासन दियाऔर प्रसन्नचित्त भाव से कार्यशाला को इति प्रदान की ।

योगी आदित्यनाथ के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए मिशन शक्ति केंद्र का शुभारंभ किया गया

बदायूं: थाना बिनावर प्रांगण में दिन शनिवार को माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए मिशन शक्ति केंद्र का शुभारंभ किया गया। थाना अध्यक्ष बिनावर राजेंद्र सिंह ने मिशन शक्ति के पांचवें चरण का शुभारंभ होने से पूर्व कहां की उपद्रवियों, अराजक तत्वों एवं बदमाशों को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि पुलिस ऐसे तत्वों से उन्हीं की भाषा में निपटे। इस मौके पर बिनावर थाना अध्यक्ष राजेंद्र सिंह, उप निरीक्षक शेरपाल सिंह, उप निरीक्षक आदेश तिवारी, उप निरीक्षक दिनेश तिवारी, उप निरीक्षक राजपाल सिंह, उप निरीक्षक सर्वेश कुमार, उप निरीक्षक रवेंद्र शुक्ला, कांस्टेबल शुभनीत शाक्य, महिला हेड कांस्टेबल सोनिका, रुचि मिश्रा, पूनम यादव, महिला कांस्टेबल सीमा माथुर, सरिता, करिश्मा, टीना, भावना, प्रतिभा यादव, वीर सिंह प्रधान पति, कमलेश गुप्ता, संजीव गुप्ता पूर्व प्रधान, राकेश प्रधान, शमीम आलम प्रधान, राजेंद्र सिंह प्रधान, ऋषिपाल कश्यप प्रधान, लालाराम शाक्य प्रधान, फाजिल अली प्रधान, सुनील पाल प्रधान पुत्र, सुखपाल सिंह प्रधान पति सहित आदि ग्राम प्रधान व ग्रामीण उपस्थित रहे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में हुआ तीन दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला का शुभारंभ

देश भर के 15 राज्यों के 55 प्रतिष्ठित चित्रकार कर रहे हैं अपनी कला का प्रदर्शन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दवन। छटीकरा रोड़ स्थित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आश्रम में तीन दिवसीय पेंटिंग कार्यशाला के आयोजन की विधिवत शुरूआत हो हुई। रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में 21 सितंबर तक चलने वाले इस कार्यक्रम का उद्घाटन पूज्य संत श्री गोविंदानंद तीर्थ तथा पद्मश्री श्रीकृष्ण कन्हाई चित्रकार के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस दौरान काउंसिल के ट्रस्टी देव दत्त शर्मा (पूर्व आईएएस) ने माल्यार्पण कर अतिथियों का सम्मान किया।

इस अवसर पर पूज्य गोविंदानंद तीर्थ ने चित्रकारों को ईश्वर द्वारा बनाई गई श्रृष्टि की चित्रकारी एवं भगवान कृष्ण और राधा रानी के प्राकट्य-स्थल ब्रज की सांस्कृतिक महिमा को बताते हुए आह्वान किया कि आपकी तूलिका गिरिराज महाराज, यमुना महारानी, पशु-पक्षी तथा भगवान की लीलाओं का ऐसा चित्रण हो ताकि हर चित्र एक संदेश दे। पद्मश्री श्रीकृष्ण कन्हाई ने कहा कि भगवान कृष्ण की चित्रकारी एक साधना के रूप में यदि की जाए तो निस्संदेह वह चित्र अपने आप भाव प्रकट करते हैं।

इस चित्रकला पेंटिंग कार्यशाला का थीम ब्रज और उसकी संस्कृति है।

काउंसिल के विशेष सचिव विवेक शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम में पूरे देश के 15 राज्यों के 55 प्रतिष्ठित चित्रकार अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।इस प्रतियोगिता में जो पेंटिंग प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर होंगी, जजेस के द्वारा उन कलाकारों का सम्मान किया जाएगा।

आज इस कार्यक्रम में भागवत प्रवक्ता आचार्य शिवाकांत महाराज, काशी से सतुआ बाबा, कानपुर से करौली सरकार तथा केंद्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल भी पधारे, जिन्होंने प्रतिभागी कलाकारों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने रामायण रिसर्च काउंसिल के ट्रस्टी व पूर्व आई.ए.एस. देवदत्त शर्मा का, उनके द्वारा धर्म,अध्यात्म व भारतीय संस्कृति के संवर्धन व उन्नयन हेतुकिए जा रहे कार्यों के लिए रसप्त निधि दर्शनरू नामक चित्र को भेंट करके सम्मान किया।साथ ही ठाकुर बांके बिहारी महाराज से उनके स्वस्थ, उज्ज्वल व सुदीर्घ जीवन की मंगल कामना की।

इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार अनिल महेश्वरी, क्यूरेटर पवन टाक, सौरभ गौड़, मंगलायतन विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग की प्रोफेसर व प्रख्यात कवियित्री डॉ. प्रेमलता, डॉ. राधाकांत शर्मा एवं उर्मा शर्मा भी शामिल हुईं।

ट्रस्टी देवदत्त शर्मा ने कहा कि रामायण रिसर्च काउंसिल देश की एक ऐसी संस्था है, जो अयोध्या में प्रभु श्रीरामलला के मंदिर संघर्ष पर भी कार्य करती है और मां सीताजी के प्राकट्य-क्षेत्र सीतामढ़ी में भी मां सीताजी को श्रीभगवती के रूप में स्थापित करने के प्रति संकल्पित है। काउंसिल श्रीरामजन्म भूमि के 500 वर्षों के इतिहास पर 1250 पृष्ठों का एक ग्रंथ 'श्रीरामलला- मन से मंदिर तक' को भी तैयार कर चुकी है,जिसका शीघ्र ही विमोचन होना है।साथ ही माता सीता के प्रति सीतामढ़ी में काउंसिल के सतत कार्यों को देखते हुए बिहार सरकार ने काउंसिल को 12 एकड़ जमीन भी आवंटित की है। काउंसिल में हाल में संपन्न हुए महाकुंभ पर एक बड़ा साहित्य 'महाकुंभ का महामंथन" भी तैयार किया है।

कासगंज। एसपी ने फीता काटकर महिला सुरक्षा केंद्र का किया उद्घाटन कासगंज सहावर में मिशन शक्ति अभियान के तहत कोतवाली में शनिवार को महिला हेल्प डेस्क को महिला सुरक्षा केंद्र के रूप में विकसित किया गया। इस दौरान कोतवाली पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए लाइव प्रसारण किया गया।

बिना अनुमति रील बनाए जाने से थाने में हड़कंप

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

बाराबंकी में एक लड़की ने थाने के सामने रील बनाई। रील वायरल हो गई। बिना अनुमति रील बनाए जाने से थाने में हड़कंप मच गया। परेशान थाने के दरोगा, दो-तीन सिपाही लेकर गुरुवार दोपहर में लड़की के घर रील डिलीट कराने पहुंच गए। पुलिस ने कहा-रील डिलीट करो। उसने साफ मना कर दिया। वह चाकू लेकर छत पर चढ़ गई। उसकी बहन वीडियो शूट करने लगी। युवती ने थानाध्यक्ष से कहा- हमारा वीडियो मिलियन में चल रहा है हम डिलीट नहीं करेंगे। अगर हमें कुछ कहेंगे तो हम सोशल मीडिया पर डाल देंगे उसे। लड़की ने पुलिस वालों को चाकू दिखाते हुए कहा- हम मर जाएंगे, सुसाइड कर लेंगे। आसपास के काफी लोग भी जुट गए। पुलिसवाले परेशान हो उठे। करीब एक घंटे तक यह ड्रामा चलता रहा। लड़की जब छत से उतरने को राजी न हुई तो पुलिसवाले हार मानकर लौट गए। पुलिस के जाने के बाद लड़की ने एक और रील बनाई। इस रील में उसने योगी-मोदी से गुहार लगाई कि पुलिस वाले आकर जेल भेजने की धमकी दे रहे हैं, हमारी मदद कीजिए। हमें आपका सपोर्ट चाहिए। मामला बड्डूपुर कोतवाली के बसंतपुर गांव का है।

गरीबों की सेवा में अग्रणी नारायणा, जे सी आई के वर्ल्ड वाइस प्रेसिडेंट जापान के हिरोकी ने किया शुभारम्भ

सुनील बाजपेई

कानपुर। अनगिनत अन्य के साथ सर्वोत्तम और सस्ती चिकित्सा के रूप में भी समाज सेवा में अग्रणी नारायणा हॉस्पिटल अपने कर्तव्य पथ पर लगातार सफलतापूर्वक अग्रसर हो रहा है। इसी क्रम में जे सी आई रॉयल्स फैमिली नारायण मेडिकल कॉलेज के संयुक्त सहयोग से अब यहां नारायणा हॉस्पिटल में एक नवीनतम एच.डी.यू तथा आई.सी.यू वार्ड का शुभारंभ हो चुका है। यह वार्ड आने वाले समय में कई जरूरतमंद मरीजों के जीवन को संवारने का माध्यम बनेगा।

इस विशेष पहल का उद्देश्य ऐसे जरूरतमंद मरीजों को बेहतर और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है ,जिन्हें आर्थिक कारणों से इलाज कराने में कठिनाई होती है। इस वार्ड में मरीजों का उपचार सिर्फ दवाइयों के खर्च पर किया जाएगा। इसका शुभारंभ भव्य आयोजित किए गए समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में जापान से पधारे जे सी आई मतलब जूनियर चैंबर इंटरनेशनल के वर्ल्ड वाइस प्रेसिडेंट श्री हिरोकी तिमोरी ने किया।

बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुए इस भव्य कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय परंपराओं के अनुरूप हुई, जिसमें अतिथियों का स्वागत

भारतीय संस्कृति और परंपरा की झलक से सभी को गहराई से प्रभावित करने वाले तथा

पवित्रता, सकारात्मक ऊर्जा और शुभारंभ का प्रतीक शंखनाद ,शहनाई वादन, और तिलक किया गया।

इस अवसर पर भारत आकर और इस तरह की मानव सेवा की पहल को देखकर अत्यंत खुशी भी जाहिर करते हुए श्री हिरोकी तिमोरी ने कहा कि जे सी आई का उद्देश्य हमेशा से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना रहा है।

भारतीय परंपराओं और अतिथि सत्कार की गर्मजोशी से बहुत गहराई से प्रभावित जूनियर चैंबर इंटरनेशनल के वर्ल्ड वाइस प्रेसिडेंट श्री हिरोकी तिमोरी ने नारायण हॉस्पिटल के इस वार्ड को उसी सोच का एक प्रेरणादायक उदाहरण भी बताया।

इस अवसर पर ईशान जी ने कहा कि नारायणा हॉस्पिटल का यह एच. डी. यू. व आई. सी. यू. वार्ड केवल एक स्वास्थ्य सुविधा नहीं, बल्कि एक मजबूत, स्वस्थ और संवेदनशील समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। इस मौके पर जे सी आई रॉयल्स फैमिली ने सभी जे सी आई चैप्टर्स का आभार व्यक्त किया ,जिन्होंने इस परियोजना को सफल बनाने में अपना सहयोग और विश्वास दिया।

नारायण ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूट के चेयरमैन प्रखर समाज सेवी प्रेसिडेंट अमित नारायण त्रिवेदी की सराहनीय और सफल अगुवाई में अपनी निष्ठा, परिश्रम और सहयोग से इस परियोजना को साकार करने में सेक्रेटरी अनिंद मिश्रा ,ट्रेजर गौरव तोशनीवाल, मैनेजिंग डायरेक्टर उदित नारायण, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. रोहिनी श्रीवास्तव, डॉ.अंकिता त्रिपाठी, गुंजन त्रिपाठी, मोहित पांडे, पारस त्रिपाठी, श्वेता ,आकांक्षा, सिद्धार्थ,पारुल ,तनुज जकोड़िया,आकांक्षा श्रीमल और सुमित गुप्ता आदि की भी भूमिका अहम रही। इसको सफल बनाने में जे सी आई रॉयल्स फैमिली की टीम का विशेष योगदान रहा।

"औ़रा" में सजी अंतरराज्यीय सितारों की महफ़िल

सीताराम, चंद्रशेखर, भावना व ऐज़ाज़ ने जीते पुरस्कार

वीणा म्यूजिकल ग्रुप के मंच पर गूंजे सुर, दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। बिलासपुर शहर की शाम सुरों से सराबोर रही। वीणा म्यूजिकल ग्रुप और डायमंड कंपनी रऔ़राद के संयुक्त तत्वावधान में रऔ़राद शोरूम में रअंतरराज्यीय सितारों की महफ़िलद का भव्य आयोजन हुआ। इसमें छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के 40 से अधिक कलाकारों ने शिरकत की।

विशेष अतिथि बने डॉ. मिश्रा

कार्यक्रम में फिल्म डायरेक्टर, राइटर और एक्टर डॉ. सुनील दत्त मिश्रा विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उन्होंने कलाकारों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि संगीत समाज को जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है।

पुराने गीतों ने बांधा समां

कलाकारों ने किशोर कुमार, लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, मुकेश और आशा भोंसले जैसे दिग्गज गायकों के सदाबहार गीत प्रस्तुत कर महफ़िल को यादगार बना दिया। दर्शक देर तक तालियां बजाकर कलाकारों की प्रस्तुति का आनंद लेते रहे।

चार कलाकारों को मिला सम्मान

सभी प्रस्तुतियों में से सर्वश्रेष्ठ गायन के लिए सीताराम चौहान, चंद्रशेखर राव, भावना नीरापुरे और एजाज बख्श को पुरस्कार से नवाजा गया। विजेताओं को विशेष अतिथि डॉ. मिश्रा, औ़रा के स्टोर मैनेजर उत्तम नागर और वीणा म्यूजिकल ग्रुप की संचालिका नीलम धुर्वे ने स्मृति चिन्ह व पुष्पगुच्छ प्रदान किए।

अन्य कलाकारों की भी चमकी प्रतिभा

इसके अलावा गायक उमेश मंडल, मुन्ना श्रीवास, अभय ताम्रकर, के.के. तिवारी, राहुल नीरापुरे, जया दुबे, रानू पसेरिया, कमलाकांत बंसी, अल्पना जिवतोड़े, टी.आर. धुर्वे, सीता गुप्ता, देवेंद्र जिवतोड़े, राजू पसेरिया और जग्गू रजक ने भी शानदार प्रस्तुतियां देकर दर्शकों को खूब प्रभावित किया।

अविनाश लंगोटे ने संभाला मंच

कार्यक्रम का संचालन महाराष्ट्र के नामी एंकर–सिंगर और रसितारों का कारवां म्यूजिकल ग्रुपर के संचालक अविनाश लंगोटे ने किया। वहीं आयोजन की सफलता में औ़रा शोरूम के मैनेजर उत्तम नागर के नेतृत्व में एफएम चांदनी तारा, डीएफएम सुषमा, एएफएम युवराज बघेल, गंगा, ऋचु, इकबाल, ईश्वर, प्रभाकर और आशीष का विशेष सहयोग रहा।

आत्मप्रशंसा ,चापलूसी और स्वाभिमान का राजनीतिक समीकरण-भारतीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक गहन विश्लेषण

"आत्मप्रशंसा का बाजार" राजनीति में इतनी गहराई तक घुस चुका है कि अनेकों नेताओं के वास्तविक गुण दब जाते हैं और केवल कृत्रिम छवि ही जनता के सामने प्रस्तुत होती है- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी प्रशंसा सुनना पसंद करता है। यह मनोविज्ञान राजनीति में सबसे अधिक दिखाई देता है। सत्ता और पद पर बैठे नेताओं को हर वक्त यह सुख मिलता है कि उनके आसपास लोग उनकी तारीफ़ करें, चाहे वह सच्ची हो या झूठी। यही कमजोरीचाटुकारों के लिए अवसर बन जाती है। भारत हो या अमेरिका, रूस हो या चीन, हर जगह यह दृश्य आम है कि नेता की छवि चमकाने के लिएकार्यकर्ता, सलाहकार या मंत्रीगण उनकी हर बात की तारीफ़ करते हैं।यह"आत्मप्रशंसा का बाजार" राजनीति में इतनी गहराई तक घुस चुका है कि कई बार नेताओं के वास्तविक गुण दब जाते हैं और केवल कृत्रिम छवि ही जनता के सामने प्रस्तुत होती है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि भारत में चुनावी सभाओं में अक्सर देखा जाता है कि पार्टी नेता अपने शीर्ष नेता को"देश का सबसे बड़ा जननायकर, "विश्वगुरु" या"लोकतंत्र का रक्षक" बताकर जयघोष करते हैं।लेकिन इन नारों का यथार्थ कितना है, यह अलग सवाल है।इसी तरह अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप ने बार-बार अपने भाषणों में कहा कि उन्होंने "इतिहास का सबसे बड़ाआर्थिक सुधार किया" "सबसे मजबूत सेना बनाई" या "कोविड के समय सबसे अच्छा प्रबंधन किया।" उनके समर्थक नेताओं ने इस आत्मप्रशंसा को और ऊँचा चढ़ाया, भले ही विशेषज्ञ रिपोर्ट इसके सटीक विपरीत हों।

साथियों बात अगर हम राजनीति में चापलूसी केवल अवसरवाद नहीं बल्कि एक तरह की "कला" बन गई है, इसको समझने की करें तो बड़े नेताओं के आसपास कई ऐसे लोग रहते हैं जो सिर्फ़ इसलिए टिके रहते हैं क्योंकि वे हर वक्त नेता की हाँ में हाँ मिलाते हैं।उन्हें सही-गलत की परवाह नहीं होती, उनका एकमात्र लक्ष्य सत्ता से जुड़कर लाभ उठाना होता है। यही कारण है कि चापलूस अक्सर ऊँचे पदों तक पहुँच जाते हैं जबकि ईमानदार और स्वाभिमानी लोग पीछे छूट जाते हैं।भारतीयराजनीति में इसका उदाहरण कई राज्योंकी विधानसभाओं में देखने को मिलजाता हैं, जहाँ मंत्री अपने नेता के सामने झुककर "महाराजा" "विकासपुरुष" या"जननायक"जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं। वहीं स्वाभिमानी नेता कई बार पार्टी लाइन के विपरीत जाकर सच बोलने की हिम्मत सीना तानकर करते हैं ,नतीजा यह होता है कि उन्हें हाशिये पर धकेल दिया जाता है जहां उन्हें पूछने वाला कोई नहीं रहता।अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी यही स्थिति है।उत्तर कोरिया के किम जोंग-उन का शासन इस कला की चरम सीमा है। उनके आसपास कोई भी नेता या अधिकारी उनकी आलोचना की कल्पना तक नहीं कर सकता। जो भी चापलूसी में माहिर है वही टिकता है, बाक़ी गायब हो जाते हैं। इसके विपरीत जर्मनी की एंजेला मर्केल या न्यूज़ीलैंड की जैसिंडा अर्डर्न जैसे नेता स्वाभिमानी थे, उन्होंने कभी अपनी छवि चमकाने के लिए चापलूसों का सहारा नहीं लिया, बल्कि नीतियों और काम से जनता का विश्वास पाया।

साथियों बात अगर हम झूठी प्रशंसा और खुशामद को राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में समझने की करें तो, झूठी प्रशंसा, मक्खनबाजी, बढ़ई दिखावी आवभगत, चने के झाड़ पर चढ़ाना, ये सब राजनीति में "चाटुकारिता की शब्दावली" हैं। इस शब्दकोश का इस्तेमाल हर जगह होता है, बस शैली अलग-अलग होती है।भारत में विधानसभाओं और संसद के भीतर कई बार देखा गया है कि सांसद अपने नेता के पक्ष में लम्बे-लम्बे भाषण देते हैं, जिनका नीतियों से ज़्यादा संबंध नहीं होता बल्कि नेता की व्यक्तित्व पूजा से होता है। यही प्रवृत्ति रूस में व्लादिमीर पुतिन के संदर्भ में भी देखी जा सकती है। वहाँ मीडिया से लेकर संसद तक उनकी इतनी प्रशंसा होती है कि असल आलोचना सामने नहीं आ पाती।झूठी प्रशंसा का परिणाम यह होता है कि नेता वास्तविक चुनौतियों से आँख मूँद लेते हैं उदाहरण के लिए ट्रंप के कार्यकाल में उनके करीबी मंत्रियों ने कई बार उनकी गलत नीतियों को भी सही ठहराया। परिणाम यह हुआ कि अमेरिका ने कोविड प्रबंधन में भारी नुकसान उठाया। इसी तरह पाकिस्तान में इमरान खान को उनके करीबी "नया पाकिस्तान बनाने वाला महानायक" कहते रहे, लेकिन जब सेना का समर्थन हट गया तो वही नेता पल भर में गायब हो गए।

साथियों बात अगर हम स्वाभिमानी नेताओं का संघर्ष को समझने की करें तो, स्वाभिमानी और आत्मसम्मान से भरे नेता राजनीति में हमेशा कठिनाइयों का सामना करते हैं। वे झूठी प्रशंसा के सहारे नहीं चलते, बल्कि सच्चाई बोलते हैं। ऐसे नेताओं को अक्सर दल से निकाल दिया जाता है, मीडिया में बदनाम किया जाता है या चुनाव में हराने की साजिश रची जाती है।भारत में इसका उदाहरण भी पक्ष विपक्ष में बहुत हैं,

राजनीति में चाटुकारिता चापलूसी

जिन्होंने पार्टी नेतृत्व की गलत नीतियों की आलोचना की तो उन्हें हाशिये पर डाल दिया गया हैं। लेकिन उन्होंने अपनी स्वाभिमानी स्थिति बनाए रखी।अंतरराष्ट्रीय राजनीति में इसका सबसे बड़ा उदाहरण नेल्सन मंडेला हैं।उन्होंने सत्ता पाने के लिए कभीचापलूसी या खुशामद का सहारा नहीं लिया। 27 साल जेल में रहकर भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।नतीजा यह हुआ कि वे आज भी विश्व के सबसे सम्मानित नेताओं में गिने जाते हैं। इसके विपरीत जिम्बाब्वे के रॉबर्ट मुगाबे जैसे नेता, जो अपने चापलूसों से घिरे रहे, अंततः तानाशाह कहलाए और सत्ता से बेइज्जती के साथ हटे।

साथियों बात अगर हम भारतीय राजनीति में चापलूसी बनाम स्वाभिमान समझने की करें तो, भारत की राजनीति में चापलूसी की परंपरा नई नहीं है। मुग़ल दरबार से लेकर ब्रिटिश राज तक और आज़ाद भारत की संसद तक यह संस्कृति जीवित रही है। कांग्रेस के दौर में इंदिरा गांधी के समय "इंदिरा इज़ इंडिया" जैसा नारा गढ़ा गया, जिसने आपातकाल जैसी परिस्थितियों को जन्म दिया। वहीं अटल बिहारी वाजपेयी या डॉ. मनमोहन सिंह जैसे नेता अपेक्षाकृत स्वाभिमानी रहे और व्यक्तिगत प्रशंसा से दूरी बनाए रखी।वर्तमान में भी हम देखते हैं कि भारतीय राजनीति में बड़े नेता अपनी छवि को "मसीहा" के रूप में स्थापित करने के लिए चापलूसों पर निर्भर रहते हैं।सोशल मीडिया पर यह प्रवृत्ति और भी तेज़ हो गई है। ट्रोल आर्मी, आईटी सेल और प्रचार मशीनरी मिलकर झूठी प्रशंसा को जनभावना में बदलने का काम करती है।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय राजनीति में स्वाभिमान और चापलूसी को समझने की करें तो, दुनियाँ की राजनीति में भी यही समीकरण है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग को "महान नेता" कहकर पेश किया जाता है और पार्टी कार्यकर्ता उनकी हर बात को अंतिम सत्य मानते हैं। लेकिन अमेरिका में जो बाइडेन जैसे नेता चापलूसी संस्कृति से दूर रहकर कामकाज पर ध्यान देते हैं, भले ही उनकी आलोचना होती रहे।यूरोप की राजनीति अपेक्षाकृत संतुलित है क्योंकि वहाँ मीडिया और नागरिक समाज मजबूत हैं। इसलिए नेताओं को झूठी प्रशंसा पर टिके रहना मुश्किल होता है। फ्रांस के इमैनुएल मैक्रों या ब्रिटेन के कीर स्टार्मर को लगातार आलोचना झेलनी पड़ती है, लेकिन यही लोकतंत्र का वास्तविक चेहरा है।

अतःअगर हम उपयोग पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि, राजनीति में आत्मप्रशंसा और चापलूसी का खेल अनंत है। लेकिन इतिहास गवाह है कि लंबे समय तक वही नेता टिके हैं जिन्होंने स्वाभिमान और सत्य का मार्ग चुना। चापलूस और मक्खनबाज नेता को कुछ समय के लिए सिंहासन पर चमका सकते हैं, लेकिन जब सच्चाई सामने आती है तो वही नेता अकेले रह जाते हैं।भारत और विश्व की राजनीति के मौजूदा दौर में सबसे बड़ी चुनौती यही है कि नेता झूठी प्रशंसा और चापलूसी की सीढ़ी पर चढ़ने के बजाय जनता और सच्चाई पर भरोसा करें। लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब स्वाभिमानी नेता उभरेंगे और चापलूस संस्कृति कमजोर होगी।

यासीन मलिक ने राजनीति का विद्रूप चेहरा सामने ला दिया

राजेश कुमार पासी

जब 2014 में नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने तो वो सिर्फ एक सत्ता परिवर्तन था ।

दस साल तक लगातार कांग्रेस के नेतृत्व वाला यूपीए गठबंधन शासन कर रहा था जिस पर लाखों करोड़ों के भ्रष्टाचार का आरोप लगा हुआ था । देश की जनता यूपीए से छुटकारा चाहती थी, इसलिए भाजपा को पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने का मौका दिया । यह कोई सामान्य बात नहीं थी क्योंकि 1984 के बाद किसी भी पार्टी को देश की जनता ने बहुमत नहीं दिया था । 1984 के बाद बनी सभी सरकारें अल्पमत की सरकारें थी । नरेंद्र मोदी के नए चेहरे में जनता को नई उम्मीदें नजर आई, इसलिए यह मौका उनको दिया गया ।

पिछले 11 सालों में मोदी सरकार के शासन ने बता दिया है कि 2014 में सिर्फ सत्ता परिवर्तन नहीं हुआ था बल्कि देश में व्यवस्था परिवर्तन हुआ था । पूरे देश में आतंकवाद फैला हुआ था, आतंकवादी कभी भी किसी भी शहर में बम फोड़ सकते थे, गोलियां चला सकते थे । देश का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा नक्सलवाद से ग्रस्त था और उसका दायरा लगातार बढ़ता जा रहा था । आज मोदी सरकार ने आतंकवाद को सिर्फ कश्मीर तक सीमित कर दिया है और नक्सलवाद को 31 मार्च, 2026 तक पूरी तरह से मिटाने का लक्ष्य तय कर दिया है । अब सवाल उठता है कि क्या कारण थे, जिनकी वजह से देश में आतंकवाद और नक्सलवाद बढ़ता जा रहा था । सरकार की कोशिशें बेकार जा रही थी । धीरे-धीरे देश को समझ आ रहा है कि देश में एक ऐसा इको सिस्टम था जो आतंकवाद और नक्सलवाद को पालने-पोसने का काम कर रहा था । सरकार ने इनके सामने हथियार डाल दिया था और सरकार इनके साथ समझौता करके काम कर रही थी । 1990 से आतंकवाद का बड़ा चेहरा रहे यासीन मलिक ने दिल्ली हाईकोर्ट में एक हलफनामा देकर कहा है कि 2006 में तत्कालीन सरकार के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने उसे पाकिस्तान में लश्कर-ए-तैयबा के मुखिया हाफिज सईद से मुलाकात करने के लिए कहा था । जब वो हाफिज सईद से मिलकर मनमोहन सिंह जी के पास गया तो उन्होंने उसका धन्यवाद किया और आभार जताया था ।

यासीन मलिक वो आतंकवादी है जिसने श्रीनगर में चार वायुसेना अधिकारियों की गोली मारकर हत्या कर दी थी । कश्मीरी पंडितों के कश्मीर छोड़ने में यासीन मलिक का डर भी एक बड़ा कारण था । उस पर तत्कालीन गृहमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी रूबिया सईद के अपहरण का भी आरोप है । लंबे समय तक जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के नेता के रूप में वो कश्मीर में आतंकवाद का एक बड़ा चेहरा बना रहा और पाकिस्तान के आतंकियों से उसके गहरे संबंध थे । वो अब टेरर फंडिंग मामले में जेल में बंद है । उसे जेल में डालने का काम भी मोदी सरकार ने ही किया है । उसने दावा किया है कि 2005 में पाकिस्तान में आए बड़े भूकंप के बाद जब वो पाकिस्तान जाने की तैयारी कर रहा था तो खुफिया ब्यूरो (आईबी) के तत्कालीन विशेष निदेशक वीके जोशी ने दिल्ली में उससे मुलाकात की थी । उसका कहना है कि जोशी ने उसे कहा था कि यह मौका सिर्फ पाकिस्तानी नेताओं से बात करने का नहीं है, बल्कि हाफिज सईद जैसे आतंकी सरगनाओं से भी बातचीत करने का है । उसका उद्देश्य प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की शांति पहल को आगे बढ़ाने का था । उसका कहना है कि उसे साफ तौर पर समझाया गया कि पाकिस्तान के साथ बातचीत तभी असरदार हो सकती है जब आतंकवादी संगठनों के नेताओं को भी इसमें शामिल किया जाए । उसने दावा किया है कि सरकार के इसी निर्देश के कारण उसने पाकिस्तान में आयोजित एक कार्यक्रम में हाफिज सईद और यूनाइटेड जिहाद काउंसिल के अन्य नेताओं से मिलने की बात मानी थी ।

अपने हलफनामे में मलिक ने बताया है कि कैसे सईद ने जिहादी समूहों का एक सम्मेलन आयोजित किया जहां सईद ने भाषण दिया और आतंकवादियों से शांति अपनाने का आग्रह किया

यासीन मलिक वो आतंकवादी है जिसने श्रीनगर में चार वायुसेना अधिकारियों की गोली मारकर हत्या कर दी थी । कश्मीरी पंडितों के कश्मीर छोड़ने में यासीन मलिक का डर भी एक बड़ा कारण था । उस पर तत्कालीन गृहमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी रूबिया सईद के अपहरण का भी आरोप है ।

। उसका कहना है कि उसकी यही मुलाकात बाद में विवाद का विषय बन गई क्योंकि इसे उसकी पाकिस्तानी आतंकवादी संगठनों से निकटता के सबूत के रूप में पेश किया गया है । अपने हलफनामे में उसने इस घटनाक्रम को 'एकदम विश्वासघात' बताया है । उसने दावा किया है कि आईबी से बातचीत के बाद उसे सीधे प्रधानमंत्री को जानकारी देने के लिए कहा गया था । वो राजधानी में तत्कालीन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एमके नारायणन की मौजूदगी में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से मिला था । उसका दावा है कि उस मुलाकात में मनमोहन सिंह ने व्यक्तिगत रूप से उसे पाकिस्तान के सबसे कट्टरपंथी तत्वों से निपटने में उसके द्वारा किए गये प्रयास, धैर्य और समर्पण के लिए धन्यवाद दिया था ।

उसने जो दावा किया है, उसकी गवाह वो तस्वीर भी है जो सोशल मीडिया में घूमती रहती है जिसमें वो प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ मुलाकात करता हुआ दिखाई दिया था । उसका दावा है कि 1990 में उसकी गिरफ्तारी के बाद वी.पी.सिंह, चंद्रशेखर, नरसिम्हा राव, एचडी देवगौड़ा, इंद्र कुमार गुजराल, अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह के नेतृत्व में लगातार 6 सरकारों ने उससे सक्रिय रूप से संपर्क किया । अब सवाल उठता है कि अगर उसका दावा सही है तो भारत की शांति वार्ताओं में उसके जैसे आतंकवादी को साथ क्यों लिया गया । कई बार गुप्तचर एजेंसियां ऐसे लोगों का इस्तेमाल करती हैं लेकिन प्रधानमंत्री के स्तर पर ऐसे लोगों का इस्तेमाल कभी नहीं किया जाता । उसका यह दावा बेहद खतरनाक है कि दुनिया के सबसे वांछित आतंकवादियों में शामिल में से एक के साथ बैठक करने के लिए प्रधानमंत्री ने उसका आभार प्रकट किया । क्या तत्कालीन सरकार आतंकवादियों के सामने हथियार डाल चुकी थी । शांति का प्रयास अच्छी बात है लेकिन इस प्रयास का नतीजा हमें दो साल बाद 26/11 के मुंबई हमले के रूप में देखने को मिला था ।

सवाल तो यह भी उठता है कि क्या सरकार की इन्हीं कमजोरियों के कारण आतंकवादियों और उनके आका पाकिस्तान के हौसले इतने बुलंद थे कि वो भारत में जहां चाहे हमला कर सकते थे । क्या सरकार मान चुकी थी कि वो आतंकवादियों से नहीं निपट सकती, इसलिए उनसे शांति का रास्ता अपनाने का अनुरोध किया जा रहा था । कांग्रेस को जवाब देना चाहिए कि वो आतंकवादियों को शांति के रास्ते पर लाने के लिए क्या देने वाली थी । आतंकवादियों का उद्देश्य तो कश्मीर को भारत से अलग करना था, तो क्या सरकार इस पर विचार कर रही थी । सवाल यह है कि जब केन्द्र सरकार ही आतंकवादियों से बातचीत कर रही थी तो आतंकवाद से कौन लड़ रहा था । यासीन मलिक के दावे से यह लगता है कि आतंकवादियों के खिलाफ सरकार कार्यवाही करने के मूड में नहीं थी । मोदी सरकार के आने के बाद ही आतंकवादियों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही शुरू हुई है । मोदी ने खुद तो बंदूक उठाकर आतंकवादियों का देश से सफाया नहीं किया है । देश को आतंकवादियों से छुटकारा हमारे देश की खुफिया एजेंसियों और सैन्य बलों ने ही दिलाया है । कश्मीर में भी हमारी सुरक्षा एजेंसियां आतंकवादियों का मुकाबला कर रही हैं । जो काम मोदी सरकार के कार्यकाल के दौरान हुआ है, वो काम पिछली सरकारों के दौरान क्यों नहीं हो पाया । हमारी खुफिया एजेंसियां वही हैं और हमारी सुरक्षा एजेंसियां भी वही हैं, सिर्फ सरकार बदली है । इसका मतलब साफ है कि पहले सरकार की नीयत आतंकवादियों को खत्म करने की नहीं थी ।

आज भी कश्मीर में सरकार आतंकवाद से लड़ रही है और उसके आका पाकिस्तान से भी लड़ रही है । पहले सर्जिकल स्ट्राइक, फिर एयर स्ट्राइक और अब ऑपरेशन सिंदूर करके पाकिस्तान को भारत में आतंकवाद फैलाने के लिए सजा दी गई है । पहलगाम हमले के बाद देश का विपक्ष मोदी सरकार पर सवाल खड़े कर रहा था कि आतंकवादी हमला कैसे हो गया जबकि एक समय उसी के शासन में पूरे देश में आतंकवादी हमले होते थे । पुलवामा हमले पर सवाल किया जाता है कि आरडीएक्स कैसे आया था जबकि पहले पूरे भारत में आरडीएक्स से हमले होते थे । राहुल गांधी के गुरु सैम पित्रोदा ने कहा है कि उन्हें पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल घर जैसे लगते हैं और सरकार को सलाह दी है कि भारत को पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध रखने चाहिए । वास्तव में उन्होंने कांग्रेस की विचारधारा को देश के सामने रखा है । जो पाकिस्तान अभी भी भारत पर आतंकवादी हमले करने की साजिशें कर रहा है और देश में उसके खिलाफ गुस्सा भरा हुआ है, उसे वो अपना घर बता रहे हैं । ऑपरेशन सिंदूर में तबाह हुए आतंकवादी ठिकानों को वो दोबारा तैयार कर रहा है और नए आतंकियों की भर्ती की जा रही है । ऐसा लग रहा है कि भारत सरकार जल्दी ही उसके खिलाफ बड़ी कार्यवाही कर सकती है ।

जहां मोदी सरकार देश में शांति लाने का प्रयास कर रही है तो दूसरी तरफ कांग्रेस के नेता राहुल गांधी देश को नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसी अराजकता में ले जाने के लिए युवाओं को भड़का रहे हैं । चुनाव आयोग मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण कर रहा है जिसके कारण बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों को मतदाता सूची से बाहर किये जाने का खतरा पैदा हो गया है । राहुल गांधी घुसपैठियों को बचाने के लिए चुनाव आयोग के खिलाफ बड़ी मुहिम चला रहे हैं । यह सब वो मतदाता सूचियों में गड़बड़ी की आड़ में कर रहे हैं जबकि चुनाव आयोग मतदाता सूची की गड़बड़ी को ठीक करने के लिए ही गहन पुनरीक्षण कर रहा है । यासीन मलिक के दावे बता रहे हैं कि देशविरोधी इको सिस्टम मोदी सरकार के आने से डरा हुआ है, इसलिए मोदी सरकार के खिलाफ साजिशों का दौर चल रहा है । देश में ऐसा क्या हो रहा है, ये जनता को समझने की जरूरत है ।

सांझा पर्व ,आँगन में अचानक त्योहार का उल्लास उतर आता है

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

सांझा पर्व भारतीय लोकजीवन और संस्कृति का ऐसा उत्सव है जो केवल पूजा या अनुष्ठान भर नहीं है, बल्कि उसमें समाज, संस्कार और सामूहिकता के असली स्वर गूँजते हैं । यह पर्व भारतीय ग्रामीण अंचलों में बड़े उत्साह से मनाया जाता है और विशेषकर बालिकाओं की भागीदारी इसे जीवंत और भावपूर्ण बना देती है । इसका स्वरूप अत्यंत सरल होते हुए भी गहरे प्रतीकात्मक अर्थ समेटे है । जैसे ही भाद्रपद माह की संध्या आती है और सूरज आकाश में डूब जाता है, बच्चियाँ अपने घर-आँगन की मिट्टी को लीपकर वहाँ गोबर या मिट्टी से संध्या देवी का प्रतीक "सांझा" रचती हैं, उसके चारों ओर फूल-पत्तियाँ सजाती हैं, दीपक जलाती हैं । इस छोटे-से आँगन में अचानक त्योहार का उल्लास उतर आता है । बच्चियाँ एक समूह बनाकर उसके चारों ओर बैठ जाती हैं और पारंपरिक लोकगीत गाने लगती हैं । यही गीत सांझा पर्व की आत्मा हैं, इन गीतों में कहीं भोलेपन की मासूम पुकार है, कहीं संध्या देवता को अपने घर लौटने का आग्रह है, तो कहीं स्त्री-शक्ति और श्रृंगार के सांकेतिक बिंब हैं । सबसे प्रसिद्ध गीत है—"सांझा तू अपने घर जा, थारी बाई मारेगी, तू अपने घर जा ।" संध्या के समय की वह पवित्रता इन मासूम आवाजों में झलकती है और गाँव के मुकाम तक गूंज उठती है । दूसरे गीतों में सांझा की सवारी, रूप-श्रृंगार और ग्रामीण सौंदर्य का चित्रण मिलता है, जैसे—"छोटी-सी गाड़ी रुलकती जाय, जिमें बैठी सांझा बाई, घाघरो घमकाता जाय, चूडलो चमकाता जाय, चूंदड़ी चलकाता जाय, बाईजी की नथनी झोला खाय, देखो ब पियर जाये ।" इस गीत में जहाँ सांझा देवी की शोभायात्रा का रूप उभरता है, वहीं बालिकाओं की कल्पना शक्ति भी प्रकट होती है । एक अन्य गीत श्रृंगारिक है जिसमें बालिकाएँ सांझा से श्रृंगार

का आग्रह करती हैं—"काजल टीकी लो भई, काजल टीकी लो, काजल टीकी लय ने म्हारी सांझा बाई ने दो ।" उदाहरणस्वरूप, ग्रामीण जीवन और पारिवारिक बंधन का चित्रण भी गीतों में मिलता है"म्हारा अंगना में मेंदी को झाड़, दो-दो पत्ती चुनती थी, गाय को खिलाती थी, गाय ने दिया दूध, दूध की बनाई खीर, खीर खिलाई संजा को, संजा ने दिया भाई, भाई की हुई सगाई, सगाई से आई भाभी, भाभी को हुई लड़की, लड़की ने मांडी संजा ।" यह गीत दर्शाता है कि कैसे साधारण घरेलू प्रसंग भी लोकगीतों में जीवन का हिस्सा बनकर परंपरा को टिकाए रखते हैं । इसी तरह हरियाली और जीवन चक्र की प्रतीकात्मकता से जुड़ा गीत गाया जाता है, "सांझा तो मांगें हरयो हरयो गोबर, कां से लउ बई हरियो हरियो गोबर, सांझा का वीरा जी माली घरे जाये, के ले बई सांझा हरयो हरयो गोबर ।" इन गीतों में वृक्ष, पशु, परिजन, स्त्रियों का श्रृंगार, बच्चों की कल्पनाएँ सब मिलकर सांस्कृतिक एकता का विहंगम रूप प्रस्तुत करते हैं । सांझा पर्व का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक संदर्भों में भी गहरा है । जब बच्चियाँ गीत गाती हैं, तो बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ उन्हें सिखाती हैं, आशिष देती हैं और इस परंपरा को आगे बढ़ाती हैं । छोटे गाँवों में यह अकेलापन मिटाकर समुदाय को जोड़ने का अवसर भी बन जाता है । यह पर्व हमें यह अनुभव कराता है कि भारतीय समाज में छोटी-सी परंपरा भी जीवन को कितनी गहराई और आत्मीयता से सींचती है । सांझा केवल संध्या की देवता की आराधना ही नहीं है, बल्कि लोकसंस्कृति की वह कड़ी है जो हमें हमारी जड़ों से बाँधती है । भाद्रपद माह, जिसमें बड़े पर्व जैसे जन्माष्टमी और गणेश चतुर्थी आते हैं, उसमें सांझा पर्व का उल्लास यह बताता है कि हमारे धार्मिक और लोक जीवन में कोई विभाजन नहीं है; वे दोनों एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं । संध्या के समय गूँजते ये मासूम गीत, दीपक की मृदु लौ, मिट्टी की सुवास और सामूहिक पूजा का दृश्य यह सिखाता है कि संस्कृति केवल ग्रंथों में नहीं, बल्कि जीवन के सहज और सामूहिक अनुभवों में बसती है । सांझा पर्व इसीलिए भारतीय संस्कृति का जीवंत आयाम है, जहाँ संध्या की पवित्रता, बाल्यकाल की मासूमियत, स्त्री-शक्ति की प्रतीकात्मकता और सामूहिक जीवन की ऊर्जा एक साथ गूँजती है और हमें यह स्मरण कराती है कि लोकधरोहर ही वह धागा है जो हमें हमारी जड़ों से जोड़े रखता है ।

श्रीरामलीला महोत्सव गंजडुण्डवारा सत्र 2025 का उदघाटनकिया गया

गंजडुंडवारा

श्रीरामलीला महोत्सव गंजडुण्डवारा सत्र 2025 का उदघाटन नगर के प्रमुख समाजसेवी श्री अमित प्रकाश महाजन महाजन के द्वारा किया गया। एवं नगर के प्रमुख समाजसेवी श्री विनय भूषण गुप्ता जी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर श्रीरामलीला के मंचन का शुभारंभ किया गया। इस विशेष अवसर पर कमेटी के अध्यक्ष श्री अजय गुप्ता जी, महामंत्री श्री पंकज सोलंकी जी सहित कमेटी के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं कमेटी के सभी सदस्य उपस्थित रहे।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने शक्ति भवन में की बिजली की विभागीय समीक्षा बैठक

ऊर्जा मंत्री ने 50% से ज्यादा चोरी-लाइन लॉस वाले फीडर पर प्राथमिकता से स्मार्ट मीटर लगाने के दिए निर्देश

ईमानदार उपभोक्ताओं की सेवा में कोई कमी न हो, विजिलेंस के नाम पर उनका उत्पीड़न कदापि न हो

सभी फीडरों पर आवश्यकतानुसार जले हुए ट्रांसफार्मर तुरंत बदले जाएं

चोरी रोकने हेतु विजिलेंस एक्टिविटी को टार्गेटेड तथा प्रभावशाली बनाने पर जोर

ज़्यादा लाइन नुकसान वाले फ़ीडरों पर ही हो विजिलेंस की कार्यवाही, अपनी मर्जी से विजिलेंस टीम कहीं भी नहीं करेगी छापेमारी

छोटे उपभोक्ताओं एवं गरीब आदमियों को न किया जाए परेशान

नियमित बिल भरने वाले उपभोक्ताओं को बिल्कुल भी ना हो परेशानी

नवरात्रि, दशहरा एवं दीपावली आदि त्योहारों के दृष्टिगत निर्बाध विद्युत आपूर्ति एवं अन्य सभी आवश्यक तैयारी पूर्व से ही सुनिश्चित की जाएः- ए.के.शर्मा

भुवनेश्वर-कोणार्क रेलवे लाइन के अंतिम स्थान सर्वेक्षण को मंजूरी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वरः बहुप्रतीक्षित भुवनेश्वर-कोणार्क रेलवे परियोजना को लेकर नई उम्मीदें जगी हैं । इस परियोजना के लिए अंतिम स्थान सर्वेक्षण जल्द ही शुरू होने की संभावना है । केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस परियोजना के संबंध में एक पत्र जारी किया है । उपमुख्यमंत्री पार्वती परिदा ने सोशल मीडिया के माध्यम से रेल मंत्री के पत्र की जानकारी दी है ।श्रीमती परिदा ने कहा, मैं माननीय केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव जी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने भुवनेश्वर से पुरी जिले के नीमापारा और गोप होते हुए कोणार्क तक नई रेलवे लाइन के लिए अंतिम स्थान सर्वेक्षण को मंजूरी दी है । यह बहुप्रतीक्षित रेलवे परियोजना न केवल राजधानी और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल कोणार्क के बीच रेल संपर्क प्रदान करेगी । यह मेरे निर्वाचन क्षेत्र के नीमापारा और गोप के लोगों के लिए भी एक वरदान साबित होगी ।

पूर्त मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने विधानसभा में बताया कि त्रिशूलिया में दूसरा पुल बनाया जाएगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : ट्विन सिटीज़ में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए राज्य सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है । पूर्त मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने विधानसभा में बताया कि त्रिशूलिया में दूसरा पुल बनाया जाएगा । मंत्री ने बताया कि इसके लिए 297 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं । टेंडर प्रक्रिया चल रही है और निर्माण कार्य 36 महीनों में पूरा हो जाएगा ।यह पुल मौजूदा नेताजी सुभाष चंद्र बोस पुल के समानांतर बनेगा, जिसकी लंबाई लगभग 3.127 किलोमीटर होगी । इसमें त्रिशूलिया और न्यायिक अकादमी की पहुँच सड़कें भी शामिल हैं । इस परियोजना में जल निकासी लेन और बॉक्स कल्वर्ट्स भी शामिल हैं । पूरा होने के बाद, यह चार लेन वाला पुल वुडी ब्रिज पर बढ़ते यातायात की भीड़भाड़ को संभाल सकेगा । इससे दोनों शहरों के बीच यातायात भी आसान होने की उम्मीद है ।यह पुल कटक-भुवनेश्वर कॉरिडोर को मज़बूत करने की एक बड़ी योजना का हिस्सा है । मंत्री ने अपने बयान में बताया कि न्यायिक अकादमी रोड से त्रिशूलिया तक पहुँच मार्ग को चार लेन का और न्यायिक अकादमी रोड से जोबरा तक पहुँच मार्ग को छह लेन का बनाने का काम भी प्रगति पर है ।

शारीरिक,मानसिक स्वास्थ्य में संतुलन का समग्र विज्ञान

विजय गर्ग

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण में स्वास्थ्य का मूल्य केवल शारीरिक स्थिति तक सीमित नहीं है। सुखी जीवन का अर्थ है शरीर और मन का संतुलन, इंद्रियों का सम्यक कार्य, उत्साह, तेज और आत्मबल से युक्त पूर्ण व्यक्तित्व, समाज में सम्मान और उत्तरदायित्व का निर्वाह। इसके विपरीत दुखी जीवन रोग, मानसिक असंतुलन और सामाजिक अस्थिरता से ग्रस्त माना गया है। आयुर्वेद धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय का मार्गदर्शक भी है।

आयुर्वेद केवल रोगों के उपचार की पद्धति नहीं है, अपितु यह जीवन, स्वास्थ्य और संतुलन का एक समग्र विज्ञान है। यह मनुष्य को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर स्वस्थ रखने का मार्ग दिखाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में आयुर्वेद का ज्ञान बीज रूप में उपलब्ध है। जबकि चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और वाग्भट का अष्टांगहृदय इसके प्रमुख ग्रंथ हैं। आयुर्वेद का मूल उद्देश्य जीवन की गुणवत्ता, स्वास्थ्य और दीर्घायु को सुनिश्चित करना है। उपचार और जीवनशैली सुधार के लिए यह व्यक्ति-केंद्रित चिकित्सा को महत्व देता है।

त्रिदोष और त्रिगुण की भूमिका

आयुर्वेद में प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति जन्म से निर्धारित होती है, जो त्रिदोष वात, पित्त और कफ के अनुपात पर आधारित होती है। यह प्रकृति व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और रोग-संवेदनशीलता की मूलभूत विशेषताओं को निर्धारित करती है। संतुलित दोष स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं, जबकि असंतुलन रोग उत्पन्न करता है। इसी प्रकार त्रिगुण सत्व, रज और तम मानसिक प्रवृत्ति को नियंत्रित करते हैं।

सम्पूर्ण जीवन की ओर आयुर्वेद

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण में स्वास्थ्य का मूल्य केवल शारीरिक स्थिति तक सीमित नहीं है। सुखी जीवन का अर्थ है शरीर और मन का संतुलन, इंद्रियों का सम्यक कार्य, उत्साह, तेज और आत्मबल से युक्त पूर्ण व्यक्तित्व, समाज में सम्मान और उत्तरदायित्व का निर्वाह। इसके विपरीत दुखी जीवन रोग, मानसिक असंतुलन और सामाजिक अस्थिरता से ग्रस्त माना गया है। आयुर्वेद धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय का मार्गदर्शक भी है। धर्म नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देता है, अर्थ आर्थिक समृद्धि का आधार है, काम जीवन की इच्छाओं और संतोष का मार्ग है तथा मोक्ष आत्मशांति और पूर्णता की दिशा दिखाता है। इस प्रकार आयुर्वेद जीवन को पूर्णता की ओर ले जाने वाला विज्ञान है।

औषधियां और वैज्ञानिक मान्यता

आयुर्वेदिक औषधियां केवल चिकित्सीय पदार्थों पर आधारित नहीं होतीं, अपितु उनका उद्देश्य स्वास्थ्य का संरक्षण और जीवन-शक्ति का पोषण भी है। अरिष्ट, आसव, अवलेह, चूर्ण, तैल, घृत और क्वाथ जैसी औषधियां सुरक्षित और प्रभावी मानी जाती हैं। आज के युग में इनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु सक्रिय घटकों की पहचान, शुद्धता और स्थिरता परीक्षण, क्रोमैटोग्राफिक फिंगरप्रिंटिंग और फार्माकोलॉजिकल मूल्यांकन आवश्यक हैं। यह प्रक्रियाएं औषधियों की प्रामाणिकता और चिकित्सीय प्रभावकारिता को विश्व स्तर पर मान्यता दिलाने में सहायक हैं।

आयुर्वेद की व्यावहारिक विशेषताएं

चरक ने कहा है कि हितकर आहार करने वाला और इंद्रियों पर संयम रखने वाला व्यक्ति छत्तीस हजार रात्रियां अर्थात सौ वर्ष जीवित रहता है। जिस समय प्रयोगशाला परीक्षण जैसे शब्द का अस्तित्व भी नहीं था, उस समय आचार्यों ने रक्ताल्पता के लिए लौह योग का निर्देश दिया और बताया कि रक्तवर्धन में लौह से श्रेष्ठ कोई द्रव्य नहीं है। डायबिटीज का निदान बिना प्रयोगशाला के किया गया और उसके लिए औषधियां बताई गईं। बुखार में गर्म पानी, उदर रोग में ऊंटनी का दूध, यक्ष्मा में बकरी का दूध और नींद लाने में भैंस का दूध का प्रयोग - ऐसे निर्देश आयुर्वेद की अद्वितीय व्यावहारिकता दर्शाते हैं। तेल, घी और जल से बनी सब्जियां हितकर हैं, किंतु पुनः गर्म करने पर विष के समान प्रभावकारी हो जाती हैं। त्रिफला सुबह जल के साथ लेने पर मोटापा घटाता है और रात को शहद के साथ लेने पर नेत्रों के लिए लाभकारी होता है। यह औषधियों की बहुप्रभाविता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

आपातकालीन चिकित्सा और विशिष्ट ज्ञान

विष का प्रभाव ऐसा है जैसे जलता हुआ घर, जिसे तुरंत बचाने का प्रयास करना चाहिए। यानी उसी तरह विष की चिकित्सा के प्रति प्रयत्नशील रहना चाहिए। जैसे कमलपत्र पर जल नहीं ठहरता उसी तरह स्वर्ण सेवन करने वाले पर विष का प्रभाव नहीं ठहरता। आत्ययिक रोग (अचानक आया गंभीर रोग) जैसे हिक्का और श्वास रोग विष की भांति तुरंत फैलते हैं। गर्भावस्था में सावधानी का निर्देश समझाने के लिए कहा है कि जैसे किसी को तेल से भरे पात्र को बिना हिलाए ले कर जाना होता है उसी तरह गर्भवती की देखभाल करनी चाहिए।

आयुर्वेद और नीम हकीम

ग्रंथों में नीम हकीम के खतरे को स्पष्ट किया गया है। कहा गया है कि अकुशल शासन के कारण ही नीम हकीम पनपते हैं। इस प्रकार की प्रक्रिया को तांबे का विष पीने से भी अधिक घातक बताया गया है। यह भी कहा गया है कि इन्द्र के वज्र गिरने से कोई बच सकता है लेकिन नीम हकीम से चिकित्सा कराने वाला व्यक्ति नहीं बचता।

काल और आहार का महत्व

आयुर्वेद ने नया अनाज रोगकारक बताया है। एक वर्ष पुराना धान्य हितकारी है, जबकि दो वर्ष से अधिक पुराना शक्तिहीन हो जाता है। गुड़ पुराना होने पर बवासीर में लाभकारी है और पुराना घी मानसिक रोगों का नाश करता है। भोजन से पहले घी का सेवन पत्थरी रोग में लाभ पहुंचाता है जबकि श्वास, कास, सिरदर्द व राजयक्ष्मा में भोजन के बाद घी का पान करने का निर्देश है।

अविचल सिद्धांत

आयुर्वेद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके सिद्धांत कभी बदलते नहीं। च्यवनप्राश पहले भी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता था, आज भी बढ़ाता है और भविष्य में भी बढ़ाएगा। आंवला और हल्दी का मिश्रण डायबिटीज में लाभकारी था, है और रहेगा। रात्रि में दही का सेवन पहले भी निषिद्ध था और आज भी है।

निद्रा और मानसिक स्वास्थ्य

आयुर्वेद ने निद्रा को जीवन का मूल आधार माना है। सुख-दुःख, पुष्टता-कृशता, बल-अबल, ज्ञान-अज्ञान, यहां तक कि जीवन और मृत्यु भी निद्रा पर ही निर्भर हैं। यदि निद्रा का सेवन असमय, अनुचित मात्रा में या अत्यधिक किया जाए अथवा बिल्कुल न किया जाए, तो यह सुखी जीवन का नाश कर देती है और मृत्यु के समान घातक सिद्ध होती है। इसके विपरीत, समयानुकूल, संतुलित और नियमित निद्रा शरीर और मन दोनों को सुखी, स्वस्थ और दीर्घायु बनाती है। यह बल, प्रजनन-शक्ति, स्मरण-शक्ति और जीवन-ऊर्जा की जननी है। आयुर्वेद केवल औषधियों और उपचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन की समग्र दृष्टि है। आयुर्वेद दिवस पर हमें यह स्मरण करना चाहिए कि यह परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है। वैज्ञानिक प्रमाणीकरण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से यह संपूर्ण मानवता के लिए स्थायी और प्रभावी स्वास्थ्य समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अपनी आईडी को ऑनलाइन सुरक्षित रखना

विजय गर्ग

पहचान की चोरी और धोखाधड़ी को रोकने के लिए आपकी आईडी को ऑनलाइन सुरक्षित रखना आवश्यक है। आपकी व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित करने में आपकी सहायता करने के लिए यहां कुछ प्रमुख प्रथाएं दी गई हैं: 1. अपने पासवर्ड और प्रमाणीकरण को मजबूत करें

मजबूत, अद्वितीय पासवर्ड बनाएं। अपरकेस और लोअरकेस अक्षर, संख्या और विशेष प्रतीकों सहित कम से कम 12 वर्णों के संयोजन का उपयोग करें। अपने नाम, जन्मदिन या पालतू जानवर के नाम जैसी व्यक्तिगत जानकारी का उपयोग करने से बचें।

एक पासवर्ड मैनेजर का उपयोग करें। हर खाते के लिए अद्वितीय, जटिल पासवर्ड याद रखना मुश्किल है। एक पासवर्ड प्रबंधक आपके पासवर्ड को सुरक्षित रूप से संग्रहीत कर सकता है और यहां तक कि आपके लिए नए उत्पन्न कर सकता है।

दो-कारक प्रमाणीकरण सक्षम करें। यह सुरक्षा की एक अतिरिक्त परत जोड़ता है। यहां तक कि अगर किसी हैकर को आपका पासवर्ड मिलता है, तो वे दूसरे सत्यापन कारक के बिना आपके खाते तक नहीं पहुंच सकते हैं, जैसे कि आपके फोन या ईमेल पर भेजा गया कोड। 2. जानकारी साझा करने के बारे में सतर्क रहें

जो आप सोशल मीडिया पर साझा करते हैं उसे सीमित करें। आपके द्वारा पोस्ट किए गए व्यक्तिगत विवरणों के प्रति सचेत रहें, क्योंकि उनका उपयोग साइबर अपराधियों द्वारा किया जा सकता है। अपना पता, फोन नंबर या अन्य संवेदनशील जानकारी साझा करने से बचें।

गोपनीयता सेटिंग्स की जाँच करें। सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफार्मों पर, सुनिश्चित करें कि आपकी गोपनीयता सेटिंग्स को सीमित करने के लिए कॉन्फ़िगर किया गया है जो आपकी पोस्ट और व्यक्तिगत जानकारी देख सकते हैं।

ऑनलाइन क्विज़ से सावधान रहें। सोशल मीडिया पर कई क्विज़ ऐसी जानकारी मांगते हैं जिनका उपयोग सुरक्षा प्रश्नों के उत्तर देने के लिए किया जा सकता है, जैसे कि आपकी माँ का पहला नाम या आपके पहले पालतू जानवर का नाम। 3. अपने उपकरणों और नेटवर्क को सुरक्षित करें

सॉफ्टवेयर अपडेट रखें। आपके ऑपरेटिंग सिस्टम और अनुप्रयोगों के अपडेट में अक्सर महत्वपूर्ण सुरक्षा पैच शामिल होते हैं जो नए खतरों से बचाते हैं।

सुरक्षित नेटवर्क का उपयोग करें। सार्वजनिक वाई-फाई का उपयोग करते समय सतर्क रहें। इन नेटवर्क में अक्सर कमजोर सुरक्षा होती है, जिससे दूसरों के लिए आपके डेटा तक पहुंचना आसान हो जाता है। सार्वजनिक वाई-फाई से कनेक्ट होने पर क्रेडिट कार्ड नंबर जैसी संवेदनशील जानकारी दर्ज करने से बचें।

सुरक्षा सॉफ्टवेयर स्थापित करें। दुर्भावनापूर्ण कार्यक्रमों से बचाने के लिए अपने उपकरणों पर प्रतिष्ठित एंटीवायरस और एंटी-मैलवेयर सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें जो आपकी जानकारी चुरा सकते हैं। 4. फ़िशिंग और घोटाले के लिए बाहर देखो

वेबसाइट सुरक्षा सत्यापित करें। किसी भी व्यक्तिगत जानकारी को दर्ज करने से पहले, पैडलॉक आइकन की तलाश करें और सुनिश्चित करें कि वेबसाइट का पता ₹https₹ (₹s₹ सुरक्षित के लिए खड़ा है) से शुरू होता है।

फ़िशिंग प्रयासों को पहचानें। फ़िशिंग घोटालों में अक्सर ईमेल, ग्रंथ या कॉल शामिल होते हैं जो एक वैध कंपनी या सरकारी एजेंसी से प्रतीत होते हैं। वे आपको व्यक्तिगत जानकारी प्रकट करने में छल करने की कोशिश करते हैं। वर्तनी त्रुटियों, असामान्य ईमेल पते या तात्कालिकता की भावना जैसे संकेतों की तलाश करें।

संदिग्ध लिंक या अटैचमेंट पर क्लिक न करें। यदि कोई ईमेल या संदेश संदिग्ध लगता है, तो किसी भी लिंक पर क्लिक न करें या किसी भी अनुलग्नक को डाउनलोड न करें। इसके बजाय, लॉग इन या उनसे संपर्क करने के लिए सीधे कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं। 5. अपने डिजिटल पदचिह्न की निगरानी करें

नियमित रूप से अपने खातों की जांच करें। किसी भी संदिग्ध लेनदेन के लिए अपने बैंक और क्रेडिट कार्ड के बयानों पर नजर रखें।

अपनी क्रेडिट रिपोर्ट की निगरानी करें। आप अपने नाम पर खोले गए किसी भी नए खाते या क्रेडिट की लाइनों की जांच करने के लिए प्रत्येक प्रमुख क्रेडिट ब्यूरो से अपनी क्रेडिट रिपोर्ट की एक मुफ्त प्रति प्राप्त कर सकते हैं। आप नए खातों को खोलने से रोकने के लिए क्रेडिट फ्रीज रखने पर भी विचार कर सकते हैं। संवेदनशील दस्तावेज। व्यक्तिगत जानकारी के साथ पुराने बिलों, बैंक स्टेटमेंट या अन्य दस्तावेजों का निपटान करते समय, शारीरिक पहचान की चोरी को रोकने के लिए उन्हें साझा करना सुनिश्चित करें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर

ऑस्कर की दौड़ में भारत की नई पहचान—'होमबाउंड'

[जब गाँवों की अनसुनी आवाज़ बनी ऑस्कर की दावेदार]

एक ऐसी कहानी जो दिल को छू ले, जो समाज की गहराइयों में उतरे और इंसानियत की गर्माहट को सामने लाए—नीरज घेवान की फिल्म 'होमबाउंड' ने यही कर दिखाया है। यह फिल्म न केवल भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक जटिलताओं को उजागर करती है, बल्कि इसे 2026 के एकेडमी अवॉर्ड्स में 'बेस्ट इंटरनेशनल फीचर' श्रेणी के लिए भारत की आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में चुना जाना इसके वैश्विक प्रभाव का प्रमाण है। कान फिल्म फेस्टिवल में नौ मिनट तक गूंजती तालियों ने इसकी कहानी की ताकत को पहले ही दुनिया के सामने रख दिया था। यह फिल्म न केवल सिनेमाई कला का नमूना है, बल्कि उन अनकही कहानियों का दर्पण है जो भारत के गाँवों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की सच्चाई को बयां करती हैं।

फिल्म की प्रेरणा न्यूयॉर्क टाइम्स में प्रकाशित पत्रकार बशारत पीर के लेख टेकिंग अमृत होम से मिली, जिसमें कोविड महामारी के दौरान प्रवासी मजदूरों की हृदयविदारक त्रासदी को उजागर किया गया—लाखों लोग बिना साधनों के, सैकड़ों-हजारों किलोमीटर पैदल चलकर अपने गाँवों की ओर लौटे। लेकिन नीरज के लिए इस कहानी का असली सार था एक मुस्लिम और एक दलित लड़के की बचपन की दोस्ती, जो सामाजिक और जातिगत बंधनों को तोड़कर इंसानियत की मिसाल बनती है। नीरज ने इस दोस्ती को फिल्म की आत्मा बनाकर, एक ऐसी सिनेमाई भाषा गढ़ी जो भावनाओं को गहराई से छूती है और सामाजिक संदेश को प्रभावशाली ढंग से सामने लाती है।

होमबाउंड की आत्मा में बसते हैं दो किरदार—मोहम्मद शोएब अली (ईशान खट्टर) और चंदन कुमार (विशाल जेठवा)—जो समाज की तथाकथित निचली पायदान से उठकर अपने सपनों के पीछे भागते हैं। दोनों का एक ही ख्वाब है: अपने राज्य की पुलिस फोर्स में शामिल होकर जातिगत और सामाजिक दीवारों को ध्वस्त करना और एक नई, सम्मानजनक पहचान गढ़ना। इन किरदारों के जरिए नीरज घेवान उन अनगिनत चेहरों की कहानी बुनते हैं, जो सदियों से भेदभाव, उपेक्षा और सामाजिक तिरस्कार का दंश झेलते आए हैं। जाह्नवी कपूर का किरदार, जो इन पुरुष किरदारों के साथ अपने रिश्तों और अनुभवों से कहानी को गहराई देता है, एक ऐसी स्त्री की आवाज बनता है जो अपने अस्तित्व को तलाशती है। यह फिल्म केवल एक कहानी नहीं, बल्कि समाज के हाशिए पर धकेल दिए गए लोगों का एक मार्मिक और सशक्त घोषणापत्र है, जो उनकी पीड़ा, संघर्ष और आशा को जीवंत करता है।

नीरज घेवान का निर्देशन हमेशा संवेदनशीलता और साहस का संगम रहा है। उनकी पहली फिल्म मसान ने 2015 में कान फिल्म फेस्टिवल के 'अन सर्टन रिगार्ड' खंड में प्रदर्शन के साथ 'प्रोमिसिंग फ्यूचर प्राइज' जीतकर विश्व सिनेमा में अपनी धाक जमाई थी। बनारस की पृष्ठभूमि में रची मसान ने प्रेम, दुख और जातिगत व्यवस्था की जटिलताओं को गहरी संवेदना के साथ उकेरा था, जहां विक्की कौशल ने गंगा किनारे शवों का दाह संस्कार करने वाले परिवार के एक युवा की पीड़ा को जीवंत किया। होमबाउंड उसी विरासत को आगे बढ़ाती है, लेकिन कोविड महामारी की अनिश्चितता और मानवीय संवेदनाओं को और गहराई से उजागर करती है। यह फिल्म सामाजिक संरचनाओं पर तीखे सवाल उठाती है और साथ ही मानवता की उस लौ को जलाए रखती है, जो विषम परिस्थितियों में भी उम्मीद की किरण बनकर उभरती है।

होमबाउंड ने 2025 के कान फिल्म फेस्टिवल में 'अन सर्टन रिगार्ड' खंड में प्रीमियर के साथ इतिहास रचा, जहां दर्शकों ने नौ मिनट तक तालियों से इसका स्वागत किया, जो नीरज घेवान की कहानी कहने की कला और फिल्म की गहनता का प्रमाण है। करण जौहर, ईशान खट्टर, विशाल जेठवा और जाह्नवी कपूर की मौजूदगी ने इसे दक्षिण एशियाई सिनेमा का ऐतिहासिक क्षण बनाया। हॉलीवुड दिग्गज मार्टिन स्कॉर्सेसे का कार्यकारी निर्माता के रूप में जुड़ना फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि रही। मसान से प्रभावित स्कॉर्सेसे ने होमबाउंड की आत्मा को गहराई से महसूस किया और इसके संपादन-निर्माण में अपनी विशेषज्ञता से इसे और निखारा।

होमबाउंड केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि एक जीवंत सामाजिक दस्तावेज है, जो भारत के ग्रामीण परिदृश्य की सर्दियों की गुनगुनी धूप-सी कोमल, फिर भी गहरी और प्रभावशाली है। उत्तर भारत के देहाती अंचलों में फिल्माई गई यह कृति मुस्लिम और दलित किरदारों की रोजमर्रा की जिंदगी, उनकी छोटी-छोटी खुशियों और अंतहीन संघर्षों को बारीकी से उकेरती है। नीरज घेवान का मानना है कि हिंदी सिनेमा में गाँवों की कहानियाँ और हाशिए के समुदायों की आवाजें अक्सर अनसुनी रह जाती हैं, जिन्हें आंकड़ों की ठंडी दुनिया में समेट दिया जाता है। होमबाउंड इन आंकड़ों को चेहरा देती है, उनकी कहानियों को आत्मा देती है। यह फिल्म दर्शकों के दिलों को भावनाओं के समंदर में डुबोती है, और साथ ही उन्हें सामाजिक असमानताओं पर गंभीर चिंतन के लिए प्रेरित करती है।

नीरज घेवान की दलित पहचान होमबाउंड में गहरी संवेदना के साथ उभरती है, जो उनकी कहानी कहने की आत्मा को और प्रखर बनाती है। उन्होंने साझा किया कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में वे शायद इकलौते दलित फिल्मकार हैं, जो कैमरे के पीछे और सामने दोनों जगह अपनी छाप छोड़ रहे हैं। यह पहचान उनके लिए एक जिम्मेदारी और प्रेरणा दोनों है। उनके बचपन के मुस्लिम दोस्त असगर की यादें इस फिल्म में अली और चंदन की दोस्ती के रूप में जीवंत हो उठती हैं, जो सामाजिक बंधनों को तोड़कर मानवीय रिश्तों की सच्चाई को उजागर करती है।

फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया को 2025 में ऑस्कर के लिए 24 फिल्मों के आवेदन मिले, जिनमें से होमबाउंड ने अपनी गहन कहानी और सांस्कृतिक गहराई के बल पर भारत का प्रतिनिधित्व हासिल किया। यह उपलब्धि भारतीय सिनेमा की वैश्विक ताकत का प्रतीक है। करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस ने इस फिल्म को भारत की आवाज बनने पर गर्व महसूस किया। नीरज के शब्दों में, होमबाउंड उनकी जड़ों और देश के प्रति प्रेम का प्रतीक है, जिसमें 'घर की खुशबू' समाई है।

होमबाउंड केवल सिनेमा नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का आह्वान है। यह कोविड महामारी की त्रासदी को उजागर करती है, साथ ही दिखाती है कि संकट जाति, वर्ग या धर्म की दीवारों को नहीं देखता। यह फिल्म हाशिए पर जीने वाले समुदायों की अनसुनी आवाजों को मंच देती है, दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ती है और सामाजिक बदलाव की उम्मीद जगाती है। नीरज घेवान की यह कृति भारतीय और वैश्विक सिनेमा में एक मील का पत्थर है, जो न केवल मनोरंजन करती है, बल्कि समाज को आईना दिखाती है और मानवता की नई परिभाषा गढ़ती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

अतिक्रमण संकट से पारिस्थितिकी, खाद्य और जल सुरक्षा को खतरा है

विजय गर्ग

1947 में भारत को आजादी मिलने के बाद से भारत के वन संसाधन हमेशा अतिक्रमण का शिकार रहे हैं। भूमि की भूख और राजनेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं की भागीदारी के कारण, जंगलों पर अतिक्रमण को विभिन्न समूहों द्वारा अलग-अलग रंग और स्पष्टीकरण दिया गया है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि भारत की खाद्य और जल सुरक्षा एक स्वस्थ वन संसाधन पर निर्भर है। वन भूमि अतिक्रमण एक पुराने पर्यावरणीय और सामाजिक-राजनीतिक संकट के रूप में विकसित हुआ है, जैव विविधता को नष्ट करना, जलवायु भेद्यता को तेज करना और आदिवासी और ग्रामीण गरीब समुदायों को विस्थापित करना। जनसंख्या के दबाव, आर्थिक मांगों और कमजोर संस्थागत ढांचे से प्रेरित, यह मुद्दा राजनीतिक कार्यों से काफी खराब हो गया है - लोकलुभावन नीतियों से लेकर नियामक कमजोर पड़ने तक - जो स्थायी संरक्षण पर अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं।

मार्च 2024 तक, राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार, 25 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 1.3 मिलियन हेक्टेयर से अधिक वन भूमि का एक आंकड़ा अतिक्रमण बना हुआ है। ये राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, असम, अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव, केरल, लक्षद्वीप, महाराष्ट्र, ओडिशा, पुडुचेरी, पंजाब, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड, सिक्किम, मध्य प्रदेश, मिजोरम और मणिपुर हैं। राज्य और केंद्र शासित प्रदेश अभी भी वन अतिक्रमण पर डेटा और विवरण प्रस्तुत करने के लिए बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, नागालैंड, दिल्ली, जम्मू और कश्मीर और लद्दाख हैं। असम (3,620.9 वर्ग किमी) और मध्य प्रदेश (5,460.9 वर्ग किमी) सबसे अधिक प्रभावित हैं, इसके बाद कर्नाटक और महाराष्ट्र हैं। यह उन रुझानों की निरंतरता का प्रतिनिधित्व करता है जहां ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच के अनुसार, भारत ने 2024 में केवल 18,200 हेक्टेयर प्राकृतिक वन सहित महत्वपूर्ण वन कवर खो दिया है।

जंगलों पर अतिक्रमण के ऐतिहासिक रूप से विभिन्न कारण रहे हैं। भूमि की भूख से प्रेरित, कई समुदायों ने खेती और आवास के लिए जंगल को मंजूरी दे दी, खासकर आदिवासी क्षेत्रों में। बांधों, सिंचाई, सड़कों, रेलवे और खनन परियोजनाओं और अन्य विकासात्मक कार्यों जैसे विकासात्मक उद्देश्यों के लिए जंगलों के बड़े हिस्से को कानूनी रूप से डायवर्ट किया जाता है । शहरी विस्तार और अवैध खनन ने प्राथमिक वनों पर भी भारी असर डाला है। 2014 के बाद से, 1 अप्रैल 2014 से 31 मार्च 2024 के बीच वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 के तहत भारत में गैर-वानिकी उद्देश्यों के लिए 1.73 लाख हेक्टेयर से अधिक वन भूमि को मंजूरी दी गई है, जो संसद में प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार है। ग्रामीणों, तस्करों और शिकारियों द्वारा पेड़ों की अवैध कटाई भी एक बहुत ही गंभीर समस्या है।

1864 में भारतीय वन विभाग की स्थापना के बाद वन आरक्षण हमेशा बहस और चर्चा का विषय रहा है, यहां तक कि अंग्रेजों के बीच भी। पंजाब में वन संरक्षक के रूप में काम करने वाले ब्रिटिश सिविल सेवक बैडेन पॉवेल ने हमेशा पारिस्थितिक और आर्थिक कारणों से वनों के अधिनायकवादी नियंत्रण के कारण जासूसी की थी। उनकी तुलना में 1864 से 1883 तक वन महानिरीक्षक के रूप में नियुक्त किए गए जर्मन वनपाल डायट्रिच ब्रांडिस ने एक जन-समर्थक रेखा अपनाई और उनकी वजह से जहां जंगलों का आरक्षण हुआ, वहीं लोगों के इस्तेमाल के लिए दो तिहाई जंगल रह गए.

हालांकि, कई स्थानों पर झड़पें हुईं, लेकिन जंगलों के वैज्ञानिक प्रबंधन ने बेहतर अग्नि सुरक्षा और मिट्टी और नमी संरक्षण सुनिश्चित किया। औपनिवेशिक शासन की 1894 की वन नीति कृषि के अधीन वानिकी और वनों के बड़े क्षेत्रों को खाद्य उत्पादन के लिए कृषि के लिए डायवर्ट किया गया था, लेकिन इसने वाणिज्यिक शोषण के लिए राज्य को अधिक नियंत्रण भी दिया, खासकर रेलवे नेटवर्क के विस्तार के लिए। मिट्टी, नमी और जल संरक्षण के लिए बहुत सारे संरक्षण वन बनाए गए जिन्होंने कृषि को बढ़ावा दिया।

हालांकि, यह नीति 1914 से 1918 के दौरान प्रथम विश्व युद्ध के कारण टॉपसी-टर्वी हो गई जब ब्रिटिश नौसेना को टिम्बर्स की आवश्यकता थी। अंग्रेजों ने वानिकी प्रशिक्षण संस्थान और वन अनुसंधान संस्थान बनाकर चीजों को बेहतर बनाने की कोशिश की, लेकिन दोनों विश्व युद्धों ने वनों के ध्वनि प्रबंधन को बहुत प्रभावित किया। स्वतंत्रता के बाद, आरक्षित और संरक्षित जंगलों के रूप में शामिल पूर्व-रियासतों को ज्यादातर अपमानित किया गया था और कई स्थानों पर घर्षण का कारण भी था। यह घर्षण एक ओर जारी रहा, जिन कार्यकर्ताओं ने दावा किया कि सरकार द्वारा लोगों पर आरक्षण प्रक्रिया को बुलडोजर किया गया था।

इससे राजनीतिक संरक्षण के तहत अतिक्रमण को बढ़ावा देने में मदद मिली जब तक कि 1980 में 42 वें संवैधानिक संशोधन विधेयक को समवर्ती विषयों के

रूप में वन और वन्यजीव लाने के बाद वन संरक्षण अधिनियम लागू नहीं किया गया।

वन और इसकी जैव विविधता अपने लिए नहीं बोल सकती। इतिहास जो भी हो, यह एक तथ्य है कि वनों और वनवासियों को अधिकांश राजनीतिक दलों द्वारा सड़क अवरोधक के रूप में माना जाता है, जो विकास के लिए मतदाताओं और प्राथमिकताओं के हितों के साथ संरक्षण संघर्ष की अवधारणा के रूप में शासन करते हैं। खनिज, आदिवासी और वन मानचित्र ओवरलैप होते ही स्थिति गंभीर हो जाती है। 2006 में वन अधिकार अधिनियम लागू होने के बाद भी अतिक्रमण की समस्या कम नहीं हुई है; बल्कि, अपमानित वन बढ़कर 28 मिलियन हेक्टेयर हो गए हैं।

2023 की एफएसआई रिपोर्ट से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि 50 प्रतिशत से अधिक प्राकृतिक वनों में कमी है। जब यह लेखक मंत्रालय में आईजीएफ था, तब 1980 से पहले केवल 3.5 लाख हेक्टेयर भूमि अतिक्रमण के अधीन थी, जब सरकार इन अतिक्रमणों को नियमित करने के लिए सहमत थी, और 2001 में 1980 के बाद लगभग 13 लाख हेक्टेयर थे। अब वन अधिकार अधिनियम (FRA) 2006 के तहत, जनजातीय मामलों के मंत्रालय की वेबसाइट में कहा गया है कि व्यक्तिगत अधिकारों के तहत 50,75,083.51 एकड़ के जंगलों को 23,86,670 परिवारों में निहित किया गया है। इसी तरह, 181,98,863.89 एकड़ जंगलों को 1,21,705 समुदायों के सामुदायिक अधिकारों के रूप में निहित किया गया था। स्वाभाविक रूप से, अधिनियम, ग्राम सभा के इशारे पर, वितरित और दूर जंगलों जो अतिक्रमण नहीं किया गया था। अधिनियम के उन्नीस साल के अधिनियमन के बावजूद यह प्रक्रिया अभी भी चल रही है।

यह अधिनियम आदिवासी परिवारों को भूमि पार्सल जारी करने के नाम पर वोट जुटाने के लिए एक राजनीतिक उपकरण बन रहा है। सभी जगह भारी अतिक्रमण की खबरें हैं और जब तक आवेदन जमा करने के लिए अंतिम तिथि तय नहीं की जाती है, ऐतिहासिक अन्याय को ठीक करने की दवा धीरे-धीरे जंगलों और जंगलों पर निर्भर लोगों के लिए एक 'जहर' बन रही है।

यह उच्च समय है कि आरएसएस के सहयोगी वनवासी कल्याण आश्रम, जो इस अधिनियम का एकल-दिमाग से समर्थन कर रहे हैं, नेतृत्व को महसूस करते हैं और देते हैं ताकि वास्तविक आदिवासियों को दीर्घकालिक रूप से नुकसान न हो और उन्हें आवेदन दाखिल करने की समय सीमा के लिए रूट करना चाहिए। जनजातीय मामलों का मंत्रालय देश के पारिस्थितिक, भोजन और जल सुरक्षा के लिए सामने आने वाले गंभीर नतीजों से बेखबर है।

सरकार में मंदारिन को अपने निहित एजेंडे को पूरा करने के लिए गलत तरीके से वन विभागों की आलोचना करने के लिए विदेशी वित्त पोषित गैर सरकारी संगठनों द्वारा ठोस प्रयासों का शिकार नहीं होना चाहिए। सामुदायिक अधिकार केवल तभी उत्पादक बन सकते हैं जब उन्हें ध्वनि कार्य योजना के पर्चे का हिस्सा बनाया जाए। पेड़ लगाना सरल है, लेकिन जंगलों को काटने के लिए पेशेवर इनपुट की आवश्यकता होती है। भारतीय वन वनों की आगे की कानूनी या अवैध व्याख्या को रोकने के लिए कर्कश रो रहे हैं। प्रकृति ने बदला लेना शुरू कर दिया है, जैसा कि इस मानसून में देखा गया है। सोचने और फिर से सोचने का समय।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

तीन राज्यों मे कुड़मी समाज का रेल रोको आंदोलन जोरदार , झारखंड मे ट्रैक पर उतरे लाखों

बड़ों के साथ भारी संख्या में महिलाएं एवं बच्चे भी तेज धूप में उतरे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड आदिवासी कुड़मी मंच की ओर से अनुसूचित जनजाति एसटी का दर्जा मांग रहे कुड़मी समाज के लोगों ने शनिवार को झारखंड में जोरदार तरीके से रेल चक्का जाम कर दिया है। आंदोलन के कारण धनबाद, चक्रधरपुर, रांची और आद्रा के साथ-साथ हावड़ा और आसनसोल रेल मंडल की ट्रेनों पर सबसे ज्यादा असर पड़ा। दोपहर दो बजे तक 28 ट्रेनों को रेलवे ने रद्द करने की घोषणा की, जबकि 23 ट्रेनें रास्ते से लौटीं और 21 ट्रेनों को बदले मार्ग से चलाने की घोषणा हुई। कडमी समाज आज झारखंड में अपनी जो लड़ाई लड रही है उसका दुरागामी परिणाम उसके राजनीतिक अस्तित्व को लेकर भी है कहीं ना कहीं है ।

कुछ ट्रेनें कल भी रद्द रहेंगी।

निम्न ट्रेनें आज और कल रहेंगी रद्दः

- गोड्डा-रांची एक्सप्रेस (वाया भागलपुर 21 सितंबर)- नईदिल्ली-रांची राजधानी एक्सप्रेस (यात्रा तिथि 22 सितंबर)
- सिंगरौली-पटना एक्सप्रेस (यात्रा तिथि 21 सितंबर)

ट्रेनों का आवागमन प्रभावित

धनबाद रेल मंडल में कुड़मी समाज के लोगों ने प्रधानखंता, पारसनाथ, चंद्रपुरा, बरकाकाना, राय, मेसरा, जोगेश्वर विहार और चरही स्टेशनों में रेल पटरी पर बैठ गए। रांची और चक्रधपुर रेल मंडल में मूरी, सिनी, कांड्रा, गम्हरिया, बिरिराजपुर, कुनकी, चांडिल, झिमड़ी, नीमडीह सहित अन्य स्टेशनों में भी कुड़मी बहुल कई स्थानों पर समाज के लोगों ने ट्रेनों का आवागमन प्रभावित किया।इन ट्रेनों को करना पड़ा रद्द

- धनबाद-हावड़ा ब्लैक डायमंड एक्सप्रेस
- आसनसोल-गया एक्सप्रेस
- पटना-सिंगरौली एक्सप्रेस- रांची-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस
- रांची-गोड्डा एक्सप्रेस (वाया भागलपुर)
- धनबाद-पटना इंटरसिटी
- रांची-धनबाद इंटरसिटी
- पटना-टाटानगर वंदे भारत एक्सप्रेस
- सासाराम-धनबाद इंटरसिटी
- बरवाडीह-गोमो मेमू पैसेंजर
- बरकाकाना-डेहरी-ऑन-सोन पैसेंजर
- गोमो-बरवाडीह मेमू पैसेंजर
- बरवाडीह-गोमो मेमू पैसेंजर
- धनबाद-चंद्रपुरा मेमू पैसेंजर
- चंद्रपुरा-धनबाद मेमू पैसेंजर
- गोमो-आसनसोल पैसेंजर
- सिंदरी-धनबाद पैसेंजर
- हटिया-आसनसोल एक्सप्रेस
- रांची-पटना जनशताब्दी एक्सप्रेस
- भोजूडीह-चंद्रपुरा पैसेंजर
- चंद्रपुरा-भोजूडीह पैसेंजर
- बरकाकाना-सिधवार पैसेंजर
- सिधवार-बरकाकाना पैसेंजर
- बरकाकाना-आद्रा पैसेंजर
- सांकी-हटिया पैसेंजर

मालगाड़ियों की लोडिंग पर भी असर

आसनसोल रेल मंडल के अंतर्गत संथाल परगना में पौड़याहाट, हंसडीहा, जामताड़ा में आंदोलनकारियों ने पटरी पर उतर कर ट्रेनें नहीं चलने दीं। यात्री ट्रेनों के साथ-साथ धनबाद रेल मंडल में

मालगाड़ियों के पहिए थमे रहे और लोडिंग पर भी इसका काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

इन ट्रेनों को बीच रास्ते में रोका गया

- हावड़ा-रांची शताब्दी एक्सप्रेस आनसोल तक चली, वहीं से हावड़ा लौटी
- हावड़ा-धनबाद ब्लैक डायमंड एक्सप्रेस दुर्गापुर तक चली
- एलेप्पी-धनबाद एक्सप्रेस रांची तक ही आई
- भुवनेश्वर-धनबाद स्पेशल हटिया तक चली, हटिया से ही भुवनेश्वर रवाना की गई
- विष्णुपुर-धनबाद पैसेंजर पाथरडीह तक चली, वहीं से धनबाद-बांकुड़ा पैसेंजर रवाना हुई
- चोपन-गोमो पैसेंजर गढ़वा रोड तक चली, ट्रेन को वहीं से वापस लौटाया गया
- पूर्णिया कोर्ट-हटिया एक्सप्रेस पटना तक ही चली, वहीं से ट्रेन को पूर्णिया कोर्ट भेजा गया
- टाटानगर-पटना वंदे भारत एक्सप्रेस को मूरी तक चलाया गया
- पटना-धनबाद इंटरसिटी फतुआ तक ही चली, वहीं से ट्रेन को पटना भेज दिया गया
- धनबाद-रांची इंटरसिटी कतरास से वापस
- धनबाद-सासाराम इंटरसिटी गोमो में रोकी गई
- पटना-बरकाकाना एक्सप्रेस टोरी में रोकी गई
- आसनसोल-हटिया एक्सप्रेस हजारीबाग टाउन तक चली
- वाराणसी-आसनसोल मेमू एक्सप्रेस गया तक ही चली
- बरकाकाना-आसनसोल पैसेंजर भंडारीदह से लौटी
- गोमो-चोपन पैसेंजर चंद्रपुरा से वापसी गोमो लौटी
- बरकाकाना-कोडरमा मेमू पैसेंजर को भी चरही से वापस किया गया
- गया-आसनसोल एक्सप्रेस टनकुप्पा से वापस गया लौटी
- आसनसोल-वाराणसी मेमू एक्सप्रेस मुगमा तक चली
- दुमका-रांची बाबाधाम एक्सप्रेस बराकर तक चली
- वर्दमान-हटिया मेमू एक्सप्रेस आसनसोल तक चली
- पटना-रांची जनशताब्दी एक्सप्रेस गया से लौटी
- पटना-रांची वंदे भारत एक्सप्रेस गया तक आई और वहीं से ट्रेन को वापस पटना लौटाया गया

इन ट्रेनों को बदले गए मार्ग चलाया गया

- जम्मूतवी-कोलकाता एक्सप्रेस : गया-किऊल-आसनसोल होकर चली
- बीकानेर-सियालदह दूरंतो एक्सप्रेस : गया-किऊल-आसनसोल होकर चली
- अजमेर-सियालदह एक्सप्रेस : गया-किऊल-आसनसोल होकर चली
- नई दिल्ली-हावड़ा पूर्वा एक्सप्रेस : गया-किऊल-आसनसोल होकर चली
- सियालदह-गांधीधाम स्पेशल : आसनसोल-झाझा-किऊल होकर गया की ओर गई
- रांची-चोपन एक्सप्रेस : रांची-टोरी होकर चली
- 19 सितंबर को खुली आनंद विहार-हटिया एक्सप्रेस : टोरी, रांची होते हुए हटिया गई
- जबलपुर-हावड़ा शक्तिपुंज एक्सप्रेस : सिगसिगी, सोननगर, गया, किऊल, आसनसोल होकर चली
- झांसी-पुरी स्पेशल : कोडरमा, मधुपुर होकर चली
- गाजीपुर सिटी-कोलकाता कोडरमा-मधुपुर, आसनसोल होकर चली
- नईदिल्ली-भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस : गोमो की बजाय कोडरमा, मधुपुर, आसनसोल, खाना होकर चली
- संबलपुर-जम्मूतवी एक्सप्रेस : बिलासपुर, कटनी, प्रयागराज होकर चली
- संबलपुर-गोरखपुर मौर्य एक्सप्रेस : बिलासपुर, कटनी, मानिकपुर, प्रयागराज होते हुए गोरखपुर जाएगी
- भुवनेश्वर-नईदिल्ली राजधानी एक्सप्रेस गोमो-गया की जगह बिलासपुर, कटनी, प्रयागराज होकर चलेगी
- चर्लपल्ली-पटना स्पेशल : न्यू कटनी, प्रयागराज छिवकी, डीडीयू, बक्सर होकर चलेगी
- वास्को द गामा-जसीडीह एक्सप्रेस : न्यू कटनी, प्रयागराज छिवकी, डीडीयू, बक्सर, पटना, झाझा होकर चलेगी
- कोलकाता-अमृतसर दुर्गियाना एक्सप्रेस : आसनसोल, झाझा, किऊल, गया होकर चलेगी
- कोलकाता-जम्मूतवी एक्सप्रेस : आसनसोल, झाझा, किऊल, गया, होकर
- हावड़ा-जबलपुर शक्तिपुंज एक्सप्रेस : आसनसोल, झाझा, किऊल, गया, सिगसिगी होकर
- कोलकाता-अहमदाबाद एक्सप्रेस : आसनसोल, झाझा, किऊल, गया, सिगसिगी होकर

यात्रियों को भारी परेशानी

अपनी अधिकार की दुहाई देकर लड़ रहे लड़ाई में महिलाओं और पुरुषों के साथ-साथ आंदोलनकारियों में बच्चों की भी संख्या अच्छी थी। कड़ी धूप में आंदोलनकारी जहां रेल पटरी पर डटे रहे, वहीं जहां-तहां खड़ी यात्री ट्रेनों में मुसाफिर भी काफी परेशान दिखे। भूखे-प्यास यात्री ट्रेन चलने की राह देखते रहे। ट्रेन रद्द रहने के कारण हजारों यात्रियों को यात्रा टालनी पड़ी। ट्रेनों के डायवर्ट होने के कारण सड़क मार्ग से यात्रियों को अपने स्टेशनों पर जाना पड़ा। धनबाद होकर चलने वाली बंगाल की ट्रेनों को गया से ही मार्ग परिवर्तित कर गया-किऊल-आसनसोल होकर चलाया गया। ट्रेनों को आधे रास्ते से वापस भी लौटाया गया।

कांग्रेस और आरजेडी में सीट बंटवारे का घमासान किसको लाभ पहुचाएगा?

रामस्वरूप रावतसरे

बिहार विधानसभा चुनाव में सीटों का बंटवारा दोनों गठबंधनों के लिए परेशानी का कारण बना हुआ है। एनडीए में जीतन राम मांझी अब 20 सीटों के लिए अड़े हुए बताए जा रहे हैं। चिराग पासवान की पार्टी लोजपा-आर को न सिर्फ सीटें चाहिए बल्कि अब सीएम पद की रेस में भी शामिल हो गए हैं । चिराग के बहनोई सांसद अरुण पासवान की नजर में चिराग सीएम पद के लिए फिट कैंडिडेट हैं। मांझी ने अधिक सीटें मांगने के पीछे के कारण भी बता दिए हैं। उनका कहना है कि पार्टी को सदन में मान्यता के लिए कम से कम 8 सीटों पर जीतना जरूरी है और यह तभी संभव होगा, जब उनकी पार्टी को 20 या इससे अदिक सीटें मिलें। जानकारों के अनुसार एनडीए का तो रिकार्ड ही रहा है कि टिकट बंटवारे से पहले खूब चिल्ल-पों मचती है लेकिन जिसे जितनी सीटें मिलती हैं, वे उससे ही संतुष्ट हो जाते हैं। सबसे मुश्किल हालात 8 विपक्षी दलों के इंडी महागठबंधन में पैदा हो गए हैं। कांग्रेस और आरजेडी के बीच सीट बंटवारे की शर्तों को लेकर घमासान मचा हुआ है।

महागठबंधन के दो सबसे बड़े घटक दल राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) और कांग्रेस के बीच सीट बंटवारे और नेतृत्व को लेकर तलवारें तन गई हैं। अव्वल तो कांग्रेस तेजस्वी को चुनाव से पहले सीएम फेस घोषित करने को तैयार नहीं जबकि तेजस्वी खुद को सीएम फेस बताते रहे हैं। बिहार अधिकार पर निकले तेजस्वी कांग्रेस की चुप्पी के बावजूद अपने को भावी सीएम के रूप में पेश कर रहे हैं। पहले भी वे कई बार यह बात कह चुके हैं। राहुल के साथ वोटर अधिकार यात्रा के दौरान उन्होंने यहां तक कह दिया था कि राहुल को पीएम और उन्हें सीएम बनाने के लिए वोट कीजिए।

जहां तक सीटों का सवाल है तो कांग्रेस 2020 की तरह मनपसंद 70 सीटें तो चाहती ही है, साथ ही अब उप मुख्यमंत्री का पद भी मांगने लगी है। दोनों दलों के बीच तनातनी का आलम यह है कि सीट बंटवारे के मुद्दे पर 15 सितंबर को होने वाली महागठबंधन की बैठक टालनी पड़ी। अब तेजस्वी यादव ने भी सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। खींचतान से महागठबंधन में दिख रही दरार अगर टूट की बुनियाद बन जाए तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

जानकारी के अनुसार सीटों की संख्या के लिए आरजेडी के सामने कांग्रेस ने 2020 को आधार बनाने की शर्त रखी है। तब कांग्रेस को महागठबंधन में 70 सीटें मिली थीं। कांग्रेस का कहना है कि उसे जो सीटें दी गईं, उसमें आधी से अधिक कमजोर सीटें थीं। इसलिए उसने टिकट बंटवारे में अच्छी-बुरी सीटों में संतुलन बनाने की दूसरी शर्त रखी है। 2020 में कांग्रेस केवल 19 सीटें जीत पाई थी। उसके खराब स्ट्राइक रेट को महागठबंधन की हार का एक मुख्य कारण माना गया था। कांग्रेस का कहना है कि उसे आधी से अधिक वैसी कमजोर सीटें मिली थीं जिसकी वजह से उसका स्ट्राइक रेट खराब रहा। कांग्रेस ने अपने लिए उप मुख्यमंत्री पद की तीसरी शर्त रखी है। महागठबंधन में शामिल वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी भी डिप्टी सीएम पद के लिए पहले से ही हाय-तौबा मचाए हुए हैं। सहनी तो यहां तक कहते हैं कि अगर तेजस्वी सीएम बनेंगे तो उनका डिप्टी सीएम बनना पक्का है। कांग्रेस की शर्तों से यह साफ है कि काग्रेस अब बिहार में अपने को आरजेडी का पिछलग्गू बनाए रखने से बचना चाहती हैं। राहुल की वोटर अधिकार यात्रा की कथित सफलता से कांग्रेस का मनोबल मजबूत हुआ बताया जा रहा है। इसलिए वह अब आरजेडी से पीछे नहीं रहना चाहती।

जानकारों की माने तो राहुल गांधी की 'वोटर अधिकार यात्रा' में उमड़ी भीड़ ने बिहार कांग्रेस में नया जोश भर दिया है। कांग्रेस को लगता है कि इस यात्रा ने

गठबंधन की स्थिति को मजबूत किया है और इसी आत्मविश्वास के साथ वह आरजेडी पर ज्यादा दबाव डाल रही है। वोटर अधिकार यात्रा में महागठबंधन के सभी टाप लीडर शामिल हुए थे। तेजस्वी लगातार 16 दिन उनके साथ रहे। यात्रा का समापन पटना में सड़क मार्च के साथ हुआ जिसमें महागठबंधन की सम्मिलित ताकत थी। नतीजतन यात्रा में उनके समर्थकों की खूब भीड़ उमड़ी। संभव है कि कांग्रेस को इससे राहुल का करिश्मा और अपनी बढ़ी ताकत का भ्रम हुआ है जिसकी वजह से टिकट बटवारे को लेकर कांग्रेस नई और आक्रामक शर्तें थोपने लगी है।

कांग्रेस की आक्रामक स्थिति को देखते हुए आरजेडी ने भी अब कड़ा रुख अपना लिया बताया जा रहा है। तेजस्वी यादव ने मुजफ्फरपुर की एक रैली में सभी 243 सीटों पर लड़ने का बयान देकर कांग्रेस की मांग पर पलटवार किया। हालांकि, यह बयान एक तरह की दबाव की रणनीति भी हो सकती है लेकिन इसके जरिए तेजस्वी ने कांग्रेस को साफ संकेत दे दिया है कि आरजेडी गठबंधन में सबसे बड़े हिस्सेदार के रूप में अपनी स्थिति को कमजोर नहीं होने देगा। आरजेडी सूत्रों का कहना है कि 2020 में कांग्रेस के खराब स्ट्राइक रेट के कारण ही महागठबंधन सत्ता में आने से चूक गया था। आरजेडी के सख्त होने की एक वजह यह भी है कि कांग्रेस ने अब तक तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में खुल कर समर्थन नहीं दिया है। कांग्रेस की यह चुप्पी भी आरजेडी और तेजस्वी के लिए असहज स्थिति पैदा कर रही है। तेजस्वी ने अपनी बिहार अधिकार यात्रा में महागठबंधन के सहयोगी दलों को शामिल नहीं किया है हालांकि राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा में महागठबंधन के सभी दल साथ थे।

महागठबंधन में कांग्रेस और आरजेडी के अलावा वाम दल और अन्य छोटे दल भी सीटों की मांग कर रहे हैं। ऐसे में आरजेडी के लिए सभी को संतुष्ट करना मुश्किल होगा। हालांकि यह भी सच है कि दोनों ही दलों के शीर्ष नेतृत्व के बीच अभी तक आमने-सामने बात नहीं हुई है। राहुल गांधी और तेजस्वी यादव ही गठबंधन को लेकर अंतिम फैसला लेंगे। दोनों ही नेता जानते हैं कि एकजुट होकर लड़ना ही एनडीए को हराने का एकमात्र तरीका है पर कांग्रेस ने जिस तरह हरियाणा और दिल्ली में इंडिया ब्लाक के सहयोगी आम आदमी पार्टी से अलग होकर चुनाव लड़ने का फैसला किया, उससे महागठबंधन में टूट की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। कांग्रेस अपनी राजनीतिक प्रासंगिकता और लोकसभा चुनाव के बाद बढ़ी अपनी स्थिति को भुनाना चाहती है। वहीं बिहार में आरजेडी सबसे बड़े दल के रूप में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करना चाहता है। दोनों के बीच की खींचतान से गठबंधन का क्या होगा, इसके बारे में अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट होगा कि क्या दोनों दल आपसी सहमति से कोई समाधान निकाल पाएंगे या यह आंतरिक कलह महागठबंधन में टूट का सबब बनेगा लेकिन संभव है हालातों को देखते हुए दोनों दल सकारात्मक निर्णय कर लेंगे।

पितृपक्ष में महामहिम राष्ट्रपति ने गया में अपने पितरों को किया पिंडदान

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, मोक्ष और ज्ञान की धरती गया में पितृपक्षिय समय में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू शनिवार को वहां पहुँच कर विष्णुपद मंदिर परिसर में अपने पूर्वजों की मुक्ति के लिए पिंडदान (पिंडदान सहित तर्पण की एक पवित्र क्रिया) किया। महामहिम के झारखंड -बिहार सीमा नजदीक गया पहुंचने पर बिहार के गवर्नर आरिफ मोहम्मद खान तथा केंद्रीय मंत्री मंत्री जीतन राम मांझी एवं राज्य के एक मंत्री ने उनका स्वागत किया ।

सदियों पुरानी परंपरा का पालन करते हुए, राष्ट्रपति ने अपने माता-पिता, ससुर और दो पुत्रों सहित सात कुलों के अपने दिवंगत परिजनों की आत्मा की शांति और मुक्ति के लिए पूरे रीति-रिवाजों के साथ पिंडदान किया। ओडिशा के गयापाल उपासक राजेश कटियार और बाबूलाल झंकार ने सदियों पुरानी परंपरा के अनुसार राष्ट्रपति के लिए पिंडदान और अन्य अनुष्ठान किए। गयापाल उपासकों ने बताया कि राष्ट्रपति ने सबसे पहले अपने दोनों कुलों के दिवंगत सदस्यों को गयाजी बुलाया। फिर, अपने कुल के दिवंगत सदस्यों के नाम एक-एक करके उच्चारित करते हुए, उन्होंने उनकी मुक्ति और आत्मा की शांति के लिए पिंडदान किया। पिंडदान के बाद, एक गाय की भी बलि दी गई। इसके बाद राष्ट्रपति ने अपने पूर्वजों के नाम पर दिया गया पिंड विष्णुपद मंदिर में स्थित सृष्टि के रचयिता भगवान हरि के चरणों में अर्पित किया। उन्होंने हाथ जोड़कर भगवान हरि से अपने पूर्वजों की मुक्ति और शांति के लिए प्रार्थना की। इसके बाद राष्ट्रपति अक्षय वृक्ष के पास भी उन्होंने पिंडदान किया और प्रणाम किया।

एनएसी जमशेदपुर को अवैध निर्माण, नक्सा पर नया हलफनामा दायर करने हाईकोर्ट का निर्देश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर, झारखंड हाइकोर्ट ने अनधिकृत निर्माण, नक्शा विचलन और अतिक्रमण मामले में जमशेदपुर अक्षेस को चार सप्ताह के भीतर एक नया हलफनामा दाखिल करने का आदेश दिया गया है.मुख्य न्यायाधीश तरलोक सिंह चौहान और न्यायाधीश राजेश शंकर की खंडपीठ ने यह आदेश दिया. प्रतिवादी-जेएनएसी को निर्देश दिया गया है कि वह अतिक्रमणकारियों और उन भवन स्वामियों के विरुद्ध उठाए गए कदमों के संबंध में आज से चार सप्ताह की अवधि के भीतर एक नया हलफनामा दाखिल करे, जिन्होंने अनधिकृत निर्माण किया है. हलफनामा सारणीबद्ध रूप में दाखिल किया जाए. इसके अतिरिक्त, जेएनएसी उन भवनों का विवरण भी प्रस्तुत करे, जिन्हें पूर्णता प्रमाण पत्र प्रदान किए जा चुके हैं और उन भवनों का विवरण भी, जिन्हें ये प्रमाण पत्र प्रदान नहीं किए गए हैं और फिर भी उन्हें पानी और बिजली के कनेक्शन प्रदान किए गए हैं. और क्या जिन भवनों को पूर्णता प्रमाण पत्र प्रदान नहीं किए गए हैं, वे वाणिज्यिक दरों/घरेलू दरों पर बिजली/पानी का शुल्क अदा कर रहे हैं, इसकी भी जानकारी मांगी है। अब इस मामले की सुनवाई 29 अक्तूबर को होगी।

भारत में अराजकता की कोई गुंजाइश नहीं

नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

पिछले दिन अपने पड़ोसी देश नेपाल में जो हुआ वह बहुत चिंताजनक रहा। सेना के दखल के बाद वहाँ की स्थिति धीरे धीरे सामान्य हुई । चर्चा है कि सोशल मीडिया पर बैन के बाद नेपाल में युवाओं में आक्रोश फैल गया जिसकी परिणीति एक राजनीतिक आंदोलन में बदल गया। वहाँ की सरकार का तख्ता पलट दिया गया। प्रधानमंत्री ओली के खिलाफ जनता का गुस्सा ऐसा फूटा कि लोग सीधे सड़कों पर आकर जो तांडव मचाया वैसा नेपाल के इतिहास में पहली बार हुआ है। मंत्रियों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा गया। संसद से लेकर सुप्रीम कोर्ट व व्यवासायिक प्रतिष्ठानों की इमारतें आग के हवाले कर दिया गया। सब जगह अराजकता का माहौल उत्पन्न हो गया। कैदी भी जेल तोड़कर भाग गए। इसी बीच जनता की मांग व आंदोलनकारियों की सलाह पर सुशीला कार्की को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाया गया।

इसके पहले श्रीलंका और बांग्लादेश में इसी तरह का आंदोलन हो चुका है। भारत में भी कुछ अराजक लोग इस खुशफहमी में हैं कि भारत में भी ऐसी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। दरअसल जनता में आक्रोश का सबसे बड़ा कारण होता है सरकार का भ्रष्टाचार में लिप्त होना। जेपी आंदोलन भी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर ही किया गया था लेकिन उस समय भी इस तरह की अराजक स्थिति देश में नहीं हुई थी। लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से अपने गुस्से का इजहार किया था। चुनाव में तब की सरकार को हटाकर सत्ता से बेदखल किया गया था। हमारी सेना इतनी निष्पक्ष और लोकतांत्रिक है कि हमारे देश में इस तरह की अराजक स्थिति कभी पैदा नहीं हो सकती है। सबसे बड़ी बात ये है कि छोटे मोटे देश में इस तरह की स्थिति होना संभव है क्योंकि आबादी कम होने से लोगों में एकता होना संभव है लेकिन भारत जैसी आबादी वाले देश में सभी लोगों का सड़कों पर उतरना नामुमकिन है। यहाँ नेपाल, श्रीलंका या बांग्लादेश जैसा आंदोलन कदापि संभव नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि इसके लिए सरकार के ख़िलाफ़ जनाक्रोश जरूरी है। अगर सरकार अपने दायित्वों को बखूबी अंजाम दे रही है तो मुट्ठी भर लोगों के सरकार के खिलाफ होने से कोई बात बनने वाली नहीं है और जब सरकार पूरी तरह राष्ट्रवादी हो तो ये और भी नामुमकिन हो जाता है। अभी देश की अधिकतर जनता सरकार के साथ है। कुछेक विपक्षी दलों को छोड़कर देश की जनता प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी को देखना चाहती है. ऐसे में कुछ विपरीत विचारधारा वाले लोगों के चाहने से कुछ नहीं होने वाला है। इसलिए इतना तो तय है कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में चंद मुट्ठी भर लोग अराजकता कदापि नहीं फैला सकते। इस देश में लोकतंत्र की जड़ें काफी मजबूत हैं, इसलिए यहाँ पड़ोसी देशों की घटनाओं का कोई असर नहीं होने वाला है। यहां तक कि विश्व भर की उथल पुथल घटनाओं से भी इस देश के सेहत पर कोई असर होने वाला नहीं है। रूस-यूक्रेन युद्ध का कोई असर भारत में नहीं देखा गया। उसी तरह इजरायल और ईरान या इजरायल और हमास के बीच होने वाले युद्ध से भी भारत पर कोई असर नहीं पड़ा और ना पड़ने वाला है।

भारत अपने हितों को सुरक्षित रखने में पूरी तरह सक्षम है और ये भी तय है कि पड़ोसी देशों में अराजकता फैलने से भारत पर आंशिक ही असर हो सकता है। बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद थोड़े बहुत हिंदुओं का पलायन जरूर हुआ है लेकिन बहुसंख्यक हिन्दू अभी बांग्लादेश में ही हैं। भारत के साथ मैत्री संबंध होने से पड़ोसी देश को ही फायदा होता है। नेपाल के साथ हमारा बेटी-रोटी का संबंध है और वहाँ कोई दल सत्ता में रहे, भारत के साथ संबंधों में ज्यादा कुछ परिवर्तित होने वाला नहीं है। नेपाल में व्यापक जनसमूह भारत के साथ बेहतर रिश्ता रखने में विश्वास रखता है।

भारत में कुछ लोग हमेशा से ऐसे रहे हैं जिनको कुछ भी सुविधा दे दी जाए, वो असंतुष्ट ही रहते हैं। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा यहाँ के लोगों में कूट-कूट कर भरी हुई है। भारत अपनी गति से आगे बढ़ रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे सुदृढ़ होती जा रही है । देश विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर अग्रसर हो रहा है। पूरे विश्व के लिए ये चिंता का सबब बना हुआ है। इसलिए देश विरोधी ताकतें भारत को कमजोर करने की साजिश कर रही है लेकिन इसमें उनको कोई सफलता नहीं मिलने वाली है।

भारत के विपक्षी दल सकारात्मक विपक्ष की भूमिका कतई नहीं निभा रहे हैं । विपक्षी दलों का नकारात्मक रवैया देश को नुकसान पहुंचा रहा है। विपक्षी दल कभी भी सरकार को उन मुद्दों पर नही घेरते जिसका जनता से कोई सरोकार हो। आज का विपक्ष जनता के जायज मुद्दों के लिये सड़कों पर धूप में नहीं निकलता। सबको छाव में रहने की आदत हो गई है। जनता के मुद्दे के लिये सड़क पर लाठी खानी होती है।सड़क पर गड्ढे भरे पड़े हैं लेकिन इसके लिए कोई आवाज नहीं उठाता है। अस्पताल में डॉक्टर उपलब्ध नहीं रहता पर इसके लिए कोई आवाज उठाने को तैयार नहीं है। सड़क पर ट्रैफिक पुलिस लोगों से वसूली करती रहती है लेकिन इसके खिलाफ कोई आवाज नही उठाता।

केवल टीबी डिबेट में महंगाई और बेरोजगारी का मुद्दा उठाने से कुछ नहीं होगा, इसके खिलाफ निरंतर संघर्ष करना होगा। मीडिया के तमाम पत्रकार अपनी सुविधानुसार पत्रकारिता करते हैं।कोई भी शासन के खिलाफ या समाज में बाहुबलियों के खिलाफ कुछ बोलने या लिखने की जुर्रत नहीं कर पाते हैं। आज जो देश की परिस्थिति है उसमें देश का विपक्ष कभी भी सत्ता हासिल करने के बारे में सोच नहीं सकता । इस मानसिकता से लोगों को उबरना होगा ।

टाटानगर पार्किंग में बाउंसरों ने फिर ठोका मुसाफिर को

रेल एडमिनिस्ट्रेशन की निष्क्रियता से रेल्वे स्टेशन ढो-रहा बदनाम का गठरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर/ रांची, टानगर स्टेशन की पार्किंग एक बार फिर विवादों में आ गई है। शुक्रवार रात पार्किंग कर्मचारियों और बाउंसरो ने पटना जाने वाले यात्री को न सिर्फ हॉकी स्टिक से पीटकर घायल कर दिया।

बल्कि टाटानगर रेल थाने में उसे जान से मारने की भी धमकी तक दे डाली। इस घटना ने स्टेशन की सुरक्षा व्यवस्था और पार्किंग प्रबंधन पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

घायल यात्री की पहचान बिहार निवासी मनीष कुमार सिंह के रूप में हुई है, जो काम की तलाश में जमशेदपुर आए थे। घटना के वक्त वह साउथ बिहार एक्सप्रेस पकड़ने के लिए बर्मामाइंस स्थित सेकेंड एंट्री गेट पहुंचे थे।

उनके साथी ने जब मनीष को छोड़ कर जाने लगे तो पार्किंग शुल्क को लेकर उनकी बहस वहां तैनात पार्किंग कर्मचारियों से हो गई। विवाद इतना बढ़ा कि कर्मचारियों ने उन पर हॉकी स्टिक से हमला कर दिया।

गंभीर रूप से घायल मनीष किसी तरह टाटानगर जीआरपी थाना पहुंचे। लेकिन मामला यहीं नहीं रुका। थोड़ी देर बाद पार्किंग से जुड़े आठ से 10 युवक थाने पहुंच गए और रेल पुलिस के सामने ही मनीष को बाहर भेजनें और जान से मारने की धमकी दी ।

साथ ही घायल यात्री के साथ थाने के अंदर धक्का मुक्की और हाथापाई भी की गई। वहीं, घटना के दौरान टाटानगर स्टेशन पर काफी भीड़ उमड़ पड़ी।

स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि टाटानगर की पार्किंग असली कर्मचारियों से ज्यादा असामाजिक तत्वों का जमावड़ा रहता है। यात्रियों से विवाद, धमकी और वसूली जैसी घटनाएं यहां आम हो चुकी हैं।

लोगों का कहना है कि रेलवे और जिला प्रशासन को तत्काल जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए, ताकि यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

यदि ऐसी स्थिति पर जल्द नियंत्रण नहीं किया गया तो टाटानगर स्टेशन का माहौल बिगड़ता जाएगा। रेलवे जैसी संवेदनशील जगह पर सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाना प्रशासन की जिम्मेदारी है।

इस पूरे घटनाक्रम में रेल पुलिस ने जांच शुरू कर दी है और घटनास्थल से एक हॉकी स्टिक को भी जब्त किया है। वहीं, घटना मे कौन कौन लोग शामिल है, सीसीटीवी फुटेज के आंधार पर जांच की जा रही है।

इस घटना के बाद यात्री मनीष की ट्रेन भी छूट गई है। मनीष ने मामले की लिखित शिकायत की है। उनका कहना है कि उनसे थोड़ी देर गाड़ी खड़ी करने के लिए जबरन 512 रुपए मांगे जा रहे थे, जिसे लेकर विवाद शुरू हुआ। जबकि 10 मिनट तक पार्किंग फ्री है

भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति की घोषणा का मखौल भाजपा सरकार भ्रष्टाचार में डूबी हुई है: कांग्रेस

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर :- सरकार ने भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति अपनाने की घोषणा की थी, लेकिन सरकार अब भ्रष्टाचार के दलदल में धँस चुकी है। कांग्रेस मीडिया सेल द्वारा कांग्रेस भवन में भाजपा सरकार के एक गंभीर भ्रष्टाचार के मुद्दे पर एक प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। अरविंद दास की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रेस वार्ता में उपाध्यक्ष अमिय पांडव और वरिष्ठ प्रवक्ता रजनी कुमार मोहंती ने सत्तारूढ़ दल के उपप्रमुख से जुड़े बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया।

मीडिया को संबोधित करते हुए मीडिया सेल के अध्यक्ष श्री दास ने कहा कि जब वर्तमान सरकार सत्ता में थी, तब बीजद सरकार भ्रष्टाचार का विरोध करती थी और कहती थी कि कुछ लोगों को जेल भेजा जाना चाहिए। लेकिन सत्ता में आने के बाद, 5-टी के बारे में सरकार की ओर से एक भी शब्द नहीं निकला। सत्ता में आने के बाद, मुख्यमंत्री ने बार-बार घोषणा की है कि भ्रष्टाचार के लिए शून्य सहिष्णुता होगी। लेकिन मंत्री और विधायक खुलेआम भ्रष्ट हैं। बीजद और भाजपा के बीच संबंध वर्तमान विधानसभा से स्पष्ट हो गए हैं। जब कांग्रेस ने चारे की कमी को लेकर स्थगन प्रस्ताव रखा, तो बीजद ने उस पर चर्चा किए बिना विधानसभा नहीं चलाई।

उपाध्यक्ष श्री पांडव ने भाजपा सरकार पर उसके खुले भ्रष्टाचार का व्यंग्य करते हुए कहा, पार्टी प्रमुख सचेत गोविंद चंद्र दास के पुत्र प्रदीप दास ने 19.06.25 को ठेकेदार लाइसेंस के लिए आवेदन किया था। वह पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन से संबद्ध नहीं हैं, लेकिन लाइसेंस जारी होने के एक साल बाद भी, उन्हें 1 करोड़ से अधिक का काम दिया गया, जो सभी नियमों और विनियमों के विरुद्ध है। इस बीच, हजारों ठेकेदार काम का इंतजार कर रहे हैं। फिर से, भाजपा युवा मोर्चा के नेता शशिकांत मिश्रा की कंपनी श्री रघुनाथ मल्टी सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड को एफएम विश्वविद्यालय में निर्माण के लिए 96 लाख रुपये का काम दिया गया। यह कंपनी पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन से भी संबद्ध नहीं है। तो फिर ऐसे अवैध और गैरकानूनी काम के ज़रिए भाजपा नेता के बेटे और पार्टी कार्यकर्ताओं को सरकारी नौकरी कौन दे रहा है? उपाध्यक्ष श्री पांडव ने सरकार से इसकी जाँच कराने की माँग की।

भ्रष्टाचार के आरोपों का पूरा ब्यौरा मीडिया के सामने उजागर करते हुए, वरिष्ठ प्रवक्ता रजनी कुमार मोहंती ने बताया कि ओडिशा पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन सरकार के प्रमुख और रेमुना विधायक गोविंद चंद्र दास के बेटे प्रत्यय रंजन दास को बिना किसी संबद्धता के 27 लाख 44 हज़ार रुपये का काम दिया गया और दो कामों को एक साथ कर दिया गया। एक बारीपदा जेल में क्यूबिकल प्लांटेशन का काम और दूसरा बालासोर में, जो पूरी तरह से अवैध है। क्योंकि नियम है कि एक क्षेत्र में काम को एक साथ किया जा सकता है।

एक और भ्रष्टाचार का ब्यौरा उजागर करते हुए, श्री मोहंती ने आरोप लगाया कि नटशव केशरी सामल नाम के एक भाजपा युवा विंग के नेता को भी क्योंझर बस स्टैंड पर लाइटिंग और सीसीटीवी लगाने का 76 लाख 11 हज़ार रुपये का काम दिया गया। उनका भी पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन से कोई संबंध नहीं है। क्योंझर बस स्टैंड पर 23 कार्यों पर कुल 13 करोड़ 43 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। इसके लिए क्योंझर खनिज निधि से पैसा आया है। हैरानी की बात यह है कि 23 कार्यों के लिए अलग से ई-टेंडर हुआ था, लेकिन टेंडर नहीं बुलाए गए, जो पूरी तरह से अवैध है। फिर, यह पूछने पर कि ओडिशा पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन के मुख्य अभियंता ने टेंडर कॉल का जवाब क्यों नहीं दिया, श्री मोहंती ने आश्चर्य व्यक्त किया कि इसके प्रमुख एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी हैं और उन्होंने पिछले कुछ दिनों में हजारों करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार की जांच की है, लेकिन ऐसा कैसे है कि उन्हें अपनी नाक के नीचे हो रहे भ्रष्टाचार की जानकारी नहीं है? मुख्यमंत्री स्वयं विधायक भी हैं। उन्होंने सवाल किया कि क्या उनकी अनुपस्थिति में यह संभव था।

रात को मुख्य सड़कों पर निकले मेयर , जांच की शहर में कूड़ा लिफ्टिंग में सुधार के लिए शुरू हुई नगर निगम ने रात को सफाई

अमृतसर 20 सितंबर (साहिल बेरी)

नगर निगम मेयर जतिंदर सिंह भाटिया शुक्रवार रात को शहर की मुख्य सड़कों पर निकले और नाइट सेनिटेशन को चेक किया। जिसमें उन्होंने सेहत अफसर, चीफ सेनेटरी इंस्पेक्टरों और सेनेटरी इंस्पेक्टरों को जरूरी हिदायतें दी। उन्होंने कहा कि शहर को साफ सूथरा रखना निगम की प्राथमिकता है। निगम की टीमें लगातार नाइट सेनिटेशन जारी रखेंगी। इसमें शहर की मुख्य सड़कों-धार्मिक स्थलों पर सफाई रखने को पहल दी जाएगी।

मेयर ने कहा कि अवर्डा ने शहर में कूड़ा लिफ्टिंग बंद कर दी है। इस वजह से शहरवासियों को परेशानी झेलनी पड़ी। निगम ने सफाई प्रबंधों को बेहतर बनाने के लिए अपने स्तर पर इंतजामात किए हैं। जिसमें ट्रालियों की संख्या बढ़ाई जा रही है। निगम के सेहत विभाग की टीमें दिन रात शहर की सफाई व्यवस्था को सुधारने में लगी हुई हैं। इसमें फील्ड रिपोर्ट के आधार पर मशीनरी लगाकर सफाई करवाई जा रही है। मेयर ने कहा कि त्योहारों के बाद भी नाइट सेनिटेशन जारी रखी जाएगी। वहीं आगे हर विधानसभा हलका में इसके लिए ट्रालियों को बढ़ाया जाएगा। भगतांवाला डंप से कूड़े का पहाड़ खत्म करने की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। कंपनी ने अपनी मशीनरी लगभग स्थापित कर ली है। जिसमें जल्द ही बायोरेमिडेशन शुरू हो जाएगी। मेयर के मुताबिक शहर की मुख्य सड़कों और धार्मिक स्थलों की सफाई को विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

संत रामपाल जी महाराज की अन्नपूर्णा मुहिम से गरीब परिवार को मिली नई आशा

तेलंगाना के सूर्यपेट जिले में रहने वाले जवाहर जी का परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। एक्सीडेंट में हाथ टूटने के बाद जवाहर जी काम करने में असमर्थ हो गए थे, और उनकी पत्नी सुनैना जी मजदूरी करके परिवार का पालन-पोषण कर रही थीं। लेकिन उनकी आय इतनी नहीं थी कि वे अपने परिवार की सभी जरूरतें पूरी कर सकें।

ऐसे में संत रामपाल जी महाराज की मुहिम ने इस परिवार की मदद के लिए हाथ बढ़ाया। इस मुहिम के तहत जवाहर जी के परिवार को आटा, चावल, शक्कर, मूंग दाल, हरी मूंग दाल, चना दाल, मिर्ची पाउडर, हल्दी पाउडर, धनिया पाउडर, टाटा नमक, सरसों तेल आदि आदि सामग्री प्रदान की गई है। इसके अलावा, उन्हें नए कपड़े, जूते, चप्पल, घरेलू उपयोग के लिए बर्तन, गैस सिलेंडर, टेबल फैन और अन्य आवश्यक चीजें दी गई हैं।

इस मदद से जवाहर जी के परिवार को नई आशा मिली है। अब वे अपने परिवार की जरूरतें पूरी कर सकते हैं और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकते हैं। संत रामपाल जी महाराज की इस मुहिम ने एक गरीब परिवार की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव लाया है, और यह समाज के लिए एक अच्छा संदेश है कि हम सब मिलकर जरूरतमंदों की मदद कर सकते हैं।

संत रामपाल जी महाराज की इस मुहिम से मिली मदद:

- खाद्य सामग्रीः आटा, चावल, शक्कर, मूंग दाल, हरी मूंग दाल, चना दाल, मिर्ची पाउडर, हल्दी पाउडर, धनिया पाउडर, टाटा नमक, सरसों तेल आदि आदि
- नए कपड़े दो जोड़ी प्रत्येक को तथा जूते, चप्पल
- घरेलू उपयोग के लिए बर्तन
- गैस सिलेंडर
- टेबल फैन
- अन्य आवश्यक चीजें

जवाहर जी की फ्री में दवाई संत रामपाल जी महाराज जी की मुहिम के तहत करवाई जा रही है ।

अन्नपूर्णा मुहिम के तहत जो संत रामपाल जी महाराज जी द्वारा चलाई जा रही है इसके तहत जवाहर जी तथा उनके परिवार वालों को राहत तब तक दी जाएगी जब तक वह स्वयं अपने परिवार को चलाने के सक्षम ना हो जाए। इस मदद से जवाहर जी के परिवार को नई आशा मिली है और वे अपने परिवार की जरूरतें पूरी कर सकते हैं।

गाजियाबाद पुलिस कमिश्नरेट में 8 पुलिसकर्मी निलंबित

अंकित गुप्ता कासगंज

अम्बुज उपाध्याय

गाजियाबाद पुलिस कमिश्नरेट में भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 8 पुलिसकर्मियों को निलंबित किया । मधुबन बापूधाम थाने के 3 पुलिसकर्मियों को फीडबैक सेल से नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने के बाद निलंबित किया गया। वहीं अन्य पुलिसकर्मियों को भी रिश्वतखोरी और यातायात नियमों का उल्लंघन में शामिल होने के चलते निलंबित किया गया।

गाजियाबाद कमिश्नरेट के 8 पुलिसकर्मियों के खिलाफ भ्रष्टाचार और लापरवाही के आरोप में निलंबन की कार्रवाई हुई है। इनमें 2 पुलिसकर्मियों पर भ्रष्टाचार का आरोप है। बाकी 6 पुलिसकर्मियों के खिलाफ फीडबैक सेल के आधार पर कार्रवाई की गई है। इनमें सबसे अधिक 3 पुलिसकर्मी मधुबन बापूधाम थाने पर तैनात थे। इनमें 6 पुलिसकर्मी फीडबैक सेल पर मिली लोगों की प्रतिक्रिया की जांच के बाद निलंबित किए गए हैं।

मधुबन बापूधाम थाना से उप निरीक्षक ऋषभ शुक्ला, मुख्य आरक्षी संदीप मलिक व आरक्षी दलबीर सिंह, आरक्षी शाहनवाज को निलंबित किया गया है। कौशांबी थाने से उप निरीक्षक प्रदीप कुमार, कोतवाली से आरक्षी अवधेश चौधरी को निलंबित किया गया है।

एडिशनल सीपी आलोक प्रियदर्शी ने बताया कि फीडबैक सेल और कंट्रोल रूम के माध्यम से नागरिकों से लगातार पुलिस सेवाओं और व्यवहार को लेकर प्रतिक्रियाएं ली जा रही हैं। इन्हीं में से 18 सितंबर को सामने आई नकारात्मक प्रतिक्रियाओं की समीक्षा के बाद थाना मधुबन बापूधाम, कौशांबी और नगर कोतवाली के 6 पुलिसकर्मियों के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की गई है।

पुलिस उपायुक्त ग्रामीण गाज़ियाबाद ने लोनी बार्डर थाना में तैनात आरक्षी पुष्पेंद्र सिरोही को निलंबित कर दिया है। पुष्पेंद्र ने वाट्सएप काल कर आटो चालकों से पैसे लेने की बात कही थी। आडियो प्रसारित होने के बाद संज्ञान लेकर जांच की गई। यातायात पुलिस में मुख्य आरक्षी संजय कुमार को भी निलंबित कर दिया गया है। संजय कुमार ने स्कूटी पर बैठकर आटो का पीछा किया था। इसका वीडियो प्रसारित होने पर जांच की गई थी।

गाज़ियाबाद में अच्छी क़ानून व्यवस्था क़ायम हो उसको लेकर गाज़ियाबाद में कमिश्नरेट प्रणाली लागू की गई जिसके बाद जिले की कमान संभालने में कई वरिष्ठ अधिकारी नियुक्त किए गए गाज़ियाबाद को 3 जोन नगर जोन, ग्रामीण जोन, ट्रांस हिंडन जोन में विभाजित भी किया गया जिससे जिले में क़ानून व्यवस्था चुस्त दुरस्त हो गाज़ियाबाद में नागरिकों को भय मुक्त महौल मिले और उसके लिए गाज़ियाबाद पुलिस कमिश्नर जे रविंद्र गौड़ ने बीट प्रणाली, यातायात व्यवस्था, बुधवार को थाना दिवस, FIR की होम डिलेवरी की व्यवस्था के साथ साथ थाना स्तर और अधिकारी से मिलने वाले फरियादियों को चॉकलेट और पानी पिलाने के निर्देश भी दिए लेकिन गाजियाबाद पुलिस में रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगे उसके प्रयास भी करने होंगे ।

उचित वेतन भत्ता मिलने के बाबजूद आखिर क्यों पुलिसकर्मी भ्रष्टाचार करते पाए जाते हैं और निलंबन कहीं एक साधारण दंड तो नहीं जिसका डर इन पुलिसकर्मियों को न हो साथ ही थाने और चौकी लेवल पर उचित बजट भी उपलब्ध कराएं जिससे गस्त, कोर्ट, डॉक्टरी, अपराधियों का पीछा करने में स्वयं का धन न लगाना पड़े उसके लिए पुलिस के उच्च अधिकारियों के साथ साथ मुख्यमंत्री को भी संज्ञान लेने की आवश्यकता हैं ।

अमृतसर ग्रामीण पुलिस की बड़ी कार्रवाई – 06 किलो 286 ग्राम हेरोइन, 04 लाख ड्रग मनी और एक मोटरसाइकिल समेत 02 आरोपी गिरफ्तार

अमृतसर, 20 सितंबर (साहिल बेरी)

मुकदमा नंबर 217, दिनांक 19-09-25, अपराध 21(सी)/27(ए)/29-61-85 NDPS एक्ट, थाना लोकोके।

गिरफ्तार आरोपी:

1. संकर सिंह पुत्र मंगन सिंह, निवासी गुरु की वडाली, छेहरटा, अमृतसर
2. सचिन पुत्र बाऊ लाल, निवासी रंजीतपुर, छेहरटा, अमृतसर

रिकवरी:

06 किलो 286 ग्राम हेरोइन
04 लाख रुपये ड्रग मनी
एक मोबाइल फोन
एक मोटरसाइकिल

माननीय मुख्यमंत्री पंजाब द्वारा नशे के खात्मे के लिए चलाई जा रही बड़ी मुहिम "युद्ध नशों विरुद्ध" के तहत और माननीय डी.जी.पी. पंजाब के स्पष्ट निर्देशों के अनुसार, श्री मनिंदर सिंह (आई.पी.एस.) वरिष्ठ कप्तान पुलिस अमृतसर ग्रामीण और श्री गुरिंदरपाल सिंह, डी.एस.पी. (डी) के नेतृत्व में स्पेशल सेल ने इंटेलिजेंस आधारित ऑपरेशन के दौरान बड़ी सफलता हासिल करते हुए 06 किलो 286 ग्राम हेरोइन, 04 लाख रुपये ड्रग मनी, एक मोबाइल फोन और एक मोटरसाइकिल समेत 02 आरोपियों को काबू किया।

स्पेशल सेल को गुप्त सूचना मिली थी कि संकर सिंह पाकिस्तानी तस्करों के सीधे संपर्क में है और उनसे बड़ी मात्रा में हेरोइन की खेप लेकर उनके इशारे पर आगे सप्लाई करता है। सूचना के आधार पर जब संकर सिंह अपनी स्प्लेंडर मोटरसाइकिल पर हेरोइन की खेप सप्लाई करने जा रहा था, तब उसे गांव बेहड़वाल के पास घेराबंदी कर ड्रग मनी और हेरोइन समेत गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ के दौरान उसके साथी सचिन का भी पता चला, जिसे बाद में गिरफ्तार कर लिया गया।

इस बड़ी सफलता से स्पष्ट है कि अमृतसर ग्रामीण पुलिस नशा तस्करों के खिलाफ सख्त कार्रवाई कर रही है। गिरफ्तार आरोपियों के फॉरवर्ड और बैकवर्ड लिंक की गहराई से जांच की जा रही है। आगे जो भी नशा तस्करी के जाल में शामिल पाया जाएगा, उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

आवाजाही को सुचारू रूप से चलाने के लिए अलग-अलग पॉइंटों पर कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गईं

अमृतसर, 20 सितम्बर (साहिल बेरी)

श्रीमती अमनदीप कौर, पी.पी.एस., अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर पुलिस (ट्रैफिक), अमृतसर द्वारा भगतांवाला मंडी में विभिन्न गाँवों से आने वाली धान की ट्रॉलियों की आवाजाही को सुचारू रूप से चलाने के लिए अलग-अलग पॉइंटों पर कर्मचारियों की ड्यूटियां लगाई गईं।

कहीं पर भी ट्रैफिक जाम न लगे। इसके अलावा, आने वाले त्योहारों को ध्यान में रखते हुए श्री दुर्गियाना मंदिर, शिवाला मंदिर, माता लाल देवी मंदिर आदि धार्मिक स्थलों पर भी ट्रैफिक कर्मचारियों की ड्यूटी लगाकर यातायात के उपयुक्त प्रबंध किए गए, ताकि आम जनता और श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की ट्रैफिक संबंधी परेशानी का सामना न करना पड़े।

कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर ने साइबर क्राइम द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए नामी कंपनियों के नकली मोबाइल फोन बेचने वाले एक फर्जी कॉल सेंटर का पर्दाफाश किया

अमृतसर/20 सितंबर (साहिल बेरी)

अमृतसर शहर के पुलिस कमिश्नर की निगरानी में, साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन ने 15.09.2025 को एक बेहद संगठित फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़ कर बड़ी सफलता हासिल की, जो देशभर के भोले-भाले लोगों के साथ धोखाधड़ी कर रहा था।

यह कॉल सेंटर सी-ब्लॉक, रंजीत एवेन्यू, अमृतसर स्थित INK बिल्डिंग में चल रहा था, जहां 80 से अधिक महिला कर्मचारी कार्यरत थीं। इन्हें OLX प्लेटफ़ॉर्म पर डुप्लीकेट Apple iPhone और Samsung S24 मोबाइल की पोस्ट डालकर ग्राहकों को लुभाने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया गया था। आरोपियों ने धोखाधड़ी करने के लिए ऑनलाइन साधनों का सहारा लिया – वे खरीदारों को फर्जी डिवाइसों की आकर्षक तस्वीरें भेजकर उन्हें असली समझने पर मजबूर करते थे।

इस रैकेट की हैरान करने वाली बातें:

* प्रदर्शित प्रत्येक हैंडसेट (मोबाइल फोन) लाखों की कीमत में दिखाया जाता था।
* गिरोह रोजाना 30-40 नकली फोन बेचता था, जिससे प्रतिदिन लगभग ₹6 लाख का अवैध कारोबार होता था।
* पीड़ितों को विश्वास दिलाया जाता था कि वे असली लग्जरी गैजेट खरीद रहे हैं, जबकि उन्हें नकली फोन भेजे जाते थे।

छापेमारी के दौरान पुलिस ने बरामद किया:

* विभिन्न कंपनियों के 47 मोबाइल फोन (29 सक्रिय सिम कार्ड सहित)
* 8 अतिरिक्त सिम कार्ड
* धोखाधड़ी में इस्तेमाल किए गए 6 लैपटॉप

इस संबंध में BNS की धाराएं 318(4), 336(2), 338, 340(2), 336(2), 61(2), 103 और 104 ट्रेड मार्क्स एक्ट 1999, धारा 63 कॉपीराइट एक्ट 1957, तथा धारा 66-डी आईटी एक्ट 2000 के तहत मुकदमा नंबर 40 दिनांक 15.09.2025 थाना साइबर क्राइम, कमिश्नरेट पुलिस, अमृतसर में दर्ज किया गया है।

मुख्य आरोपी राघव भारद्वाज पुत्र अजय कुमार, निवासी पवन नगर, बटाला रोड, अमृतसर को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसके मुख्य साथी अंकित गंगोत्रा, निवासी विजय नगर, अमृतसर की गिरफ्तारी के लिए तलाश जारी है।

अंकित गुप्ता कासगंज

लखनऊ के नवनियुक्त मंडल आयुक्त विजय विश्वास पंत ने अपना पदभार संभाल लिया है। पदभार संभालने के बाद उन्होंने कार्यालय का निरीक्षण किया और स्टाफ अधिकारियों ने उनका पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। मंडल आयुक्त ने मीडिया से बातचीत में कहा कि वह मुख्यमंत्री के विजन के अनुसार काम करेंगे और समस्याओं का समय रहते समाधान करेंगे। उन्होंने ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने के लिए लखनऊ के पुलिस आयुक्त से बातचीत करने की बात कही और विकास कार्यों की गति बढ़ाने पर जोर दिया।

अंकित गुप्ता कासगंज

दिनांक 20 .09 .2025 को जनपद अलीगढ़ में नव आगन्तुक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री नीरज कुमार जादौन द्वारा गार्द की सलामी ली गई एवं पदभार ग्रहण किया गया, समस्त शाखा प्रभारियों व कर्मचारियों से उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023